

Dr. Madhukarrao Wasnik PWS Arts and Commerce College Kamptee Road, Nagpur-26

Bibliometrics of the Publication During the year 2017-2018

Sr. No	Title of the Paper	Name of the Author	Title of the Journal	Year of the Publication	Citation Index	Institutional Affiliation as mentioned in the Publication	Number of Citations excluding self- citations
1	Internet Jagat Me Hindi	Dr. Sumedh	Perspectives	Aug-2017	-	Dr.M.W.P.W.S.	-
	Ke Badhte Kadam	Nagdeve	A National Peer Reviewed			Arts &	
			Interdisciplinary Research			Commerce	
			Journal			College, Nagpur	
			Vol-1 Issue- VII				
			ISSN: 2249 - 5134				

Bibliometrics of the Publication During the year 2018-2019

Sr. No	Title of the Paper	Name of the Author	Title of the Journal	Year of the Publication	Citation Index	Institutional Affiliation as mentioned in the Publication	Number of Citations excluding self- citations
1	Internet jagat Aur Hindi	Dr. Sumedh Nagdeve	Research Journey Issue- 2 ISSN: 2348- 7143	Oct-2018	-	-	-
2	Sahitya Me Rashtriya Chintan	Dr. Sumedh Nagdeve	Bhartiya Sahitya Chintan Aur Chunautiya A.R. Publishing Co. Issue-1 ISBN: 93-88130- 16-5	2019	-	-	-

Bibliometrics of the Publication During the year 2019-20

Sr. No.	Title of the Paper	Name of the Author	Title of the Journal	Year of the Publication	Citation Index	Institutional Affiliation as mentioned in the Publication	Number of Citations excluding self- citations
1	Bhartiya Sahitya Aur Bhartiyata	Dr. Sumedh Nagdeve	Vanya Publication, Kanpur ISBN (978-93-91111-35-5	Pratham 2021			

Bibliometrics of the Publication During the year 2021-2

Sr. No.	Title of the Paper	Name of the Author	Title of the Journal	Year of the Publication	Citation Index	Institutional Affiliation as mentioned in the Publication	Number of Citations excluding self- citations
1	Truna Mukarji Krut Aagaj Kavya Sangraha ka Samikshatmak Adhyayan	Dr. Sumedh Nagdeve	Akshara Multidisciplinary Research Journal Peer- Reviewed & Refereed International Research Journal ISSN 2582-5429	Sep 2021	SJIF Impact Factor- 5.54	-	-

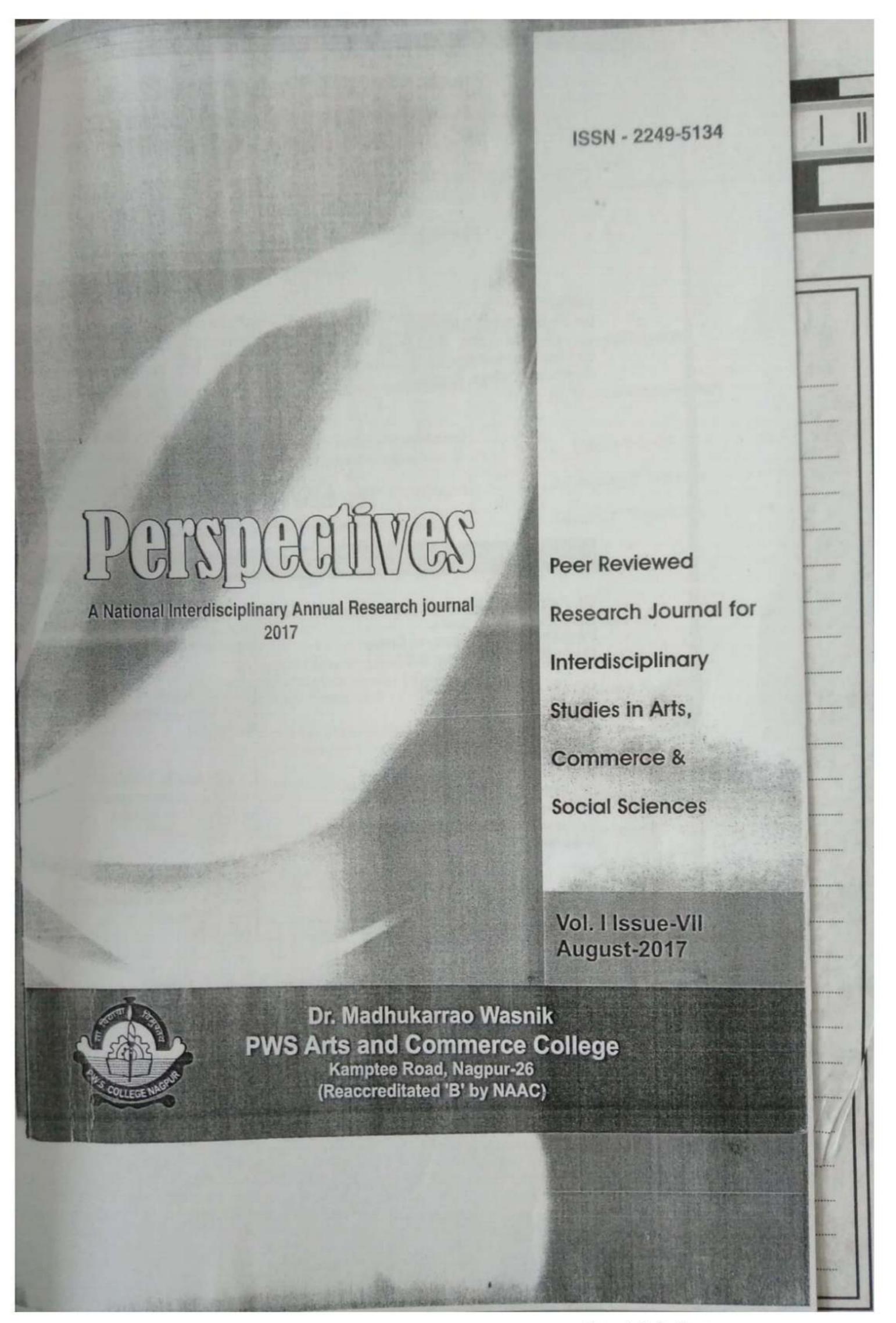
Bibliometrics of the Publication During the year 2022-2023

Sr. No.	Title of the Paper	Name of the Author	Title of the Journal	Year of the Publication	Citation Index	Institutional Affiliation as mentioned in the Publication	Number of Citations excluding self- citations
1	Truna Mukarjee Krut Aagaj Kavya Sangraha Anubhutiyonka Sahaj Udrek	Dr. Sumedh Nagdeve	Social Issues and Problems S.N. Mor Art, Commerce,& Smt. G.D. Saraf Science College, Tumsar, Dist. Bhandara- 441912 Issue- 01 Volume- 11 ISSN 2278-3199	Jan- June 2022	SJIF Impact- 7.264		
2	Hindi Sahitya me Samajik Tatha Rashtriya Chintan	Dr. Sumedh Nagdeve	Akshara Multidisciplinary Research Journal, Akshara Publication, Plot No. 143 Professor colony, Near byani school, jammer road, bhusawal Dist. Jalgaon, Maharashtra -425201	Jan- 2023	SJIF Impact- 5.67		

			Special Issue 07 Volume III (B) E-ISSN 2582-5429			
3	Dr. Mithilesh Awasthi ke Sahitya Me Paryavaran Chintan	Dr. Sumedh Nagdeve	VMV Commerce, JMT Arts & JJP Science College, Wardhman Nagar, Nagpur Volume -9 ISSN 2394-6903	2023		

(Alternation) -

Principal Dr. Yeshwant Patil



Managing Editor

Dr. R.P. Gan Off. Principal Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts and Commerce College, Nagpur

Editor

Dr. Pradnya M. Bagade Vice Principal, H.O.D., Economics Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts and Commerce College, Nagpur

Associate Editors

- 1. Dr. Mahendra Gayakvor 2. Prof. Sudesh Bhowate
- 3. Dr. Megha Ramteke
- 4. Dr. Sumedh Nagdeve
- 5. Prof. Amruta Dorlikar
- 6. Shri. Siddharth Wani

Advisory Committee

1. Dr. S.R. Mishra 2. Dr. M.J. Awasthi 3. Dr. Indrajit Orke

Editorial Consultants

Dr. Avinash R. Nikam Head, Dept. of Economics PSGVPM's Arts & Commerce College Shahada, Dist. Nandurbar (MS)

Dr. Umesh Holani

Dr.Vimelendra Kumar Head, Dept. of Pali Banaras Hindu University (UP)

Dr. C.D. Naik Head, Dept. of Ambedkar Research Center

Dean, Commerce Faculty Jiwaji University, Gwaliar (MP)

Dr. Sukhdev Dhanke Asso.Prof. Dept. of Marathi Rashtrasant Gadgebaba Amravati University, Amravati (MS)

Dr. Vivek Kumar Asso. Prof. and Head, Dept. of Sociology Jawaharlal Nehru University, New Delhi.

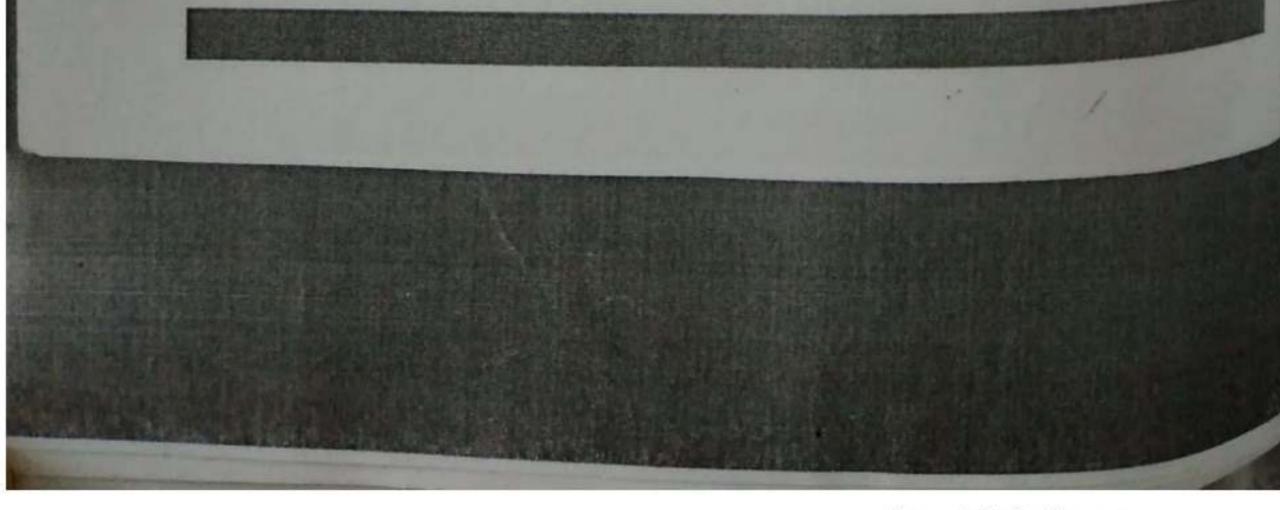
Dr. Anil Kathare Head, Dept of History Shree Shivaji College Tq. Kandhar, Dist. Nanded (MS)

Mahu (MP)

Dr. Dhirendra Shukla Asso. Prof. Dept. of Hindi Govt. Mahatma Gandhi P.G. College (MP)

Dr. Harsh Jagtap Asso. Prof. Political Science Pune vidyapeeth, Pune. (MS)

Dr. C. L. Khatri Asso. Prof. and Head, Dept. of English T.P.S. College, Patna (Bihar)



Perspectives A National Interdisciplinary Annual Research Journal August 2017

अनुक्रमणिका

English Section- Teaching English Poetry In L2/L3 Mix Ability Nith The Module Based On Four	Sudesh M.B. Bhowate	1
Classroom with The the		7
 Basic Skills Techniques Of Keeping Mentally And Physically 	Dr. Vandana Meshram-Ingle	-
Licalthy	Dr. Lalita I. Punnya	10
 A Comparative Study Of Psycho-Physiological A Comparative Study Of Psycho-Physiological Effects On College Students In Nagpur City 	Dr. Lalita I. Fulling Dr. Rajshree P. Meshram	14
Technoise Education Strategies And Challenges.	Dr. Rajshree T. Motghare Rajendra S. Motghare	18
Costa Economy And Economic Democracy	Rajendra 5. marco	25
6. Role Of Micro Finance In Rural Development	Dr. Suresh A. Bhagwat	25
In India 7. Humanistic Approach & Legacy Of Shivaji To Maharashtra	Dr.D.S. Kadhao	28
8. A Critical Study Of Role Of Human Resource Management For Implementation Of Total Quality Management In An Organisation	Miss. Monali N. Musale Dr. Suresh A. Bhagwat	31
 Impact Of Information And Communication Technologies Education On Women Empowerment 	Dr. Vivek S Chavan	36
10. Domestic Violence Against Women And Role Of Counseling	Dr. Santosh P. Mendhekar	44
11. Rural Students Problems In English Communication	Prof.Amrapali P.Yeole	49
 Micro Finance: Steps Towards Inclusive Economic Growth (Shg Bank Linkage Model) 	Sankalp P. Hadke	52
 Women's Role In Mouryan State Craft A Study Through Ashokas's Edicts 	Prof. Jitendra S. Tagade	58
 Psychological Approaches Of Some Of The Major Events In The Life Of Dr. Babasaheb Ambedkar. 	Amitkumar Dhamgaye	62

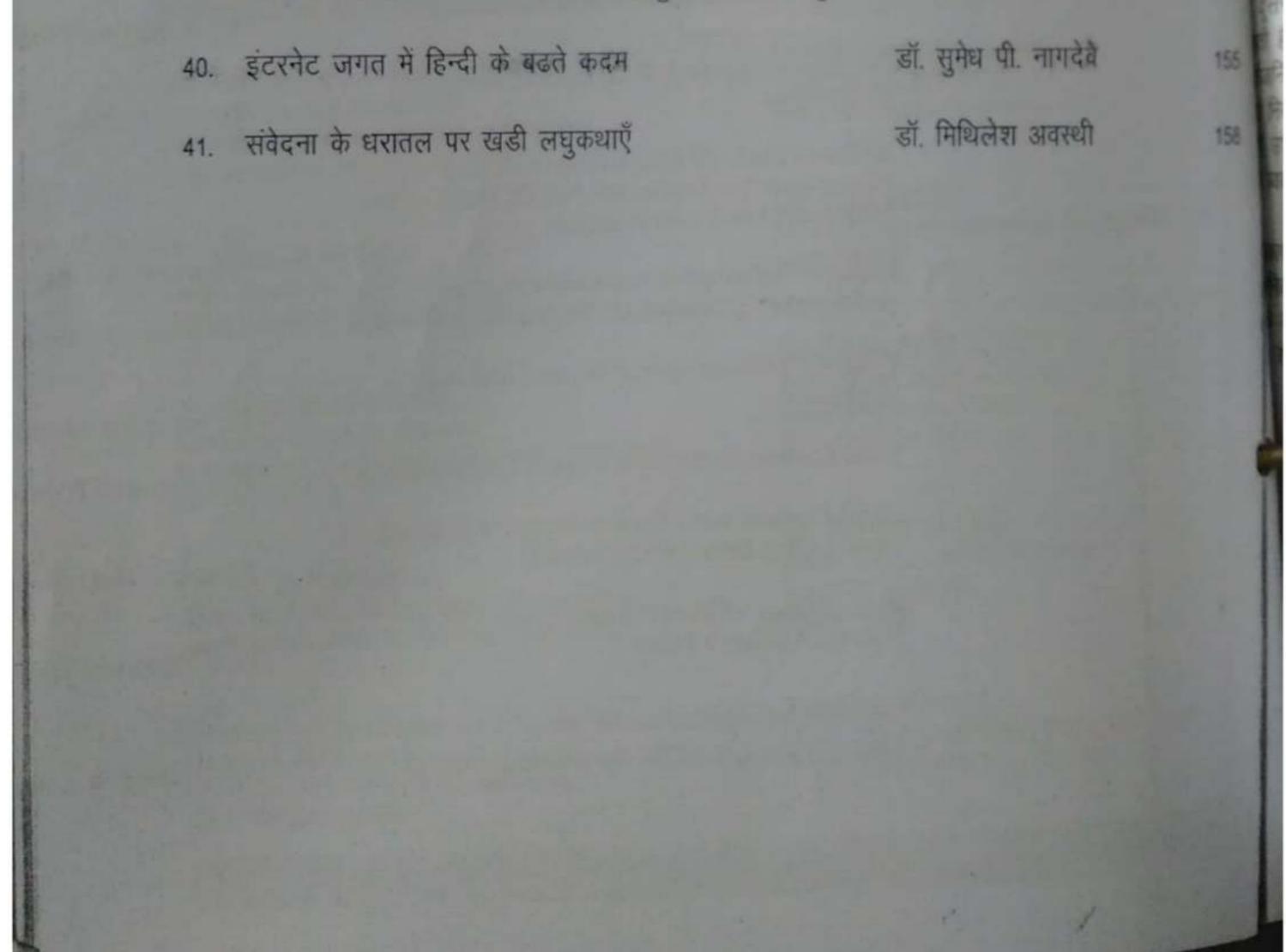
- 31. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर एक अर्थतल स्वर्णलता बारव
- 32. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर प्रणित लोकशाही डॉ.सुशांत विमनकेर
- 33. महात्मा गांधीचे सर्वोदयी तत्वज्ञान डॉ. राजेंद्रप्रसाद पटले
- 34. स्पर्धा परीक्षा, महाविद्यालयीन विद्यार्थी आणि वाचन : एक अध्ययन प्रा. रमणिक एस. लेनगुरे
- 35. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांचे धम्म विचार डॉ.नागसेन लांडगे
- 36. उद्योगातील युवाशक्ती-- आर्थिक विकासाकडे वाटचाल डॉ. भारती सुदर्शन गांस्वामी

हिन्दी विभाग-

- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के धर्मातर का राष्ट्रीय महत्व
 प्रा. प्रतिभा पखिडे
 बुद्ध धम्म में चित्त की चेतना का अधिष्ठान
 प्रा.वासन्ती डी.खांडेकर
- 39. भारत में सार्वजनिक उपकम की कमियाँ, सुधार के लिए सुझाव डॉ. सी. पी. साखरवाडे

142

150



इंटरनेट जगत में हिन्दी के बढते कदम

डॉ. सुमेध पी. नागदेवे

सारांश : वर्तमान में संपूर्ण विश्व इंटरनेट वेब तकनीक के महत्व को जानता है। जब भारत में कम्प्यूटर आया तब वहाँ केवल अंग्रेजी का ही प्रयोग होता था। भारतीय भाषाओं का उसमे कोई स्थान नहीं था। कम्प्यूटर का संबंध व्यवसाय से था अतः अतः आम जनता को ध्यान में रखते हुए भारतीय भाषाओं में सॉफ्टवेयर विकसित किए। इस कदम ने संचार पद्धति में क्रांति ही ला दी। वर्तमान में हिन्दी अपना स्थान धीरे–धीरे हासिल करने लगी। कई प्रतिष्ठित समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, लघु पत्रिकाएँ आदि ने इंटरनेट पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

हिन्दी वेब के विकास में तकनीकी अवरोध के कारण इंटरनेट पर हिन्दी की वांछित प्रगति नहीं हो पाई थी लेकिन कुछ वर्षों में सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानों और कुछ बुद्धिजीवियों के प्रयास से यह समस्या लगभग दूर हो चुकी है। आज गूगल, जैसे कई सर्च इंजिन हिन्दी में विकसत हो जाने से हिन्दी खोजने की समस्या समाप्त हो चुकी है। यूनिकोड टेक्नॉलॉजी के आगमन से हिन्दी के लिए भी यूनिवर्सल कोड उपलब्ध हो पाए हैं। विन्डोज, एक्सपी तथा लिनक्स जैसे ऑपरेटिंग सिस्टम का इंटरफेस भी हिन्दी में बन चुका है। वैश्वीकरण के इस युग में विश्वभाषा हिन्दी इंटरनेट के लिए उपयुक्त और महत्वपूर्ण भाषा बन गयी है। प्रस्तुत शोध इंटरनेट जगत में हिन्दी के बढते कदम, उसके सशक्तीकरण, उसके विकास को दर्शाता है। शब्दसंकेत : इंटरनेट जगत, वेब तकनीक, फॉन्ट, हिन्दी का विकास तकनीकी स्तर पर।

प्रस्तावना : वर्तमान में वैश्वीकरण के इस युग में संपूर्ण विश्व इंटरनेट वेब तकनीक के महत्व को जानता है। वेब तकनीक के माध्यम से विकास करनेवाले देशों में भारत प्रमुख है। जब भारत में कम्प्यूटर आया तब वह केवल अंग्रेजी ही समझता था। उसका की-बोर्ड भी अंग्रेजी के लिए ही बना था। चूंकि कम्प्यूटर का संबंध व्यवसाय से था अतः छोटी–छोटी कंपनियों ने भारतीय भाषाओं में सॉफ्टवेयर विकसित किए। इंटरनेट ने तो संचार पद्धति में क्रांति ही ला दी। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हिन्दी अपना स्थान धीरे–धीरे हासिल करने लगी। आज हिन्दी के लगभग सभी समाचार पत्र, पत्रिकाएँ जैसे हंस, तद्भव, वागर्थ इंटरनेट पर मौजूद है। गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एरिक स्मिथ के अनुसार, "इंटरनेट पर आनेवाले दिन हिन्दी और मंदारिन जैसे भाषाओं के है और अंग्रेजी तीसरे नंबर की भाषा बनकर रह जानेवाली है।" इंटरनेट के चलते केवल सूचना एवं तकनीकी क्षेत्र में ही नहीं अपितु मानव-जीवन शैली में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए।

आज सूचना तथा संचार के क्षेत्र में परंपरागत संचार माध्यम बहुत पीछे हो गए हैं। उसने वेब तकनीक जैसी नयी विधा को जन्म दिया है। एक समय था जब इस क्षेत्र में अंग्रेजी का एकाधिकारं था, लेकिन कुछ वर्षों में इंटरनेट में हिन्दी की अनेक वेबसाइट दिखने लगी। एक समय था जब हमे अपने लेख की सुरक्षा की चिंता सताती थी परंतु अब इस तकनीक के कारण वह चिंता समाप्त हो गयी। हिन्दी में ई—मेल भेजे जा सकते हैं, विद्यार्थी किसी भी विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। लघु पत्रिका का संचालन कर अपने संपूर्ण रचना कर्म को संपादक के रूप में इंटरनेट पर प्रकाशित कर सकता है और किसी भी विषय, किसी भी मुद्दों पर किसी भी समस्या पर विमर्श कर सकता है।

"PERSPECTIVE" A National Interdisciplinary Annual Research Journal-Vol.I Issue-VII-2017 ISSN-2249-5134

154
15. प्रबन्ध ती साधनों में कमी : सार्वजनिक क्षेत्र के उपकमों की एक कमी यह रही है कि ५
सार्वजनिक उपकमा का स्वान म अपने हितों की सुरक्षा के लिए भी की गई थी जिससे मजदूरों को शाषण कम हा लकीन मजदूरों का
सार्वजनिक उपकर्मों की काय-कुशलता में पुपार में जुप तैयार किया जाय जिसके अंतर्गत सार्वजनिक एवं 1. औधोगिक विकास का ऐसा बहत्तर प्रारूप तैयार किया जाय जिसके अंतर्गत सार्वजनिक एवं
1 औधोगिक विकास का ऐसा बहत्तर प्रारूप तयार पिया का का प्र
िनी रोनों प्रकार के उपक्रमा का रागापरा दग
0
 1. नवश पर आधिक कांसांटा पारू में का मूल्यांकन किया जाय । 3. सामाजिक लाभों एवं लागतों का मूल्यांकन किया जाय । 3. सामाजिक लाभों एवं लागतों का मूल्यांकन किया जाय ।
3. सामाजिक लामा एवं लागता पन रूपनेक अत्रस्था में श्रेष्ठतर परियोजना आयोजन और प्रभावशाली
 सामाजिक लाभों एवं लागता का मूल्याकन प्राप्त जाया जाया जाया जाया जाया जाया जाया जाय
प्रबन्ध की व्यवस्था का जाय। 5. सत्ता एवं उत्तरदायित्व का आवश्यक मात्रा में हस्तातरण तथा संयत्र के स्तर पर प्रबन्धकाँ
्र रागणी वर्ण तातस्था को दृष्टि में रखकर स्थिर आर सुसगत नाताया बनाइ जापा
and a and it all electric surily ung
7. श्रम-प्रबन्ध सम्बंध के बारे में मये पृष्टिपान जनताने को केवल स्थानान्तरण का ही दंण्ड न 8. विधी सुधार को अपनाया जाय तथा अकुशल प्रबन्धकों को केवल स्थानान्तरण का ही दंण्ड न
8. विधा सुधार का अपनाया जाप राजा जायुरारा कतोर तएड दिये जाये।

दिया जाय, बल्कि उन्हें निलम्बन तथा आधक कठार दण्ड दिय जाय।

निष्कर्ष : आर्थिक विकास की गति को तीव्र करने के लिए सार्वजनिक उपकम इसके अतिरिक्त दूसरा कोई विकल्प नहीं है। सार्वजनिक उपकमों के बिना कोई भी आर्थिक योजना निष्क्रिय बनी रहती है। सार्वजनिक क्षेंत्र सामाजिक मूल्यों तथा व्यापक हित के विचार को महत्व देता है।बडी बडी सार्वजनिक कल्याण संस्थाओं की स्थापना सार्वजनिक क्षेत्र में ही सम्भव है, क्योंकी निजी क्षेत्र इतना बडा निवेश करने का साहस नही करता। जिन उघोगों में अक्षमता बनी रहती है तथा जहाँ पर निजी उघमी उसमें सुधार करने की इच्छा नहीं रखते अथवा सुधार करने की उनमे क्षमता नहीं होती,उनसे व्यवहार करने के लिए सार्वजनिक स्वामित्व एक साघन है।

देश में सार्वजनिक उपकमों की वृध्दी अर्थ-व्यवस्था के बहुमुखी एवं संतुलित विकास की आवश्यकता को पूरा करने के लिए हुई है। देश के आर्थिक विकास की प्रक्रिया में सार्वजनिक क्षेत्र का स्थान निर्माण एव विकास न तो सैध्दांन्तिक समाजवाद के कारण है और न शासक दल के आदर्श के कारण भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के विकास के लिए जो भी प्रयत्न किये जा रहे हैं वे रचनात्मक एव वास्तविक दृष्टिकोन अपनाने मे अनमोल मार्गदर्शक हुए है। संदर्भ:

भारतीय अर्थव्यवस्था —मिश्र ज.नारायण पृष्ठ क.652 ते 660 _पतियोगिता दर्पण — समसामयिक वार्षिकी 2010 व्हालूम 2 पृष्ठ क 162ते 163

डॉ. सी. पी. साखरवाडे

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख कला व वाणिज्य महाविघालय, पे.पप. जवाहरनगर त.जि.भंडारा

"PERSPECTIVE" A National Interdisciplinary Annual Research Journal-Vol.I Issue-VII-2017 ISSN-2249-5134

हिन्दी भाषा का नाता जब इंटरनेट से जुडा तब आम आदमी के बीच उसकी गहरी पैठ होती गयी। वह इंटरनेट के माध्यम से आम आदमी को आपस में जोड रही है। हिन्दी प्रचार-प्रसार में भी अहम भूमिका निमा रही है। आज बहुत सी सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं ने भी अपनी वेबसाईट हिन्दी में बनाये हैं। वेब दुनिया के आगमन से इंटरनेट पर देवनागरी लिपी की स्थापना इं। पहले देवनागरी में ई-मेल भेजना बेहद ही मुश्किल कार्य था लेकिन अब आसान हो गया है। सर्वप्रथम सॉफ्टवेयर कंपनी 'सुवी इन्फ़ॉर्मेशन कंपनी सिस्टर इंदौर' ने निःशुल्क ई-मेल सेवा आरंग की यह एक क्रांतिकारी कदम था। जिससे देवनागरी के लिए नया प्रवेश द्वार खुला। ''हिन्दी में इं-मेल की सुविधाएँ निम्नलिखित वेबसाइटों पर उपलब्ध है।

www.epart.com, www.mailijol.com, www.cdacindia.com, www.rediffmail.com, www.langoo.com, www.webduniya.com, www.bharatmail.com, www.nidatrans.com सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति से सरकार ने अपने कार्यालयों के कामकाज में हिन्दी भाषा के प्रयोग में बढावा देने के लिए हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सी डॅक' को विकसित किया। 'मंत्र राजभाषा' अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के लिए सहायक है। यूनिकोड टेक्नॉलॉजी के आगमन से हिन्दी के लिए भी यूनिवर्सल कोड उपलब्ध हो पाए है। www.rajbhasa.com से हमें हिन्दी से संबंधित नियम साहित्य, व्याकरण तथा शब्दकोश की जानकारी मिलती है। www.voanews.com से हमे हिन्दी में समाचार प्राप्त होते हैं। आज हिन्दी भाषा सीखने के लिए कई वेबसाइट उपलब्ध है।

www.rajbhasha.com, www.rajbhasha.nic.in, www.tdil.mit.gov.in, www.indianlanguages.com, www.dictionary.com, www.educindia.com, www.rosettastone.com, www.bharatdarshan.co.nz, www.wordanywhere.com, www.hindinet.com, www.hindibhasha.com, www.sahityaakademi.org

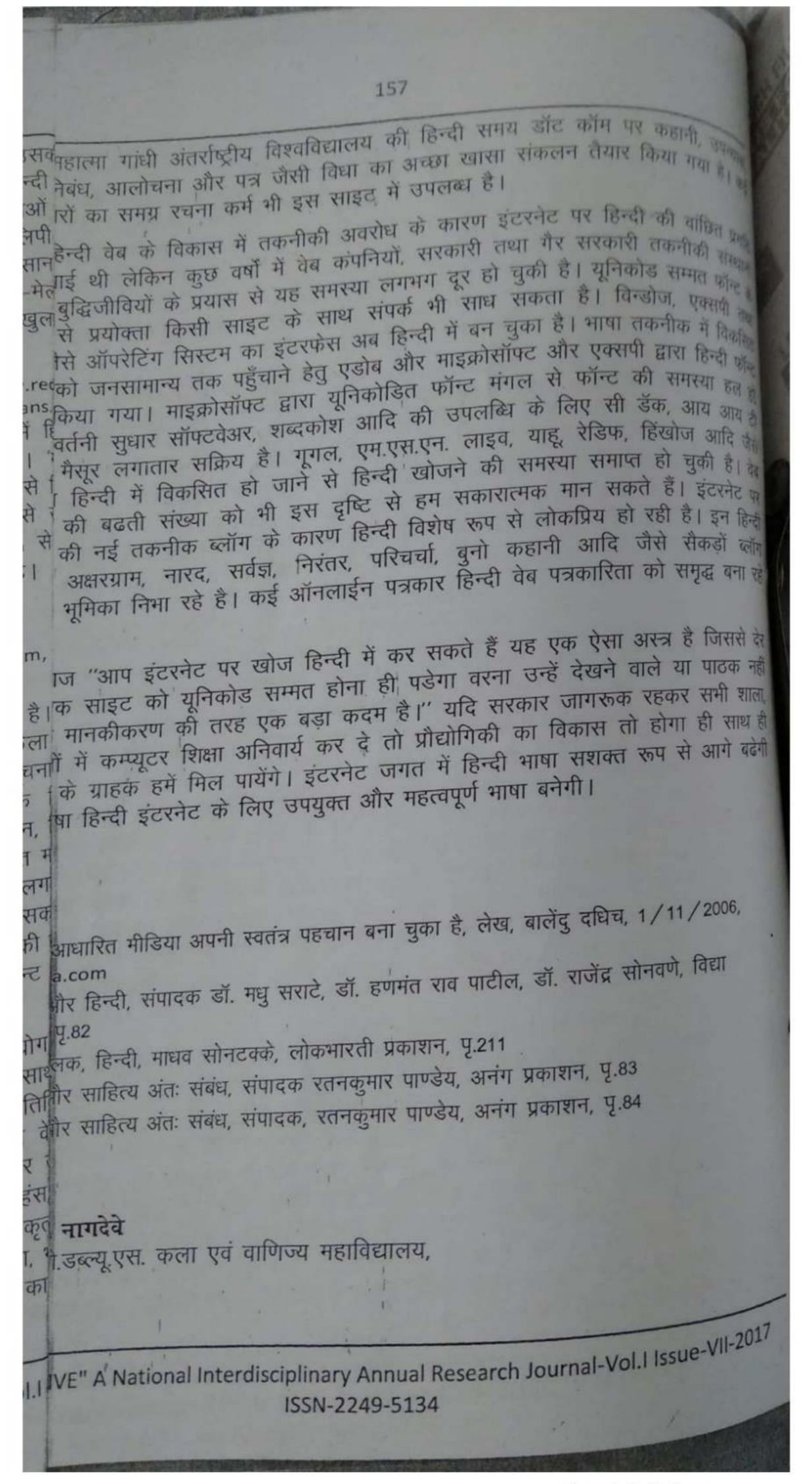
आदि कई हिन्दी इंटरनेट साईट का होना हमारे लिए गौरव की बात है। ये साइट हमे विभिन्न सेवाएँ उपलब्ध कराता है। 'वर्ल्ड वाइल्ड वेब www यह पूरे संसार में फैला हुआ एक बड़ा

156

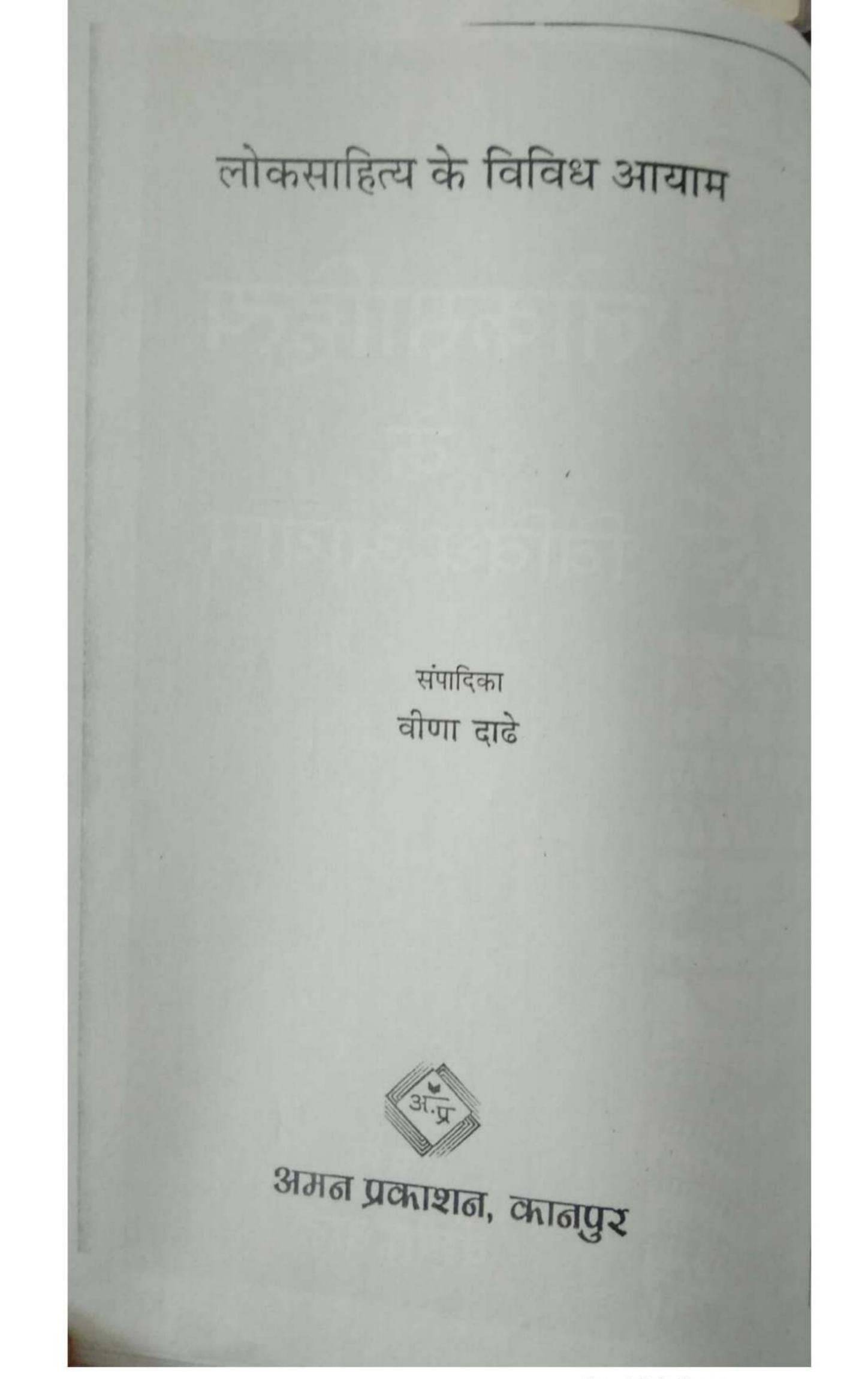
विभिन्न संवाए उपलब्ध करता हो। परंड पोइंटेंड पर क्रेक्स परं पूर कार की सूचनाएँ वेब पेज पर डाटाबेस है। इंटरनेट से जुड़ने के बाद इस डाटा बेस से विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ वेब पेज पर उपलब्ध करा सकती है। वेब पेज को साइट भी कहा जाता है।" प्रत्येक विषय के लिए अलग-अलग वेज पेज अधवा वेब साइट होते हैं। जैसे, व्यापार, वाणिज्य, मनोरंजन, शिक्षा, चिकित्सा आदि। वेब इंटरनेट पर जानकारी प्राप्त करने का सबसे आसान, तीव्र एवं प्रचलित माध्यम है। इसमें गूगल सबसे अच्छी वेबसाइट है। गूगल अब हिन्दी, बंगला को भी सपोर्ट करने लगा है। लिचम के माध्यम से चलचित्र मोड में ज्ञान का आदान प्रदान तथा संवाद साघ सकते हैं। थ्यदज बदअमतजमत वर्जितम इंटरनेट के माध्यम से डाऊनलोड कर हिन्दी में कम्पोज की गयी सामग्री को हिन्दी में ही किसी अन्य फॉन्ट में रूपांतरित किया जा सकता है। जिससे फॉन्ट की समस्या का निदान हो पाया है।

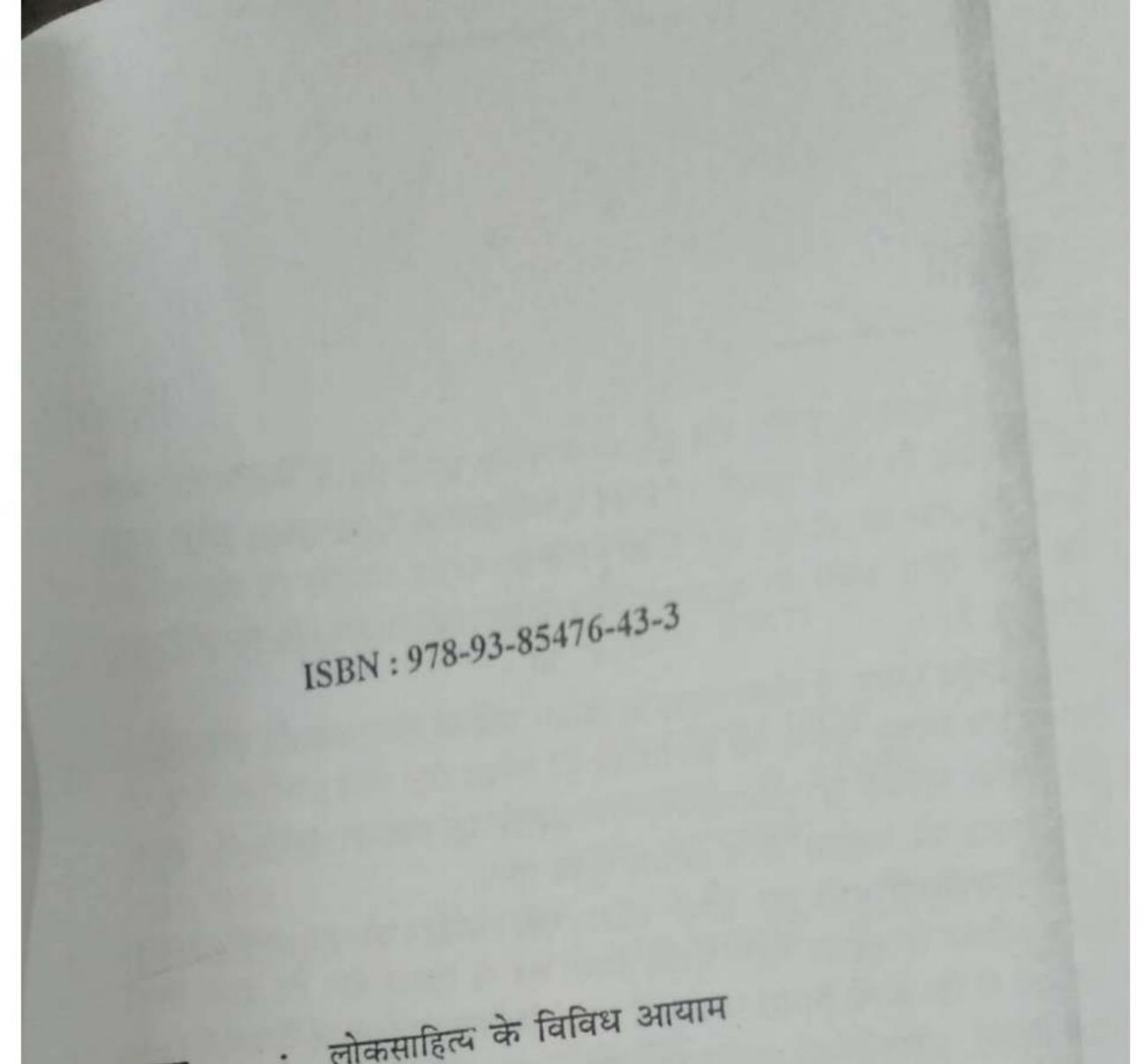
इंटरनेट के जरिए की जानेवाली वेब पत्रकारिता में मल्टीमीडिया का प्रयोग होता है। इसमें समाचार और पाठ्यसामग्री निरंतर अपडेट होती है। सूचना तथा समाचारों के साथ इसमें साहित्य की विभिन्न विधाएँ, ज्ञान, विज्ञान, मनोरंजन तथा प्रादेशिक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों को प्रमुख रूप से स्थान दिया जाता है। 'नयी दुनिया' नामक हिन्दी समाचार पत्र हिन्दी वेब पत्रकारिता में पहला पत्र है। ''आज हिन्दी के लगभग सभी दैनिक समाचार पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध है। कई पत्रिकाएँ भी हिन्दी में हैं। इनमें कुछ साहित्यिक लघु पत्रिकाएँ हैं। जैसे हंस, तदभव, वागर्थ इत्यादि। कुछ इंटरनेट की पत्रिकाएँ है जैसे अभिव्यक्ति, अनुमूति, हिन्दी नेस्ट, कृत्या आदि'' अनेक प्रतिष्ठित समाचार पत्रों ने अपने वेब संस्करण आरंभ किए जिनमें दैनिक जागरण, भास्कर, नवमारत, राष्ट्रीय सहारा, बीबीसी हिन्दी आदि प्रमुख है। दैनिक जागरण डॉट कॉम विश्व का नंवर एक हिन्दी न्यूज पोर्टल बन गया है।

"PERSPECTIVE" A National Interdisciplinary Annual Research Journal-Vol.I Issue-VII-2017 ISSN-2249-5134









संपादिका प्रकाशक संस्करण © मूल्य शब्द सज्जा मुद्रक	 वीणा दाढे अमन प्रकाशन 104A/80C, रामबाग, कानपुर - 208012 (उ.प्र.) Ph: 0512-2543480 (Off.), 0512-2543480 (Fax.) Mob 09839218516, 08090453647 प्रथम, 2017 ई. संपादिकाधीन ₹ 395.00 मात्र राज ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर साक्षी ऑफसेट, यशोदा नगर, कानपुर
LOKSA Edited E	HITYA KE VIVIDH AAYAM by Veena Dadhe Three Hundred Ninty Five Only

भूमिका

लोकसाहित्य, प्राचीन होते हुए भी आधुनिक प्रतीत होता है क्योंकि वह आज भी प्रासंगिक है। लोक कथाएँ, लोकगीत एवं लोकनाट्य में अभिव्यक्त संदेश हमारे आज के जोवन पर भी पूरी तरह से लागू होते है। भारतीय संस्कृति एवं लोकसाहित्य के बोच गहरा संबंध है। दरअसल लोकसाहित्य, हमारी संस्कृति के मूल्यवान दस्तावेज है।

प्रस्तुत पुस्तक में लोकसाहित्य के विविध पक्षों को समेटा गया है। लोकसाहित्य का आशय स्वरूप महत्व एवं प्रासंगिकता पर केन्द्रित लेख इसमें संकलित किए गए हैं। इनके माध्यम से लोकसाहित्य को समझने एवं वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता को पड़ताल करना अधिक सुगम होगा।

इक्कीसवीं सदी के हिन्दी साहित्य की चर्चा करते हुए कहीं-न-कहीं लोकसाहित्य से उसका गहरा जुड़ाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आज हिन्दी साहित्य में जितने भी विमर्श चर्चा में है उनकी जड़े लोकसाहित्य में दिखाई देती है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श अथवा परिस्थितिकीय विमर्श के संबंध में लोक साहित्य बहुत पहले से ही जागरूक रहा है।

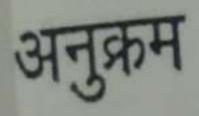
लोकसाहित्य के इसी महत्व को देखते हुए देश भर के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी साहित्य के पाठयक्रम में लोकसाहित्य का अध्ययन अध्यापन हो रहा है। इस पुस्तक के माध्यम से पाठक लोकसाहित्य के विविध पक्षों एवं रूपोंग को एक ही जिल्द में पाकर सुखद पाठकीय संतोष का अनुभव करेंगे। अस्तु, सुधी पाठकों के समक्ष इस पुस्तक को रखते हुए मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही हैं।

> - वीणा दाढे प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी-विभाग रा.तु.म.नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर

(mii)

- मिथक : काव्यमय कौमों के दस्तावेज

 मिथक : काव्यमय कौमों के दस्तावेज
 -रमणिका गुप्ता
 -रमणिका गुप्ता



लोकसाहित्य : आशय एप जगरगण – वीणा दाढे	63
लोकसाहित्य : अवधारणा और स्वरूप	
चेन्नीन - अवधारणा और महत्व	70
	75
लोकोक्तियों की प्रासंगिकता : भाजपुरा आर छत्तासगढ़ा क संदर्भ म	15
जाल लोकसाहित्य : हरियाणवी संदर्भ	79
- डा. विजयकुमार वदालकार	
सांस्कृतिक अस्मिता कं संरक्षक-'लोकगीत'	91
– डॉ. अलका पाण्डेय	
कुँडुख लोकगीतों में त्यौहार	98
– डॉ. इसाबेल लकड़ा	
. लोकगाथा भरधरी में इतिहास और कल्पना	103
- डॉ. रामनारायण धुर्वे	
× ••••	
	लेकसाहित्य : अवधारणा और स्वरूप – मनोज पाण्डेय लोकगीत : अवधारणा और महत्व – प्रा. संतोष गिरहे लोकोक्तियों की प्रासंगिकता : भोजपुरी और छत्तीसगढ़ी के संदर्भ में – डॉ. सोनू जेसवानी वाल लोकसाहित्य : हरियाणवी संदर्भ – डॉ. विजयकुमार वेदालंकार सांस्कृतिक अस्मिता के संरक्षक-'लोकगीत' – डॉ. अलका पाण्डेय कुँडुख लोकगीतों में त्यौहार – डॉ. इसाबेल लकड़ा लोकगाथा भरधरी में इतिहास और कल्पना – डॉ. रामनारायण धुर्वे

11

28

14. लोकगीत 'चैता' - डॉ. इन्द्र बहादुर सिंह 15. छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं में ऐतिहासिक सत्य 123 - ए. के. यद 16. छत्तीसगढ़ी के लोकसुभाषित 134 - डॉ. जयश्री शुक्ल 17. आदिवासी लोकगीतों की विविध छटाएँ 144 - नीतू बघेल 18. लोकनाट्य : भारतीय सन्दर्भ 148 - वीरेन्द्र प्रताप 19. खड़ीबोली का लोकसाहित्य : लोक कथाओं का स्वरूप, उद्देश्य 153 और उपयोगिता - डॉ. सिंधु पारील 20. लोकसाहित्य : स्वरूप एवं विशेषताएँ 157 - डॉ. सुमेध पी. नागदेवे 21. भारत में लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास 163 - पूजा धनराज झिलपे 24. लोकसाहित्य : प्रासंगिकता और चुनौतियाँ 169 - नवीनकुमार झरारीया 23. लोकसाहित्य : अध्ययन की परम्परा एवं चुनौतियाँ 173 - रेखा कठारे

डाँ॰ सुमेध पी. नागदेवे लोक साहित्य : स्वरूप एवं विशेषताएँ जीवन के लिए जिस तरह निवास, वस्त्र, भोजन आवश्यक है, उसी तरह साहित्य निर्माण सभ्य मानव के लिए अनिवार्य है। "ज्ञान राशि के संचित कोष ही का नाम साहित्य है। सब तरह के भावों को प्रकट करने की योग्यता रखने वाली और निर्दोष होने पर भी यदि कोई भाषा अपना निज साहित्य नहीं रखती तो वह रूपवती भिखारिनो को तरह कदापि आदरणीय नहीं हो सकती, उसकी शोभा, उसकी श्रीसम्पन्नता, उसको मान-मर्यादा उसके साहित्य पर ही अवलम्बित रहती है। जाति विशेष के उत्कर्षापकर्ष, उसके राजनैतिक घटना-चक्रों और राजनैतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब हमें उसके ग्रंथ साहित्य में मिलता है।" ज्ञान विकास, धर्म और राजनीति की भाषा सदैव लोक भाषा ही होनी चाहिए। मनुष्य जब असभ्य था, तभी वह सभ्य था। जब वह सभ्य हुआ, तभी वह असभ्य हुआ। उसके भीतर अहंकार का जन्म हुआ। उसी अहम में वह अपनी लोक परम्परा, संस्कृति, रीति-रिवाज अपने साहित्य से दूर हुआ। आधुनिकता के मद में वह अपने लोक साहित्य से दूर हुआ। जिससे उसका नैतिक पतन होने लगा। जबकि किसी भी समाज या समुदाय का लोक साहित्य उसकी संस्कृति को अभिव्यक्त करता है। भारत में भी लोक-साहित्य की परम्परा हमारी संस्कृति के साथ पुष्पित-पल्लवित हुई हैं। ऋग्वेद में उल्लेखित गाथाएँ ही लोक साहित्य का आदिम रूप है। "ऋग्वेद" में लिखा है-'प्रकृतान्य जीवंण : कथा इंद्रस्य गाथाया। मदे सोमस्य बोचत।' यहाँ 'गांथा' शब गीत के लिए प्रयोग किया गया है। प्राचीन काल में राजा के सत्कार्य, शौर्य को लक्षित कर जन सामान्य द्वारा गींत गाया जाता था वे ही गाथा कहलाते थे।"2 वाल्मीकि कृत रामायण में राम विवाह के अवसर पर मंगल गीत गाने का उल्लेख किया गया है। "मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म भले ही राज परिवार में हुआ किंत उनके जीवन काल का जो वर्णन सामान्य व्यक्ति को उपलब्ध है वह समाज के साधारण से साधारण व्यक्ति से जुड़ा है। बाल्यकाल में विश्वामित्र राम को लक्ष्मण सहित वन में ले गए। उनका वनवास का जीवन, भील, केवट, निषाद, किरात, वानर

साकार रूप है। डॉ. सत्येंद्र के अनुसार-"लोक साहित्य के अंतर्गत वह समस बंते व भाषागत अभिव्यक्ति आती है जिसमें-1. आदिम मानस के अवशोध उपलब्ध हों। 2. परम्परागत मौखिक क्रम से उपलब्ध बोली या भाषागत अभिव्यक्ति हे जिसे किसी को कृति न कहा जा सके, जिसे श्रुति हो माना जाता हो के जो लोक मानस को प्रवृति में समापी हुई हो। 3. कृतित्व हो, किंन्तु व्यक्तित्व के साथ सम्बन्ध रखते हुए भी लोक झे अपने हो व्यक्तित्व को कृति स्वोकार करें।" स्पष्टतः अभिजात्य संस्कार्णे से दूर मानव मस्तिष्क को सोधो सरत अभिवांक ही लोक साहित्य है जो स्वयं लोकमानस को समेटे रहती है। लोक सोहित्य का क्षेत्र बडा व्यापक है इसके अंतर्गत किसी सनुराय के शिक्षा, संस्कार, आचार-विचार, रहन-सहन को आलावा सामाजिक, परिवर्णिक, भात-सम्बन्धी, कृषि, अम सम्बन्धी गीतों, कथाओं आदि के अतिरिका एकोलि एवं राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण गीत, कथाएँ भी आती हैं। इतना हो नहीं भक्तिपूर्ण गीत, भाभी देवर का हास-परिहास, भूत-प्रेत भगाने वाले 'पचरा' गीत हो प लोरियाँ, नित्य व्यवहार में आने वाली कहावतें, लोकोक्तियाँ, मुहावरे आरि हमे लोक साहित्य के अंतर्गत आते हैं।

म जुटा हुआ हा इसा समाम का सदस्य माना है, परिणाम स्वरूप लोक के राम लोकगीतों में समाज हो गए है। 'राम' सुमरनी चादर पर उभरा यह नया फूल प्रत्येक व्यक्ति के चौता का सुगंध बिखेरता है। वह अपने मन की गहराइयों, सांसारिक व्यक्ताये, चौतिक क्यां की सारता और नि:सारता के दर्शन कराता है। राम तत्व चिंतन को दले का क्य

या भालू जनपद के बीच बोता। दोनों ही एक दूसरे के संपर्क से कृतकृत्व हा का भी भारत इसी उपेक्षित समाज को संगठित कर इसके आधिक और सेवित हा का में जुटा हुआ है। इसी समाज ने राम को अवतारी पुरुष मानते हुए भी कान के का सदस्य माना है, परिणाम स्वरूप लोक के राम लोकगीतों में करान के जिन्ह

प्राचीन काल से ही साहित्य दो भागों में बँदा है, शिष्ट तथा आशिष्टा इसक कारण संभवत: यह रहा होगा कि अभिजात्य वर्ग के लिए रचा गया शिष्ट महित्य वन सामान्य तक नहीं पहुँच पाता था। राजान्नित कवि गण राज दरबार को शंभ बढ़ाते थे। ऐसो स्थिति में जन सामान्य का मनोरंजन लोक साहित्य से होत था बढ़ाते थे। ऐसो स्थिति में जन सामान्य का मनोरंजन लोक साहित्य से होत था इसलिए लोक साहित्य का क्षेत्र विस्तृत हो गया। आत: उसके समग्र अध्ययन के लि इसलिए लोक साहित्य का क्षेत्र विस्तृत हो गया। आत: उसके समग्र अध्ययन के लि

हैं-1. लोकगीत - स्वर और लय के आकरण में लिपटी जन सामान्य के हर को रागपूर्ण अधिव्यक्ति हो लोकगीत है। लोकगीत में लोकमानस को अधिआहि को रागपूर्ण अधिव्यक्ति हो लोकगीत है। लोकगीत में लोकमानस को अधिआहि आवश्यक है। हमारी संस्कृति में उपासना गेय पदाति में होतो है। अत: लोकगीत ⁴

158 / लोकसाहित्य के विविध आपाम

मित हाप हमें दिखाई देती है। रामनवमी, जन्माष्टमी, नवरात्र, महाशिवरात्रि आदि मितो में राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा आदि देवी-देवताओं पर आधारित लोक गीत गाए भेषारें में राम, वीति-रिवाजों, परमायकों कर कर्ण के के विर्वाश तीत गाए कि हैं। विभिन्न रीति-रिवाजों, परम्पराओं का वर्णन भरी लोकगीतों में किया गया 1 "आज भी मुसलमान बहन अपनी संतान की शादी के समय भइया को भात लाने है लिए बुलाने जाती है तो यह लोकगीत गाती है," भैया रघुवीर भात हमार लाइयो. "इस मुसलमान बहन के होठों पर रघुवीर उसकी संस्कृति का शब्द है विधर्म का नहीं।" अतः वह गीत जो लोकमानस की अभिव्यक्ति हो अथवा जिसमें लोकमानसाभास भी हो वह लोकगीत के अंतर्गत आएगा। जब माताएँ नन्हें बालकों को थपकी देकर सुलाती है तब वह पालने के गीत गाती है। इसमें लय को महत्व दिया जाता है शब्दों को नहीं। उदा. "जसोदा हरि पालने झुलावै। हलरावे, दुलरावै, मल्हावै जोई सोई कछु गावै।" (सुरदास) यहाँ 'जोई-सोई' शब्द इस गीत की आवश्यक शब्दावली का प्रतीक है। इन गीतों का लय, स्वर का उतार-चढ़ाव पालने के गति के अनुसार होता है। बच्चों के बहुत से खेल गीतयुक्त होते हैं। भारत के प्रत्येक राज्य में विभिन्न प्रकार के खेल गीत गाए जाते हैं, जहाँ से उस क्षेत्र की लोक संस्कृति का पता चलता है। एक प्रमुख खेल इस प्रकार है-"कुछ लड़के-लड़कियाँ एक गोल घेरे में बैठ जाते हैं। एक बालक एक कपड़ा हाथ में लेकर उनके पीछे चारों तरफ घूमता

है तथा सभी मिलकर गाते हैं।"

"कोड़ा है जमाल साई पीछे देखे मार खाई,

में रस्ते में जाता था मेरी चिट्ठी खो गई।

किसी ने उठा ली डाक साहब को दे दी,

डाक साहब ने फाड़ फूड़ कर फेंक दी।"

वह बालक बिना पीछे देखे उस कपड़े को पहचान कर उठा लेता है और कपड़ा डालने वाले बालक को कोड़े से मारता हुआ पीछे भागता है तथा चिल्लाता है–पकडो पकडो़।

2. लोकगाथा - प्राय: लोकगाथा को लोकगीत का पर्यायवाची समझा जाता है परन्तु ऐसा नहीं है। लोकगाथा दीर्घ कथावस्तु की लोकभाषा में की गई संगीतात्मक अभिव्यक्ति है। लोकगीत गेयता प्रधान है कथानक प्रधान नहीं। जबकि लोकगाथा में गेयता से प्रधान दीर्घ कथानक होता है। महाराष्ट्र में इन लोकगाथाओं को 'पोवाड़ा' तथा 'तमासा' कहा जाता है, गुजरात में 'कथागीत', राजस्थान में–'गीत कथा' अंग्रेजी में इस प्रकार की गाथाएँ 'बैलेड' कहलाती है। लोक साहित्य में केंद्र बिन्दु लोक जीवन हाता है। जिसे साहित्यकार अपनी लोकानुभूतियों से ग्रहण करता है। जो ज्वलंत समस्याओं से सीधी जुड़ी होती है। रासों काव्य विभिन्न ज्वलंत समस्याओं का ज्ञान कराता है। 'आल्हा' नामक लोकगाथा में राष्ट्रीय चेतना का भाव

दिखाई देता है। 'पृथ्वीराज रासां तथा 'आल्हा' दोनों ही वीरता तथा युद्ध का भहत्व सिद्ध करते हैं। "बारह बरस तक कूकुर जीवै, तेरह बरस तक जियै सियार बरस अठारह क्षत्रिय जीवै ताके ऊपर है धिक्कार।" ताक जन्म ए ये पंक्तियाँ क्षत्रिय राजाओं की युद्धप्रियता भी घोषणा करती हैं। वीरणाक्ष ये पंक्तियाँ क्षत्रिय राजाओं को युद्धप्रियता भी घोषणा करती है। वीरणाक्ष ये पक्तिया क्षात्रय राजात्व भीतर भी वीर रस का संचार कराती है। युंरेलाक्षे वह शक्ति होती है जो कायरों के भीतर भी वीर रस का संचार कराती है। युंरेलाक्षे वह शक्ति होती है जो कायरों की भीतर भी वीर गाथा आज भी वह शक्ति होती ह जा कापरा माई 'झाँसी की रानी' की वीर गाथा आज भी 1857 को के बुंदेले हरबोलो द्वारा गाई 'झाँसी की रानी' को एकता के सूत्र में बाँधने की 1857 को लोकगाथाओं ने बखूबी किया है। 3. लोकनाट्य - नृत्य, गीत, संगीत से सुसज्जित कथा का लोकभाषा में अभिनय रूप लोकनाट्य है। लोकनाट्य प्रायः आडम्बरहीन खुले मंच पर बिना फ्रो के खेला जाता है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में संरगुजा रियासत की पहाड़ी में से वैंगा' और 'जोगीभरा' गुफाओं में स्थित प्रेक्षा गृह प्राप्त हुआ है जो हमें उस काल के लोकनाट्य के विकास की जानकारी देता है। पतंजलि के 'महाभाष्य' में 'कंसवध' तथा 'अलिबंध' नाटकों के अभिनीत होने का वर्णन है। पाली ग्रंथों में भिक्षओं के लिए नाटक देखना वर्जित था। मुगल शासन काल में यह परम्पा नष्ट हो गई थी। परन्तु भक्तिकाल में राम तथा कृष्ण पर आधारित रामलीला तथा रासलीला के रूप में पुन: जीवित हुई। लोकनाट्य का अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग नाम है जैसे महाभारत में 'मॉच', हरियाणा में 'स्वॉग', आसाम को 'ऑकिया', गुजरात का 'भवाई', महाराष्ट्र में 'तमासा', 'गोंधल', 'बहुरुपिया' आहि लोकनाट्य में जनमानस के अनुकूल सरल तथा संक्षिप्त वाक्यों का प्रयोग होता है जिसका उद्देश्य नैतिक शिक्षा, जन-जागरण तथा भनोरंजन होता है। 4. लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे - लोक समाज में प्रचलित उक्ति को लोकोक्ति कहते हैं। केवल वही उक्ति लोकोक्ति के रूप में प्रयुक्त होती है जिसमें जीवनगत अनुभव को संक्षिप्त एवं विलक्षण ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। लोकोक्ति का आधार कोई कहानी या चिरसत्य होता है। ये पूर्णवाक्य होते हैं। इनके प्रयोग से भाषा का सौंदर्य पूर्ण, स्पष्ट तथा प्रभावशाली हो जाता है। लोकोकितग मनुष्य को व्यवहारकुशलता तथा अनुभव का प्रतीक हैं। लोकोक्तियाँ रसयुक्त महज

भाषा में कही गयी ऐसी सूक्तियाँ हैं जो अपने लघु रूप में ही विदग्धता, प्राणतल,

अनुभव समेटे रहती हैं। इनका रचयिता अज्ञात ही रहता है। उदाहरण 'मुँह में गम

बगल में छुरी', 'अब पछताए होत क्या जब चिडिया चुग गई खेत', 'आम के आम

160 / लोकसाहित्य के विविध आयाम

गुठलियों के दाम।'

काशी की विशेषताएँ निम्न लोकोक्ति में कितनी सहजता के साथ बताई गई

"रॉड, सॉड, सीढ़ी, सन्यासी इनसे बचे तो सेवे कासी।" मुहावरा शब्द मूलतः अरबी भाषा का है जिसका अर्थ 'अभ्यास' अथवा श्वतचीत' होता है। मुहावरे का अर्थ बोध अभिधा शक्ति से न होकर लक्षणा अथवा अंजना शक्ति से होता है। मुहावरा किसी अर्थ विशेष में रूढ़ हो जाता है इसलिए मह रूढ़ोक्ति भी कहलाता है। "जब कोई वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो जाता है तो उसे मुहावरा कहते हैं।" मुहावरा वाक्य के भीतर ही व्यक्त होता है। इसके प्रयोग से भाषा जीवंत तथा प्रभावशाली बनती है। भाषा में सरसता, रोचकता, रंजकता, प्रवाह और लालित्य गुण आता है। हम यहाँ केवल क्षेत्र विशेष में प्रचलित मुहावरों की ही चर्चा कर रहे हैं। उदा. : 'उल्लू' बोलना - उजाड़ स्थान का संकेत देता है। 'राम' नाम का प्रयोग कई मुहावरों में किया गया है। उदा. : 'राम-राम करना', 'राम रूठना', 'राम लगना', 'राम खुलना' (आकाश से बादल छँटना), 'राम करना' (असाधारण घटना घटित होना), 'राम बुलावा' आदि। 5. पहेलियाँ तथा ढकोसले - पहेली ऐसी गूढ़ बात होती है जिसका निराकरण सहज नहीं होता है। पहेली मानव के मनोरंजन का एक साधन है, ये जनसामान्य में प्रचलित है। उदा. 1. 'लाल घोड़ी खर खाय, पानी पियै मर जाय।' (अग्नि) 2. 'संध्या को पैदा हुई, आधी रात जवान, बडे सवेरे मर गई, घर हो गया मसान। (ओस)'

3. 'तुम उत्ते बड़े, हम इत्ते बड़े।

हमने छू लिया, तुम रो पड़े।' (बिच्छू)

पहेलियाँ मनोरंजन करती हैं वहीं ये मनुष्य में साम्य बैठाती है तथा विभेदीकरण को शक्ति का विकास भी करती है।

ढकोसले विशुद्ध रूप से मनोरंजन के लिए होता है। इसमें ऊटपटांग बातें ही होती है। अधिकतर नाटकों में विदूषक इनका प्रयोग करता है। हिन्दी में अमीर खुसरो के ढकोसले प्रसिद्ध हैं।

"भैंस चढ़ी बबूल पर लप-लप गूलर खाय।"

लोक-साहित्य के संदर्भ परिचयात्मक तथा स्वरूपगत विश्लेषण के पश्चात हम कह सकते हैं कि लोकसाहित्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं। लोक-साहित्य की विशेषताएँ-

1. रचयिता तथा रचना काल अज्ञात होता है।

2. सहज रूप में परिवेश का चित्रण किया जाता है। इसमें आवास व्यवस्था भोज्य पदार्थ, वस्त्राभूषण, शृंगार प्रसाधन, गृहस्थी के उपकरण, व्यवस्था, धार्मिक अनुष्ठान, पर्व-त्यौहार, विवाह की रीतियाँ, पण्नु-पक्षी आहि के चित्रण किया जाता है।

चित्रण किया जाता हो
3. लोक साहित्य लोक मानस का पूर्ण एवं वास्तविक चित्र उकेरता है।
4. शिष्ट साहित्य के अलंकरणों से सर्वथा हीन होता है।
5. लोक साहित्य की प्रमुख विशेषता उसकी सरलता, सरसता तथा स्याभाविक है।

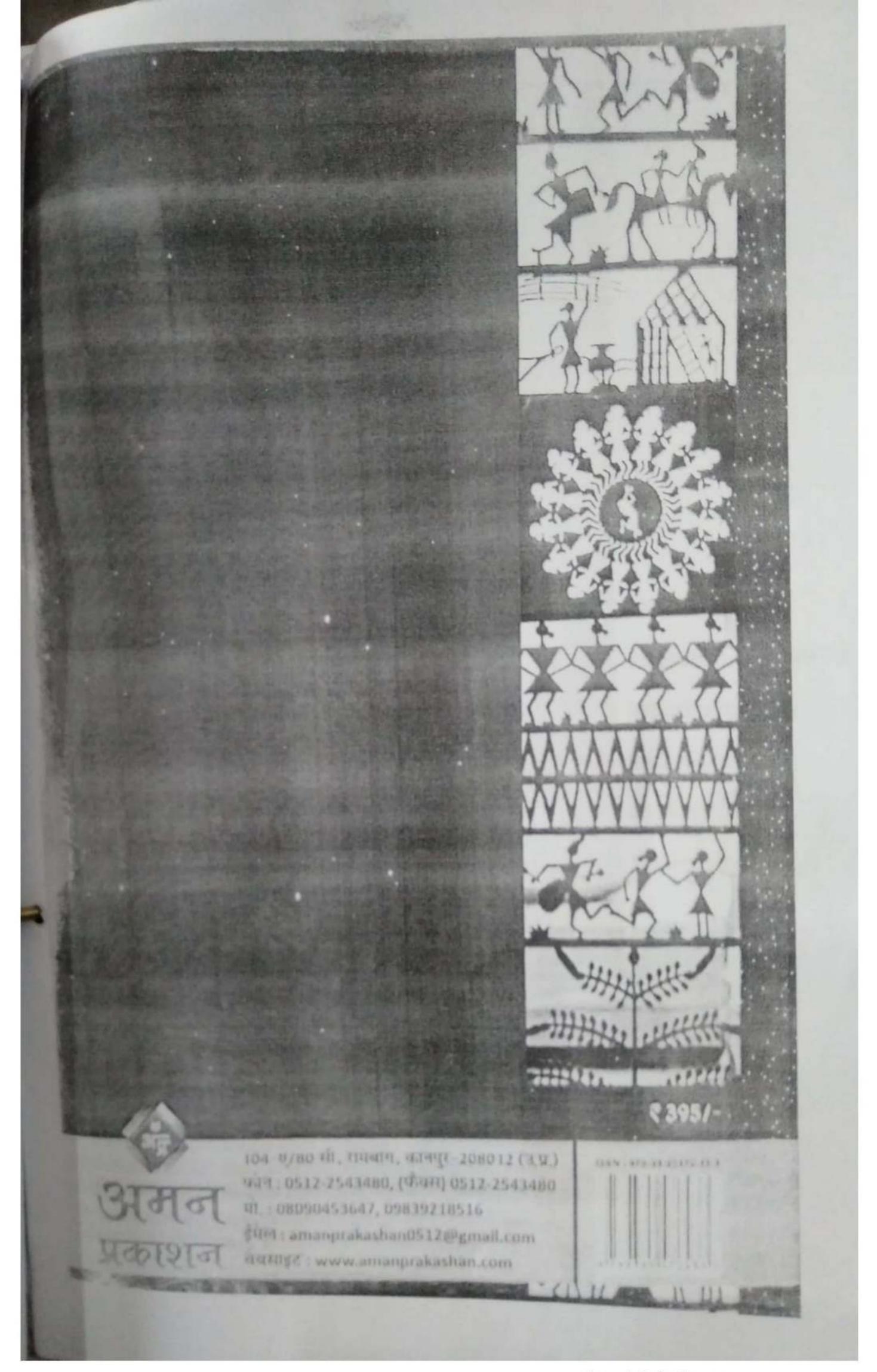
 यह गीत, नृत्य, वाद्य अभिनय के लिए पूरा अवसर देता है।
 यह समुदाय या जाति विशेष के रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार तथा संस्कारों की झाँकी प्रस्तुत करता है। उसकी संस्कृति को अभिव्यक्त करता है।

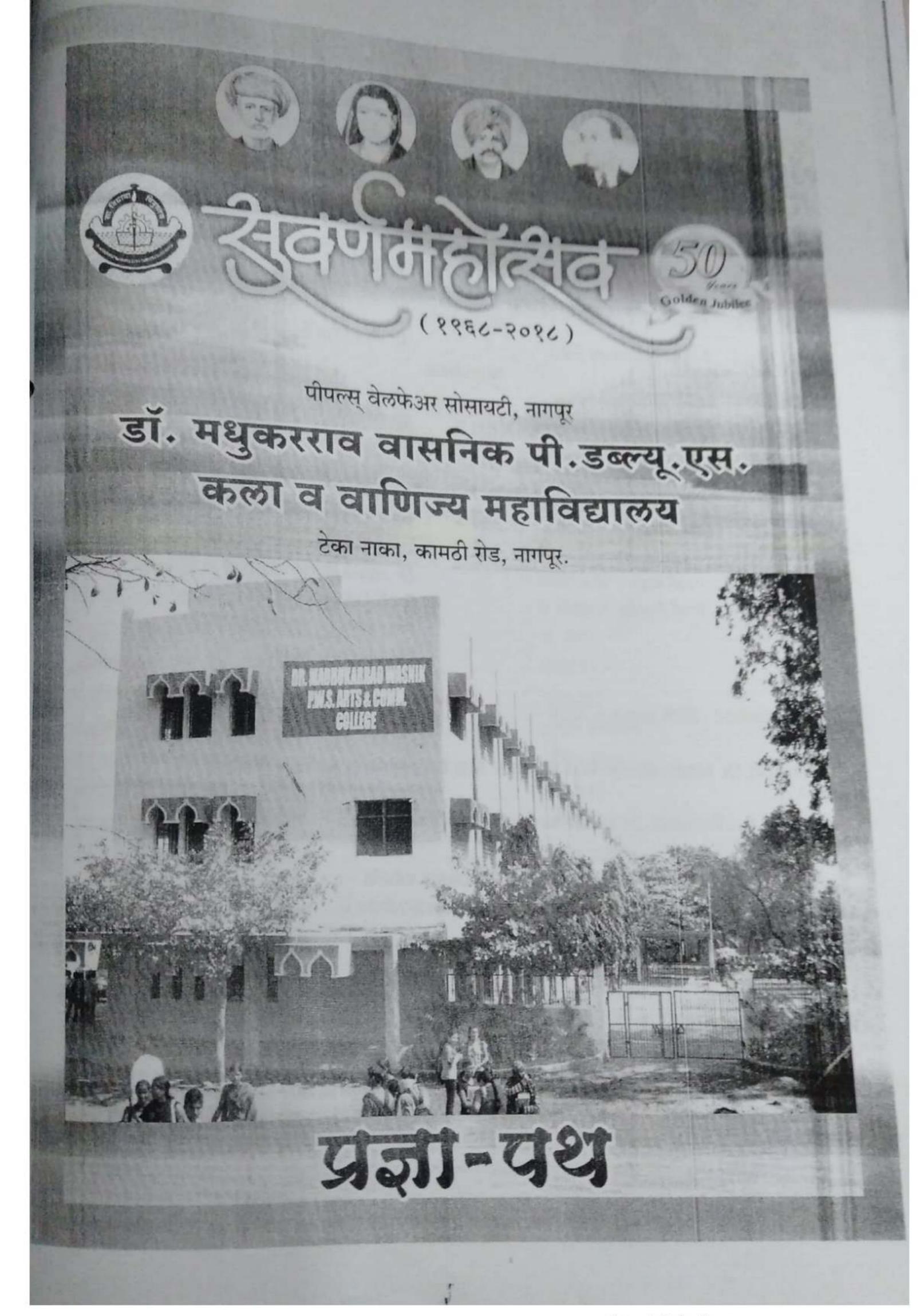
8. लोक साहित्य में प्रचार या उपदेश न होकर मनोरंजनार्थ सामग्री होते है। लोक-साहित्य के स्वरूप एवं विशेषताओं के विवेचन के परचात निष्कर्फ कहा जा सकता है कि लोक साहित्य हमारी संस्कृति का परिचायक है जो जीवन की झाँको प्रस्तुत करता है। वह आम जन-जीवन का दस्तावेज है परनु यह रेख जा रहा है कि आधुनिकता की होड़ में मनुष्य अपनी लोक संस्कृति से दूर होता ज रहा है वह इसे अशिष्ट साहित्य समझने की भूल कर रहा है, जिससे इसका उक्ति विकास नहीं हो पा रहा है। आज इसे संरक्षित करने हेतु विश्वविद्यालय स्तर ज कार्यशाला, सम्मेलनों के माध्यम से कई चर्चाएँ की जा रही हैं परनु यह कस पर्याप्त नहीं हैं। अत: इसके विकास हेतु सरकार के सहयोग से योजनाबद्ध हा स कारगर प्रयास अपेक्षित हैं।

संदर्भ सूची :

साहित्य को महत्ता, आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी, साहित्य संचय भाग-2,प्र.
 भारत निबंध पियूष, डॉ. दीपिका भारद्वाज, पृ. 94
 राम कथा और लोक साहित्य, डॉ. जय नारायण कौशिक, भूमिका
 भारत निबंध पियूष, डॉ. दीपिका भारद्वाज, पृ. 95
 कितने पाकिस्तान, कमलेश्वर, पृ. 182
 भारत निबंध पियूष, डॉ. दीपिका भारद्वाज, पृ. 98
 पायोनियर मानक हिन्दी व्याकरण तथा रचना, डॉ. अशोक कुमार उपाध्य पृ.246

162 / लोकसाहित्य ने जिल्ला ---







Pradnya-path/ प्रज्ञा-पक्ष (A Souvenir of Jubilee Celebration of Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts and Commerce College, Nagpur-26.)

> Board of Editions Chief Editor Sardar Atal Bahadur Singh

Conveners

Dr. Yeshwant Patil

Dr. Indrajeet Orke Dr. Mithilesh Awasthi Dr. Sudesh Bhowate Prof. Amol Mendhe Dr. Sumedh Nagdeve Prof. Mahesh Dudhe Prof. Sandeep Ikhar Prof. Kishor Warabhe Prof. Pankaj Gosavi Dr. Pradnya Bagade

Members

Dr. Manisha Nagpure Dr. Megha Ramteke Dr. Amruta Dorlikar Prof. Pranoti Sahare Prof. Pratibha Pakhide Prof. Saroj Vatte Prof. Madhuri Kumbhare Dr. Jwala Dohane Prof. Ashwini Girade Prof. Priti Gautam Prof. Jagruti Singh

First Published : 29th January, 2019

© Principal, Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts & Commerce College, Nagpur-26.

Published by : Principal, Dr. Madhukarrao Wasnik P.W.S. Arts & Commerce College, Nagpur-26. Contact : 0712-2655881, Website : www.pwscollege.edu.in Email : principal@pwscollege.edu.in / principalpws@yahoo.in

Printed at : Mudrashilpa Offset Printers

ISBN - 978-81-926293-5-3

Disclaimer : The present souvenir 'Pradnya-path' contains articles submitted on the occasion of 50 years of Dr. Madhukarao work P.W.S. Arts & Commerce College. Hence the souvenir or any part of it may not be reproduced in any other form without prior permission and information of the Principal. The Editor, Board of Editors and The Publisher may not agree with the views of the articles printed into souvenir. The writers of the articles will be responsible for the authenticity of published matters in the souvenir.

हिन्दी विभाग अंतरूंग

जयंत जांभुळकर सुमेध नागदेवे प्रीति गौतम रोमा दुर्गे जागृति सिंह तोष वालिया	80 30 20 29 23
प्रीति गौतम रोमा दुर्गे जागृति सिंह	10C 69
. रोमा दुर्गे . जागृति सिंह	69
. जागृति सिंह	
	63
नोष वालिया	
	68
रेश उईके	64
गील देशभ्रतार	68
षेक राऊत 🖌	60
ा दाहाडे	013
नइय्या अली	22
ईन सिद्दीकी	90
BY WE BC. THE	शील देशभ्रतार षिक राऊत न त दाहाडे काइय्या अली ईन सिद्दीकी

पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय : उत्तर नागपुर में शैक्षणिक क्रांति

डॉ. सुमेध पानाचंद नागदेवे, (हिन्दी विभाग)

समाज के प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग तथा समूह तक, पत्येक दलित, शोषित, पीड़ित तक शिक्षा पहुँच सके, यही हाँ, बाबासाहब आंबेडकर का सपना था। इसी सपने को पूरा करने हेतु डॉ. मधुकरराव वासनिकजी ने 1968 में वी.डब्ल्यू.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय की स्थापना की। उस समय उत्तर नागपुर सामाजिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ था। इस क्षेत्र में उस समय कोई और महाविद्यालय नहीं था। इस बात को ध्यान में रखकर डॉ. मधुकरराव वासनिकजी ने 1967 में पीपल्स वेलफेअर सोसायटी की स्थापना की। इसी संस्था के अंतर्गत पी.डब्ल्यू.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदोरा, नागपुर तथा 1984 में इंदिरा गांधी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कळमेश्वर में ऐसे दो महाविद्यालय स्थापित किए। लोगों का सामाजिक तथा शैक्षणिक स्तर में सुधार हो यही इन महाविद्यालयों का उद्देश्य था। आरंभ में पी.डब्ल्यू.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय छोटे से खपरैलनुमा भवन में इंदोरा चौक, नागपुर में स्थित था परंतु विद्यार्थियों की बढ़ती हुई संख्या तथा जगह की कमी के कारण इस महाविद्यालय को टेकानाका, कामठी मार्ग पर स्थानांतरित कर दिया गया। जहाँ इसे विशाल शैक्षणिक भवन का आकार दिया गया। जिस सोच, जिस नई दृष्टि से इस महाविद्यालय की स्थापना की गई वह अपने विकास की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। पीपल्स वेलफेअर सोसायटी के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. मधुकर वासनिक, जो कि पेशे से एक प्रसिद्ध डॉक्टर तथा पूर्व विधान परिषद सदस्य भी रहे है, हमेशा सभी को मार्गदर्शन देते है, सभी को प्रोत्साहित करते रहते हैं। महाविद्यालय की उन्नति हेतु वे हमेशा प्रयासरत रहते है। यह उनकी ही दृष्टि, उनकी ही नीतियों का परिणाम है कि इस महाविद्यालय ने छोटे से खपरैलनुमा भवन से आरंभ कर आज एक विशाल रूप ले लिया है। आज इस महाविद्यालय का अपना एक प्रशस्त प्रांगण है। इस प्रांगण में चारों ओर लगे वृक्षों के कारण वातावरण बेहद सुंदर और हराभरा है।

वर्तमान में महाविद्यालय में बुद्धिस्ट स्टडी सेंटर, रिसर्च सेंटर, विशाल ग्रंथालय, भाषा प्रयोगशाला, खेल का मैदान, प्राध्यापकों के लिए स्टाफरूम, प्रत्येक विभाग के लिए अलग कक्ष आदि मौजूद है।

A TRAL LINE SHILLS DARRAN MOLESE SHILLS

एन.एस.एस. विभाग के माध्यम से जनजागरण कार्यक्रम, रक्तदान शिबिर, रोगनिदान शिबिर, पर्यावरण संरक्षण आदि विविध कार्यक्रम लिए जाते हैं। पर्यावरण की रक्षा हेतु यह विभाग वृक्षारोपण के साथ ही उसका संगोपन भी करता है। आज संपूर्ण भारत में रक्त की कमी है, लाखें मरीजों को रक्त की आवश्यकता होती है। महाविद्यालय प्रतिवर्ष एन.एस.एस. विभाग की ओर से रक्तदान शिविर क आयोजन कर अपने सामाजिक दायित्व को निभाता है। एन.एस.एस. शिविर के माध्यम से, अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास के साथ-साथ सेव भाव तथा सहयोग की भावना का निर्माण किया जाता है। क्रियात्मक तथा रचनात्मक कार्यों हेतु छात्रों को तैयार किया जाता है। इस विभाग का उद्देश्य ही राष्ट्र सेवक निर्माण करना है। ऐसे सेवक जो देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिक निभाए। रोजगार सेल की ओर से छात्रों को रोजगार के संबंध में मार्गदर्शन दिया जाता है। विविध कंपनियों को बुलाकर छात्रों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करता है। उनकी ओर से विविध स्पर्धात्मक परीक्षा की तैयारी के साथ ही परीक्षा का आयोजन भी किया जाता है। छात्रों को इस स्पर्धात्मक युग हेतु तैयार कर उनका सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। वर्तमान में इस महाविद्यालय के छात्र विविध क्षेत्रों में कई बड़े-बड़े पदों पर विराजमान है। यह इस महाविद्यालय के लिए बडे गर्व की बात है। महाविद्यालय के द्वारा स्नातकोत्तर छात्रों को नेट/सेट के लिए तैयार किया जाता है। महाविद्यालयीन प्राध्यापकों द्वारा उन्हें मार्गदर्शन दिया जाता है।

सांस्कृतिक विभाग महाविद्यालय का एक महत्वपूर्ण विभाग है। जो छात्रों के कलात्मक गुणों को बाहर निकालकर

76

मे निखारंकर मंच प्रदान करता है। प्रत्येक छात्र की योग्यता मुके कलात्मक गुणों के आधार पर चाहे वह लेखन कला हो बनूत्य-कला, गीत-गायन हो या नाटक-अभिनय सभी क्षेत्रों बेछात्रों के भीतर रूचि उत्पन्न कर उसके सुप्त गुणों को बाहर नेकालकर उसका डर समाप्त कर उसे निर्भय बनाया जाता है। छात्रों के भीतर आत्मविश्वास जगाता है। यही आत्म -विश्वास इस स्पर्धात्मक युग हेतु बेहद महत्वपूर्ण है जो छात्रों का भविष्य सँवारने में सहायक है।

না

महाविद्यालय विविध चर्चासत्र, बौद्धिक परिसंवाद, ग्रद्दीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का भी आयोजन करता है। विभिन्न क्षेत्रों के विविध विषयों के विशेषज्ञों को आमंत्रित कर सत्रों के ज्ञान को समृद्ध किया जाता है। छात्र उनसे प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा को शांत करते है। चर्चा सत्रों द्वारा परिसंवाद तथा संगोष्ठी के माध्यम से विविध शोध विषयों पर विचार मंथन किया जाता है। ऐसे सेमिनार छात्रों को शोधलेखन हेतु प्रेरित करते है।

महाविद्यालय की ओर से प्रतिवर्ष 'मैत्री' पत्रिका तथा "Perspective Research Magazine" का प्रकाशन किया जाता है। इस शोध पत्रिका में प्राध्यापकों के अलावा शोध जत्रों के भी शोध-पत्र प्रकाशित होते हैं। यह शोध-पत्र छात्रों में ज्ञानवृद्धि करता है। 'मैत्री' पत्रिका छात्रों के क्रियात्मक और रचनात्मक लेखन कौशल को निखारता है। उन्हें लेखन मंच प्रदान करता है। सभी प्राध्यापक छात्रों को लेखन हेतु प्रेरित करते है, उनके लेखन के सुधारते सँवारते हुए लेखन के संकेत बिंदू देते हैं। छात्र इस पत्रिका के माध्यम से अलग-अलग विषयों पर अपने विचार रखता है।जिससे एक वैचारिक वातावरण का निर्माण होता है। जो उनके व्यक्तित्व निर्माण, उनके विकास में सहायक होता है। ग्रंथालय के अध्ययन कक्ष में बैठकर अपने जोसकार्य के पूर्व करते हैं। इस ग्रंथालय में प्रत्येक विषय के अनुसार पुरस् रखी गई हैं, जिससे कोई भी पुस्तक आसानी से दूँद्रकर प्रस् की जा सकती है। अतः छात्रों को पुस्तकों के लिए कई के जाने की आवश्यकता नहीं होती, वे अपना जोधकार्य केई क पूर्ण कर सकते हैं।

5-7 A

खेल विभाग के अंतर्गत आधुनिक किम भी है जर्म छात्रगण व्यायाम करते हैं। इस खेल विभाग ने अनेक जर्मन अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाडी तैयार किए है। कई स्वर्धन क विजेता यह महाविद्यालय कई स्पर्धाओं का आयोजक झे क है। इस विभाग में कदम रखते ही, वहाँ के पारिलेकि देवल ही उसकी भव्यता का अहसास होता है। पूरे विवर्ववर्धन देवल इस विभाग का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। इस विज्ञ के प्राध्यापक स्वयं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाडी रहे है। क महाविद्यालयीन छात्रों को उसी स्तर का खिलाडी कान क लिए प्रयासरत रहते हैं। उनके ही परिश्रम का परिणाम क रहा कि महाविद्यालय ने देश को कई बेहतरीन खिलाडी दिव

पालि विभाग, आंबेडकर विचारधारा, बुद्धिस सहे सेंटर के कारण ही महाविद्यालय की अपनी अलग पहलन रही है। यह ऐसे विषय है जिनका अध्यापन बहुत कम स्वाने पर होता है। महाविद्यालय इन विषयों के माध्यम से अज है अपनी संस्कृति को संजोए रखा है। प्राचीन भाषा के लाई पालि का अपना महत्व रहा है। महात्मा बुद्ध के विचार, उनके उपदेश इसी भाषा में मौजूद है। आधुनिक भारत के शिर्यकार है, उनके विचार डॉ. आंबेडकर छात्रों को नई दिशा देते है यह विषय, उनके विचार छात्रों का मार्ग प्रशास्त करता है वह विचार प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करता है। महाविद्यालय विविध कार्यक्रमों के माध्यम से आधुनिक भारत के निमांत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों को आत्मसात करते ह उनके विचारों का प्रचार प्रसार भी करता है। समाज की सेवा करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तत्य है महाविद्यालय इसी सेवा भाव को अपना दायित्व समझता है इसी सेवा भाव को धारण करते हुए महाविद्यालय ने जमती रोड स्थित 'कवठा' गाँव को गोद लिया है। यहाँ की डिल परिषद की प्राथमिक शाला में महाविद्यालय ने पुरत्ने

आर.टी.एम. नागपुर विद्यापीठ द्वारा महाविद्यालय को 2016-17 में शोध केंद्र प्राप्त हुआ है। जहाँ शोध छात्र चिंतन, मनन तथा पठन द्वारा अपने शोध को एक नई दिशा देता है। यहाँ का ग्रंथालय इतना समृद्ध है कि प्रत्येक विषय की पुस्तकें यहाँ मौजूद है। छात्र इन पुस्तकों अध्ययन कर, अपने विषय से संबंधित सामग्री एकत्रित करते हैं। छात्र

Scanned with CamScanner

आलमारी, कम्प्यूटर आदि चीजे दी। वहाँ के छात्रों के लिए बॅग, गणवेश आदि वस्तुएँ प्रदान की गई। प्राध्यापक वृंद भी प्रत्येक वर्ष अनाथ आश्रम, वृद्धाश्रम हेतु आर्थिक सहायता देता रहता है। जो छात्र किसी कारण वश अपनी परीक्षा फीस देने में असक्षम है ऐसे छात्रों की प्राध्यापक सहायता करता है। गरीब छात्रों को पुस्तकें प्रदान करता है। किसी ना किसी रूप से वे छात्रों की मदद करते रहते हैं।

महाविद्यालय में राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विद्यापीठ के बी.ए., बी. कॉम. सनतक स्नातकोत्तर अभ्यास क्रम का अध्ययन अध्यापन कराया जाता है। नोकरी पेशा लोगो की समस्याओं, उनकी कठिनाईयों को ध्यान में रखते हुए यशवंतराव चव्हान मुक्त विद्यापीठ के अभ्यासक्रम भी चलाए जाते हैं। इसके अलावा ज्युनियर कॉलेज में कला एवं वाणिज्य अभ्यासक्रम के साथ एम.सी.वी.सी. वोकेशनल अभ्यासक्रम भी पढ़ाया जाता है। लगभग 100 के आसपास शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी मौजूद है। पीपल्स वेलफेअर

सोसायटी के अंतर्गत ही 2015-16 में सी. बी. एस. सी. नागपुर पब्लिक स्कूल की भी स्थापना की गई। यह शाला नर्सरी है आरंभ होकर आज चौथी कक्षा तक पहुँची है, जिसके विद्यार्थी संख्या लगभग 200 है। इन 50 वर्षों में पीपला वेलफेअर सोसायटी का निरंतर विकास हुआ। हैं मधुकरराव वासनिकजी ने जो शिक्षा का बीज बोया था, आज उसने वटवृक्ष का रूप धारण कर लिया है। महाविद्यालय के लिए यह बड़े गर्व की बात है कि निरंतर विकास के पथ प चलते हुए कई कठिनाइयों को पार करते हुए इस महाविद्यालय ने अपना एक मुकाम हासिल करते हुए नॅक द्वारा बी ग्रेड प्राज किया है। व्यवस्थापन प्रबंधन के कुशल निर्देशन, प्राध्यापक तथा प्राध्यापकेत्तर कर्मचारियों की निष्ठा, कर्त्तव परायणता, सौहार्द्रपूर्णता इनके आपसी समन्वय तथ तालमेल के कारण महाविद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। जो समाज की सोच को परिष्कृत कर, उसे शैक्षिक पथ की ओर ले जाने में मील का पत्थर साबित हुआ है।

DR. MADHUKARRAO WASHIN RIKS ARTS & COMMENCION

त्यक्तित्व विकास एवं पी.डब्ल्यू.एस. कॉलेज

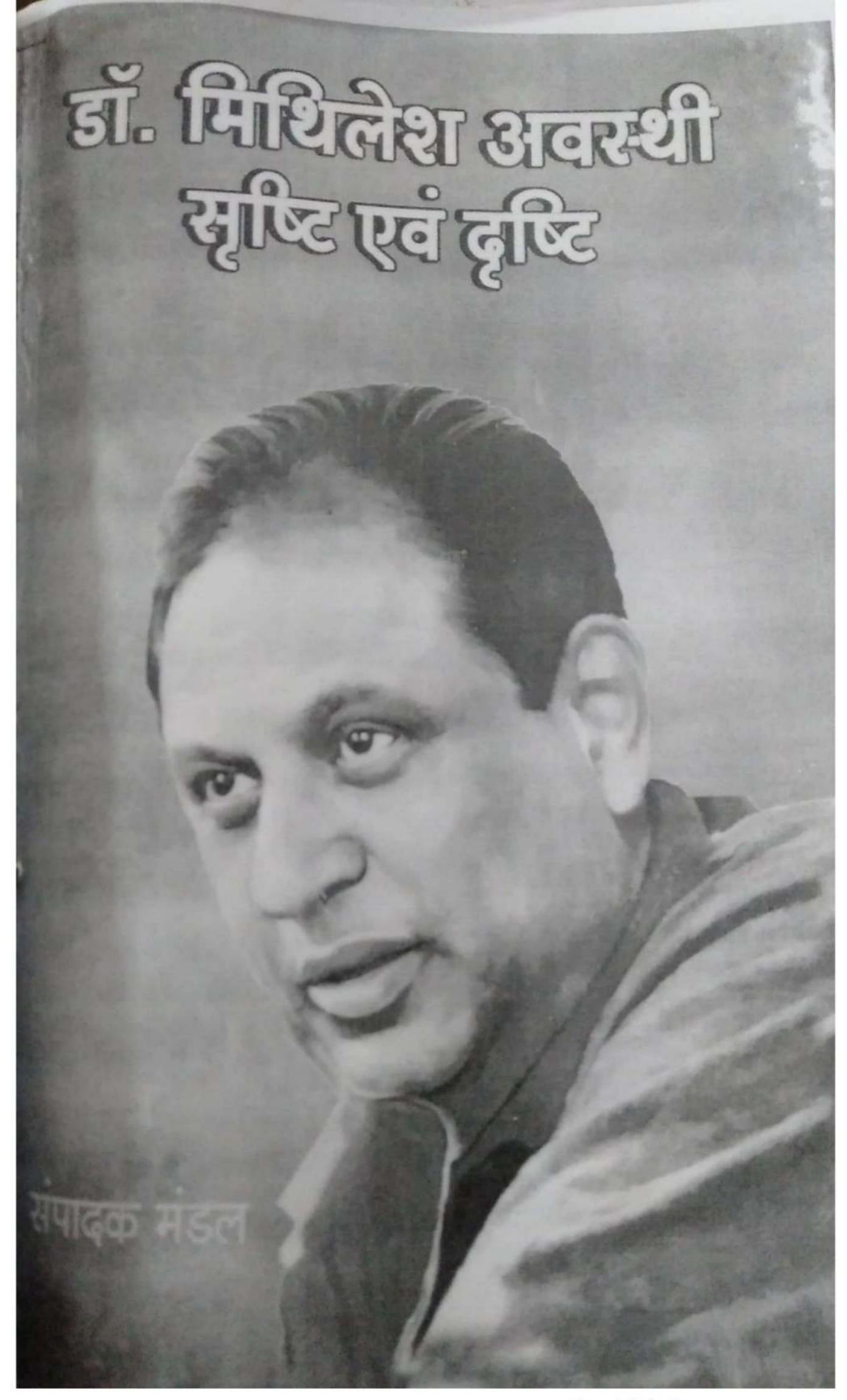
प्रा. प्रीति गौतम (हिन्दी विभाग)

78

समाज ही एक इकाई को समग्र समाज से जोड़ने तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग को विकास के मुख्य प्रवाह से जोड़ने का अहम प्रयास करने वाले पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय का महत्व केवल उत्तर नागपुर के संदर्भ में ही नहीं नागपुर विद्यापीठ के परिप्रेक्ष्य में भी विशिष्ट हैं। मैंने पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय में अंशकालीन प्राध्यापिका के रूप में हिन्दी विभाग मं सन २००४ से २००६ तक कार्य किया। जो मेरे जीवन का सुखद अनुभव है क्योंकि इसी महाविद्यालय में अध्यापन करने से मेरे भीतर का आत्मविश्वास जागा। मेरे मनोबल को बढ़ाने का श्रेय इस महाविद्यालय को ही जाता है। यहाँ का वातावरण मुझे एक परिवार की ही तरह लगने लगा।

मेरा यह अनुभव रहा कि पी.डब्ल्यू.एस. महाविद्यालय कामठी रोड, नागपुर सन १९६८ को स्थापित उत्तर नागपुर का सर्वप्रथम महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय ने पिछड़े वर्ग को प्रगति के पथ पर पहुँचाने का प्रयास किया है। प्रत्येक वर्ग का बच्चा इस कॉलेज से शिक्षा प्राप्त करता आ रहा है और हर एक क्षेत्र में इस महाविद्यालय का नाम रोशन कर रहा हैं। विशेष तौर से यह देखा जाता है कि यहाँ जो भी बच्चा पढ़ने आता है वह निम्न व मध्यमवर्गीय परिवार से संबंध रखने वाला होता हैं। नागपुर के बाकी महाविद्यालयों से यदि तुलना की जाए तो पी.डब्ल्यू.एस. कॉलेज में ११ विषयों के पाठ्यक्रम एम.ए., एम.कॉम. (स्नातकोत्तर) संचालित किए जाते हैं। जो इस महाविद्यालय को गौरवान्वित करता है।

इस महाविद्यालय की कुछ बातें मेरे मन को भीतर तक द्रवित करती हैं जैसे इस महाविद्यालय के अधिकांश विद्यार्थियों के सामने उपस्थित आर्थिक संकट उनके जीवन को संघर्षों से भर देता है। इनसे निपटते हुए पढ़ाई करना एक बड़ी चुनौती होती है। यह भी सच है ये संघर्ष एवं चुनौतियाँ उनके भावी जीवन के लिए मजबूत



डॉ. मिथिलेश अवस्थी सृष्टि एवं दृष्टि

संपादक मण्डल संजय तिवारी

(निवासी संपादक, दैनिक नवभारत, नागपुर)

डॉ. हरिप्रांकर ट्वियेदी (होगंगाबाद)डॉ. यसंत त्रिपाठी (प्रयागराज)डॉ. हरेराम पाठक (डिगवोर्ड, असम)डॉ. अग्रोक सभ्रवाल (चण्डीगढ़)डॉ. आग्रोक धुलधुले (नासिक)डॉ. इंप्रवर पवार (शिरूर)डॉ. विजय गाइे (सांगली)डॉ. अनिल दुबे (वर्धा)डॉ. सुमेध नागदेवे (नागपुर)आंमती दीप्ति अवस्थी (नागपुर)



ISBN: 978-93-86248-94-7

पुस्तक : डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि संपादक : संजय तिवारी प्रकाशक : विद्या प्रकाशन

		सी-449, गुजेनी, कानपुर-22
		दूरभाष : (0512) 2285003
		मो० : 09415133173
		Website: www.vidyaprakashankanpur.com E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com प्रथम 2019
संस्करण		
शब्द सज्जा	:	शिखा ग्राफिक्स, जूही, कानपुर
मुद्रक	:	श्री पूजा प्रिण्टर्स, नौबस्ता, कानपुर
मूल्य	:	₹695/-

Dr. Mithilesh Awasthi : Srashti avam Drashti Edited By : Sanjay Tiwari

Price : Six Hundred Ninety Five Only

डॉ. मिथिलेश अवस्थी सुष्टि एवं दूष्टि

अनुक्रमणिका

01 अशेष आशीर्वाद...

02 मिथिलेश जी के साथ व्यतीत हुए अविस्मरणीय क्षण

03 अंतरंग-क्षण

04 मैं खुशनसीब हूँ कि मुझे दादा जैसा मित्र मिला.....

05 मिथिलेश अवस्थी : विनम्र प्रखरता की मूर्ति

06 भाग्य बदलने वाला प्रोफेसर

07 बीस बरस का साथी : मिथिलेश अवस्थी

08 साहित्य-मनीषी डॉ. मिथिलेश अवस्थीःव्यक्तित्त्व और कृतित्त्व डॉ. पद्मचंद जैन, अमरावती 11-12 डॉ. सतीशराज पुष्करणा, पटना 13-71

डॉ. एच.एस. द्विवेदी, होशंगाबाद 22-23 डॉ. अशोक सम्रवाल, चण्डीगढ़ 24-27

डॉ.बसंत त्रिपाठी, प्रयागराज 28-32

संजय तिवारी, नागपुर 33-40 डॉ. हरेराम पाठक 41-44 डिगबोई (असम)

डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह, पटना 45-50

नॉ तिनग महादेव गांदे सांगली 51-56

09 बड़े भाई - मिथिलेश!	डॉ. विजय महादेव गार्ड, सागला	51-20
10 डॉ. मिथिलेश अवस्थी : व्यक्ति और सृजनकार	प्रो.डॉ. अशोक धुलधुले, नासिक	57-61
 चिन्तन के क्षणों के यात्री : डॉ. मिथिलेश अवस्थी 	डॉ. मीनाक्षी जोशी, भंडारा	62-65
12 मित्रता की ज़मी के शम्स	डॉ. ईश्वर पवार, शिरूर	66-69
13 विद्या विनयेन शोभते	डॉ. ऋचा शर्मा, अहमदनगर	70-71
14 संवेदनाओं से लबालब भरा कविमन	प्रा. सूर्यकांत चव्हाण, लातूर	72-74
15 जो अच्छा है, वह सबका है	डॉ. आभा सिंह, नागपुर	75-78
16 'सर' से कब 'बड़े भाई' बन गए, पता ही न चला	उषा अग्रवाल; नागपुर	79-81
17 शिक्षाविद, सृजनशील, ज्ञानयोगी डॉ. मिथिलेश अवस्थी	डॉ. सुदेश मीरा-बलीराम भोवते नागपुर	82-101

डॉ. मिथिलेश अवस्थी । सृष्टि एवं दृष्टि 18 मेरे बजरंगी भाईसाहब 19 रिश्तों की पवित्रता और संवेदना की गहराई का अनुठा संगम 20 डॉ. मिथिलेश अवस्थी 21 मेरे मामा-हौसला, प्यार ओर विश्वास के प्रतिमान 22 गुरुवर, जिन्होंने अपने भीतर के शिष्य को खत्म नहीं होने दिया 23 डॉ. मिथिलेश अवस्थी : मित्रवत मार्गदर्शक 24 मेरे ज्येष्ठ भ्राता अवस्थी सर 25 मेरे महागुरु : डॉ. मिथिलेश अवस्थी 26 रिश्तों का मान ही नहीं रखते, शिद्दत से निभाते भी हैं

सनत कुमार जेन, जगदलपुर 120-122 अभिनव द्विवेदी, भोषाल 123-128 डॉ. ममता मेहता, अमरावती 129-130 प्रा. आनंदमणि त्रिपाठी अहमदनगर 131-136 डॉ. चंद्रशेखर पाटिल, नागपुर 137-141 प्रा. निवृत्ति लोखंडे, अकलूज प्रा. सुमेध पी. नागदेवे, नागपुर 142-153 154 डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर, पुणे 155-157 रेखा संजय तिवारी, नागपुर 158-160 नरेंद्र परिहार, नागपुर 161-173 मनोज अर्जुन सिंह, नागपुर 174-177 हितेन्द्र घोटेकर, पुणे 178-182 डॉ. सपना तिवारी, नागपुर श्रीमती प्रीति विनोद गौतम 183-194 नागपुर संतोष कौर वालिया (संध्) 195-205 नागपुर

नीतिमा पाठक, नागपुर

डॉ. मेघा रामटेक, नागपुर

102-109

110-116

117-119

 27 सदाबहार व्यक्तित्व के धर्मी डॉ. मिथिलेश अवस्थी
 28 ज्वालामुखी को बना दिया ओस की बूंद
 29 प्रा. मिथिलेश अवस्थी : एक बहुआयामी जीवंत हस्ताक्षर
 30 ईश्वर हमें निर्बल नहीं, सबल बनाता है:भैयाजी
 31 अपने शिक्षक के प्रति-मंतव्य
 32 शील, प्रज्ञा, करुणा के धनी प्राता अवस्थी जी
 33 सिद्धांतवादी व उसूलों के पत्वके अवस्थी सर
 34 सर से गुरु बन गए और गुरु से पापा

डॉ. मिथिलेश अनस्थी साष्ट एन दुषि 35 विपदा में और कोई चेहरा m. mhas faast 2010-211 याद ही नहीं आता आण, खद, नागपूर 36 मैंने उनमें वो चेहरे हरनीत कोर माणी (बिट्रा) हंढ लिए जिनकी बद्धारपर कभी तस्वीर भी नहीं देखी 37 जरूरी नहीं कि रक्त के 234-239 सपना गायकवाड, कामठी संबंध ही पक्के होते हैं 38 सोचा भी नहीं था, 240-242 रुखसार इनायत अली, नागपुर ऐसा रिश्ता बन जाएगा 243-247 39 जिनसे सब कुछ सीखने के रोमा दुर्गे, नागपुर लिए एक जन्म भी कम लगता है 40 अनमोल गुरु - मेरे बड़े पापा 248-251 आरिफा शबनम शेख, कामठी 252-255 41 जब गुरुजी डाँटते हैं तो ऋषभ जैन. सल्म्बर, राजस्थान

- 42 अनुशासन, कर्म एवं प्रेम के मोइन सिद्दीकी, नागपुर 256-260 प्रतीक- डॉ. अवस्थी सर
- 43 संघर्ष के बाद भी कर्तव्य में जागृति मनोज सिंह, नागपुर 261-274 कमजोर नहीं पड़े (अम्माजी की नज़र में भैया जी)
- 44 अनुशासनात्मक व्यवहार प्रा. सुमेध पी. नागदेवे, नागपुर 275-282 ही जीवन-शैली है
 - (बड़े भाई 'दादा' कौशल अवस्थी से सहज संवाद)
- 45 मैंने हमेशा मनुप्यता को डॉ. अनिल कुमार दुबे, वर्धा 283-296 सर्वोपरि रखा है
 - (डॉ. मिथिलेश अवस्थी से सीधी बातचीत)
- 46 डॉ. मिथिलेश अवस्थी की कृतियाँ

लगता है कि पिता बोल रहे हैं

Scanned with CamScanner

297-312

12 / डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि

रिश्तों का मान ही नहीं रखते, शिद्दत से निभाते भी हैं

- प्रा. सुमेध पानाचंद नागदेवे

वर्तमान समय में जहाँ मनुष्य की मनुष्यता समाप्त हो रही है, उसके मूल्य, सिद्धांत कहीं खो रहे हैं, नैतिकता, सवाचार, परोपकार कहीं नज़र नहीं आ रहे, वहीं कुछ लोग आज भी मनुष्यत्त्व को धारण किए हुए हैं, सदाचार को धारण किए हुए हैं, दूसरों की सहायता निःस्वार्थ नाव से करना अपना धर्म समझते हैं। जिनकी शख़िसयत, जिनकी विद्वता हिन्दी जगत में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।



ऐसे व्यक्तित्त्व के साथ रहकर औरों का भी व्यक्तित्त्व निखरता है। मेरा सौभाग्य है कि ऐसी शख़िसयत के साथ मुझे रहने का, काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। वो कोई और नहीं मेरे अपने भाई, सहकर्मी, मित्र, गुरु, मेरे मार्गदर्शक डॉ. मिथिलेश अवस्थी हैं, जो जो. मधुकरराव जासनिक पी. डब्ल्यू. एस. कला एवं वाणिज्य व्यविद्यालय के टिद्ये विभाग के जिमागाध्यक्ष ही नहा बल्कि महाविद्यालय

तागल्य नतावालन के जानरत भी हैं। तथा हिन्दो विभाग के जानरत भी हैं। मेरे उनके साथ बिताए कई यादगार लम्हे हैं। मुझे आज भी याद है महाविद्यालय में मेरे पहला दिन, जब मैं हिन्दी विभाग में आया। पहला दिन सभी के जावन में एक अलग भूमिका में आता है। मुझे कहीं अकेलापन महसूस ना हो इसलिए स मुझे अपने हँसते-खेलते अंदाज में सहज करने का प्रयास करते रहे। मुझे महसूस कहीं होने दिया कि महाविद्यालय में मेरे पहला दिन है। एक बड़े भाई की तरह, महीं होने दिया कि महाविद्यालय में मेरे पहला दिन है। एक बड़े भाई की तरह, करते हैं, किसी ना किसी रूप में सभी का मनोबल तथा आत्मविश्वास बढ़ाते हैं। मंच से भय प्रत्येक व्यक्ति की किसी ना किसी रूप में लगता है, उसमें मैं भी जामिल था। मुझे बार-बार मंच पर भेज कर मेरे डर को ही समाप्त नहीं किया करन नहीं चाहता, वहीं वे अपना मंच अपने से छोटों को प्रदान कर, उनमें विश्वास भर, स्वयं श्रोता दोर्घा में बैठकर औरों का मनोबल बढ़ाते हैं। जहाँ हम गलती करें वे बड़े प्यार से हमारी गलती को सुधारने का प्रयास करते हैं। उनकी डाँट में भी

चार ही होता है, सुधारने का ही भाव होता है।

विद्यार्थियों के साथ, अपने से छोटों के साथ तो वे बच्चे ही यह जाते हैं। बाखों के समान ही उनकी आदतें दिलाई देती है। उनके नहीं अहंकर, जाई नहीं देता। उनका यह क्याहार हमेशा यही सीख देता है कि चाहे हम किल्ले की बढ़े बन जाएँ पर हमारा बचपन हमसे कभी दूर ना हो। हमारा जयपन ही है जो हमें हैसाता है, गुदगुदाता है, हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। जो व्यक्ति ऐसे जीवन जीता है वह हमेशा उत्साह से भरपूर ऊर्जावान होता है। यही ऊर्जा आप में नज़र आती है। बच्चों के साथ बच्चा, बड़ों के साथ बढ़ा, साहित्यकारों के दीच साहित्यका, विश्लेषकों में विश्लेषक, आलोचकों में आलोचक ही नज़र आते हैं। किसी भी जिन्ह को देखने की उनकी दृष्टि बड़ी ही गंभीर और व्यापक है। उनका कथन ही है कि, 'मनुष्य की दृष्टि बड़ी नहीं बल्कि उसका दृष्टिकोण बड़ा और व्यापक होना चाहिए।' अपने से छोटों में नेतृत्व क्षमता तैयार करना सर का स्वभाव है। ये हमेशा मुझसे कहते हैं कि 'नागदेवेजी मेरे जाने से पूर्व आप को सभी काम आ जाने चाहिए। में यह नहीं चाहता कि मेरा साथी किसी भी स्थिति में, किसी भी विषय पर कहीं पर भी कमजोर पड़ जाए।' वे छोटी से छोटी बातों से लेकर, बड़ी से बड़ी चीजों तक प्रत्येक बातों की जानकारी देते ाँ। हमें सिखाने के लिए पहले वे स्वयं करके दिखाटे है। कई बार तो वे हमसे काम करवाते हैं और जो हमसे त्रुटियाँ रह जाती हैं उसे कैने सुधारा जाए, हमें सिखाते हैं। चाहे पेपर कटिंग हो या फाइलिंग, चाहे मंच संचालन हो या वक्ता के रूप में, आज जो कुछ भी थोड़ा-बहुत सीखा हूँ कहीं ना कहीं सर के आशीर्वाद के कारण ही सीख पाया हैं। यदि कभी आपको किसी शब्द की कमी खल रही हो, या किसी विषय की जानकारी चाहिए तो आप एक बार सर से अवश्य संपर्क सार्थे। हमारा विरास है कि आपको उसका जवाब मिल जाएगा। उनका शब्द भंडार बहुत व्यापक है। किसी भी विषय के बारे पूछ लीजिए आपको संपूर्ण जानकारी मिल जाएगी। शायद यह ज्ञान उनके निरंतर अभ्यास से, उनके अनुभव से ही उन्हें प्राप्त हुआ होगा। उनका यह निरंतर अभ्यास औरों को भी अभ्यास के लिए प्रेरित करता है। उनके हाथ में हमेशा कोई न कोई पुस्तक दिखाई देगी। उनके इसी पुस्तक-प्रेम, निरंतर पठन की आदत के कारण ही उनका विषय-ज्ञान औरों हे कहीं आगे है। एक बार गूगल एक जानकारी देने में असफल हो सकते हैं, पर हमारे गुरु कभी असफल नहीं हो सकते। वे हमेशा अद्यतन रहते हैं। उनका ज्ञान-कोश सिंधु के समान है पर उनमें थोड़ा सा भी अहम् भाव नहीं है। यही सच्चे विद्वान की पहचान भी है।

अवस्थी सर निरंतर कुछ न कुछ रचना कर्म, शोध कार्य करते हुए दिखाई

144 / डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि

देते हैं। एक दिन जब वे शोध कार्य में तल्लीन थे, तब मैं उनके शोध-पत्र को पढ़ हा था। मैंने देखा कि उन्होंने कम से कम आठ से नौ बार उस शोध-पत्र को पढ़ कर सुधारा। जितनी बार वे अध्ययन करते उतनी बार कोई न कोई गलती ढूँढ़ ही लेते और सुधार करते। शोध के प्रति इतनी तपस्या बहुत ही कम लोगों में दिखाई देती है। वे हमेशा कहते हैं कि 'नागदेवेजी शोध करते समय विषय के, शोध के सन्दत पक्षों को, पद्धतियों को ध्यान में रखना चाहिए, एकांगी नहीं होना चाहिए।' वे कहते हैं कि 'में आज भी शोध पत्र लिखता हूँ तो अपने ही लिखे शोध-पत्र का पुनः-पुनः अध्ययन करता हूँ। जितनी बार अध्ययन करेंगे उतनी बार कहीं ना कहीं, कुछ न कुछ त्रुटि दिखाई देगी, आप उसमें सुधार कर पाएँगे। आप के शोध में निखार आएगा, सटीकता आएगी।' उनकी कही गई एक-एक बात सदैव मेरे मस्तिष्क में गूँजती रहती है।

अब तक सर की चार पुस्तकें 'इम्तहान रोज़ होते हैं', 'यशपाल के उपन्यासों में युगचेतना', 'चिंतन के क्षण' और 'अहिन्दी भाषी और हिन्दी रंगमंच' प्रकाशित हो चुकी हैं। 'इम्तहान रोज होते हैं' एक प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। अन्य पुस्तकें रिसर्च पर आधारित हैं। अगले वर्ष उनकी दो पुस्तकें और प्रकाशित होने वाली हैं। सर की एक पुस्तक 'अहिन्दी भाषी और हिन्दी रंगमंच' के प्रकाशन से पूर्व की तैयारी मैं अपनी आँखों से देख चुका हूँ। किस तरह सर स्वयं अहिन्दी भाषी रंगकर्मियों से मिलते थे। एक नाटककार राजेंद्र शुक्ला से सर के साथ में स्वयं मिल चुका हूँ। सर ने उस पुस्तक में ऐसे भी रंगकर्मियों का उल्लेख किया है जिनसे हिन्दी जगत पूरी तरह से परिचित नहीं है। उनकी रंगकला पर प्रकाश डालने का कार्य सर ने अपनी इस पुस्तक के माध्यम से किया है। सर नंवीनता को विशेष महत्त्व देते हैं। उनकी प्रत्येक पुस्तक में आपको नए-नए शब्द दिखेंगे, विषय में नयापन दिखेगा। वे स्वयं अपनी पुस्तकों की सामग्री को टाइप करते, प्रूफशोधन कर प्रकाशकों का काम आसान कर देते हैं। प्रकाशकों के साथ उनके संबंध हमेशा ही सहज एवं स्वस्थ रहे। जैसे कई प्रकाशकों ले लोग 'कुछ' चाहते हैं। परंतु सर किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखते। महाविद्यालय में कई प्रकाशक सर से मिलने के लिए आते हैं और सर से कहते हैं, 'आपके ग्रंथालय में हमारे प्रकाशन की कुछ पुस्तकें रखी जाएँ, आगे जैसा आप कहेंगे वैसा हो जाएगा। आप लोगों की पुस्तकों के प्रकाशन की जिम्मेदारी हम पर छोड़ दीजिए। सर उनसे कहते हैं- 'आप जो कुछ भी दे सकते हैं वह महाविद्यालय को दें जिससे विद्यार्थियों का भला होगा।' सर से वे कहते हैं कि 'आप जैसे लोग बहुत कम हैं, आपके जैसे सभी हो जाएँ तो यह सनाज सुधर जाएगा, साहित्य को नई दिशा मिल पाएगी।' सर कहते ह 'मनुष्य को स्वयं के प्रति ईमानदार होना चाहिए।' अपने प्रति, स्वयं के कार्य के प्रति वे हमेशा ही ईमानदार रहे है।

डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि / 145

अवस्थी सर छात्रों को हमेशा अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ने हेतु प्रेरित करते रहते हैं, वे गाइड के खिलाफ हैं। उनका मानना है कि गाइड छात्रों के ज्ञान को संकुचित करती है। जहाँ तक मैं जानता है अवस्थी सर और हो, वसंत त्रिपाठी सर दोनों ने गाइड के खिलाफ मुहिम भी छेड़ी थी। उनके अनुसार जो छात्र पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं उनके ज्ञान में कभी कोई कमी नहीं रहती। पुरतके हमेशा ज्ञान-बृद्धि करती हैं जबकि गाइड में ज्ञान का अध्रापन और भ्रम रहता है। गाइड पढ़ने वाला वही अधूरापन अपने जीवन में लिए रहता है जबकि पुस्तर्क पढ़ने वाला संपूर्ण ज्ञान अपने भीतर समाहित करता है। अवस्थी सर और त्रिपाठी सर इन दोनों के साथ मुझे कर्ज करने का अवसर प्राप्त हुआ। वन सभी आलोबना पर आधारित संगोधी की पूर्व तैयारी के दौरान मिले। मैंने देता कि इन दोनों नी कार्यशैली नहीं ना कही एक जैसी ही है। दोनों अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करते और इनकी यही बात मुझे बेहद पसंद है। जिस कार्य को वे हाथ में लेते हैं उसे पूर्णता प्रदान करते हैं। हम आपस में कई विषयों पर चर्चा करते। इन चर्चाओं से मैं बहुत लामान्वित हुआ। इन दोनों की जोड़ी यदि किसी कार्यशाला में, संगोष्ठी में मौजूद हो तो मंच पर जो वक्ता होता है, वह अपने शब्दों को तोल-मोल कर बोलता है, क्योंकि कव इनकी ओर ले प्रश्न दागे जाएंगे कुछ पता नहीं। इन दोनों में से कोई भी यदि किसी प्रश्न को लेकर खड़े हो जाए तो वक्ता की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। विश्वविद्यालय में इन दोनों की जोड़ी प्रसिद्ध है। आज भले ही त्रिपाठी सर इलाहाबाद में स्थाई हो गए, परंतु आज भी दोनों एक दूसरे के संपर्क में हैं। ये दोनों दोस्ती के अट्ट बंधन में बंधे हैं, साथ न होकर भी एक दूसरे के साथ हैं। विभिन्न संस्थाओं द्वारा सर को किसी ना किसी रूप में सदैव आमंत्रित किया जाता है। ऐसे ही किसी पुस्तक की समीक्षा करने हेतु सर अमरावती जा रहे थे। में भी उस समय उनके साथ जा रहा था। तीन घंटे का सफर कैसे वीता, पता ही नहीं चला। पूरे समय हमारी किसी न किसी विषय पर चर्चा चलती रही। रास्ते में एक कार खड़ी दिखाई दी जिसमें एक परिवार अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ बैठा था, शायद उनकी गाड़ी खराब हो गई थी, वे परेशान दिखाई दे रहे थे। आज के दौर में मानवीयता जहाँ समाप्त हो रही है वहीं सर उसे आज भी धारण किए हुए हैं। उन्होंने अपनी गाडी रोकी, उनसे पूछा कि 'क्या हुआ ? कही छोड़ना हो तो बताँ। हमारी किसी एकार की सहायता की आवश्यकता हो तो निःसंकोच बताएँ।' उन्होंने अपनी तरफ से मदद के लिए हाथ बढ़ा दिए। ऐसे ही वे हर किसी की सहायता करते रहते हैं। सुबह 11.00 बजे हम अमरावती पहुँचे, जहाँ सर को समीक्षक के रूप में आमंत्रित किया गया था। सर ने उस पुस्तक की इतनी सुंदर समीक्षा की कि हॉल में सभी लोग पूरी तल्लीनता के साथ उन्हें सुनते नज़र आए। सभी मंत्रमुग्ध हो गए। हिन्दी जगत के कई विद्वानों को

146 / डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सुष्टि एवं दृष्टि में सुना है परंतु सर के समान बकता बहुत कम नजर आते हैं। शायत लोग मेरा उनके इति आदर समय या प्रेम, परंतु में पूरे विश्वास के साथ, पूरे गर्व के साथ यह कह सकता हूँ- विदर्भ के श्रेष्ठ वक्ताओं में सर की गिनती की जाती है। उस पुस्तक को प्रत्येक व्यक्ति उनसे मिलना चाहता था। पूरा समां देखने लायक था। उस समय मैंने प्रत्येक व्यक्ति उनसे मिलना चाहता था। पूरा समां देखने लायक था। उस समय मैंने आजा कि किस तरह सर महाविद्यालय में 15 से 20 दिन तक निरंतर उस पुस्तक का इं पुस्तकों का अध्ययन करना बेहद पसंद है, उससे पुझे ऊर्जा मिलती है, बल महता है। 'उनका एत्तकों के प्रति प्रेम देखते ही बनता है। महाविद्यालय के विभाग में अ उन्होंने कई पुस्तकें रखी हैं। वे छात्रों को विविध विषयों की पुस्तकें अध्ययन करते हेतु प्रेरित करते रहते हैं, पुस्तकें मस्तिष्क का भोजन हैं, जितना अध्ययन करोगे उता ही बुद्धि का विकास होगा।

एक दिन मैं सर के घर गया था। मैंने देखा उनका घर अपने आप में एक छोटा पुस्तकालय है। उनके टेबल पर कई पुस्तकें थीं जो व्यवस्थित रूप से रखी हुई थीं। उनके घर में जितनी अलमारियाँ हैं सभी में केवल पुस्तकें रखी हैं। सर की आय का अधिकांश हिस्सा केवल पुस्तकें खरीदने में ही खर्च होता है। जो पुस्तकें कहां प्राप्त नहीं हो रही होगीं, वे पुस्तकें हमें उनके घर के पुस्तकालय में अवश्य प्राप्त हो जाएँगी। वे पुस्तकों को बड़ा सहेजकर, संभालकर रखते हैं। उनकी पुरानी से पुरानी पुस्तकें भी हमें नई नज़र आएँगी। वे पुस्तक के पृष्ठ कभी मोड़ते नहीं, न ही उसे फैलाकर रखेंगे। अध्ययन करते समय उनके पुस्तक पकड़ने का ढंग देखने और सीखने योग्य है। उनका जधिकाश समय अध्ययन में ही व्यतीत होता है। हिन्दी साहित्य के तो वे ज्ञाता हैं ही साथ ही वे ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र में भी पारंगत हैं। कई लोग अपनी समस्याओं को लेकर सर से मिलने आते हैं। सर सबकी समस्याओं का निदान करते हैं। उनके द्वार से कोई खाली हाथ नहीं लौटता है- न ज्ञान से, न ही विचार से। छात्रों के साथ सर के संबंध बहुत मधुर हैं। गुरु के रूप में वे कभी उनके मित्र हैं, तो कभी पिता। वे हँसते-खेलते उन्हें पढ़ाते हैं। उनके अध्यापन की विशेषता ही यही है कि यदि कोई विषय वे समझा दें, आपको जीवन भर उस विषय को समझने के लिए किसी किताब की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। बच्चों को यदि वे मेरे प्यारे, मेरे लाड़ले, या किसी आदरसूचक शब्दों से संबोधित कर दें, तो बच्चे उनके इस संकेत को समझ जाते हैं, कि हमसे कोई ना कोई गलती हो गई है। वे सर से कहते हैं, 'सर ऐसे मत पुकारो, हमें अच्छा नहीं लगता।' यहाँ तक कि उनकी आँखों से आँसू निकल आते हैं और यदि किसी बच्चे को वे छिपकली, मेंढकी, कोमड़ी, झिंगरू, डमरू ऐसे शब्दों से नवाज़ें तो बच्चे बहुत खुश हो जाते हैं। मैंने जान-बूझ कर 'नवाज़े' शब्द का

डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि / 147 प्रयोग किया है। छात्र स्वयं सर के मुँह से अपने लिए ऐसे शब्दों को सुनना चाहते हैं। वे सर को जानते हैं, उनको समझते हैं। वे जानते हैं कि सर ने हमें ऐसे शब्दों से पुकारा इसका मतलब ही है कि हम सर के करीब हैं। छात्रों के साथ ऐसी कनेक्टिविटी हमें कहीं देखने को नहीं मिलती। वे बच्चों के साथ पूरे बच्चे बन जाते हूं तब आपको डॉ. मिथिलेश अवस्थी कहीं नज़र नहीं आएंगे। डॉ. मिथिलेश अवस्थी वहीं नज़र आएंगे जहाँ हिन्दी साहित्य के प्रकांड पंडित उपस्थित हो। हम दोनों कभी भी अपने नाम के आगे डॉक्टर शब्द लगाना पसंद नहीं करते। एक दिन सर ने कहा, 'अरे यार अपनी नेमप्लेट में नाम के आगे जो डॉक्टर शब्द लगा है उसे हटा दें तो कैसा रहेगा ? हम शोध कार्य, प्रदर्शन के लिए नहीं वरन अपनी ज्ञान-वृद्धि के लिए करते हैं।' सादगी से कही गई उनकी बात हमें बहुत पसंद आई। थोही देर बाद मैं नेमप्लेट लेकर पेंटर के पास पहुँच गया। उनसे कहा 'भैरा इन दोनों नाम के आगे जो डॉक्टर शब्द है उसे निकाल दीजिए।' केंग्र ने मुझे गौर से ऐखा और कहने लगा, 'आप लोग पागल तो नहीं हैं, लोग अपने नाम के आगे ऐसे शब्द लिखवाने आते हैं और आप लोग निकालने आ रहे हैं। एक बार फिर सोच लीजिए। मैंने कहा, 'भाई सोच लिया है आप निकाल दीजिए' और वह बेमन से अपने काम में लग गया। सर को जब यह घटना बताई तब हम मिलकर बहुत हँसे। इमें यदि कोई पुरस्कार प्राप्त हो जाए तो हम सभी इस बात का ढिंढोरा पीरेंगे, अखबारों में प्रकाशित करेंगे, परंतु सर इन सब से जुदा है। उन्हें अब तक दस राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, लेकिन इस बात को बहुत कम लोग जानते हैं। वे दिखावा करना कभी पसंद नहीं करते। मंच पर फोटो खिंचवाने से लेकर अखबार की सुर्खियाँ बनने से उन्हें परहेज है। जो भी व्यक्ति उन्हें करीब से जानते हैं, वे उनके स्वभाव, उनके ज्ञान से परिचित हैं। सर बहुत स्पष्टवादी हैं, गलत बात को बर्दाश्त नहीं कर सकते। यदि कोई गलत बयानबाजी कर रहा हो तो वे तुरंत उसे जवाब दे देंगे। वे यह नहीं सोचेंगे कि आगे वाले शाख्स का समाज में क्या रुतबा है। वे निर्धीक व्यक्ति हैं। जो व्यक्ति गलत कार्य करता तै उसे भय होता तै' उन्हें किसी का भय नहीं। वे तो सिद्धांतवादी हैं। वे कभी कोई गलत कार्य नहीं करते, न ही किसी गलत कार्य के भागीदार बनते हैं। वे औरों को भी गलत कार्य करने से रोकते हैं, सही मार्ग दिखाते हैं। सदैव सद्मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति हमेशा औरों के लिए प्रेरक होता है। सर हम सभी के प्रेरणाम्रोत है।

एक दिन सर से मैंने कहा- 'सर! मैं भी आप जैसा वक्ता बनना चाहता हूँ।' सर ने कहा, 'मुझ जैसा नहीं, मुझसे भी अच्छा बनिए। मैंने उनसे पूछा, 'सर आप इतने बेहतरीन बक्ता कैसे बन पाए?' तब उन्होंने कहा कि, 'बेहतरीन का तो पता

Scanned with CamScanner

Produce -----

I TELEVISION DEPENDENT OF THE STATE

इसी, बास जिम्मय को ज्याय देने का प्रयास करता है।' से अपने अनुभव मनती लगे। आर्यभक्त दौर में में सेमिनार और फार्यशालाओं में जिद्दनजनी के कमान्द्रों को स्टान े जुनता था। भाषण देते समय उनकी डोली, उनका विषय डान, किना ताह वे जिला े रखते हैं यहां सम समझने का प्रयास करता हता। कुछ प्रत्री तथ में केवल करेंग ो भूनता रता। चिषय से संघाधत पुस्तके पहता छा। मैंने जगरे जिन्द एक जीहत दकाईर भी रतरोदा। अपने दिए यह भाषण को रिफाई कर उन्हें स्वत्न से मुनता। जिला इन्द् को प्रयोग बार-बार हो रहा उसे समझने का प्रयास करता। इस तरह विरहर अभ्यास करता रहा। आज भी मैं अपने आप में सुधार करने का निरंतर प्रयास करता रहता है।' सर की यह बात मुझे हमेशा सिखाती है, प्रेरित करती है। सभी लोग हमेशा ही उनसे उनके उत्तम स्वारक्य के संदर्भ में 🕬 रहते है अयोंक ये अपनी यज्ञ से लगभग दस वर्ष छोटे दिखते हैं। उनके स्वान्य्य का राज ह - अनुशासना अनुशासन खान-पान में, राज-लहन में, योग-जम्मास में, जन्मी संपूर्ण जीवनचर्या में ही अनुशासन है। उनके जीवन में तीन बार ऐसे अवसर आए जब डॉक्टर ने उन्हें ऑपरेशन की सलाह दी थी परंतु उनके अनुशासनात्मक बोबन ने, उनके योगाभ्यास ने उन्हें बिना ऑपरेशन के ही ठीक कर दिया। स्ययं डॉक्स भी आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने कहा, 'अवस्थी थी आपने असम्ब को भी संपन्न कर दिखाया।" वे नियमित रूप से प्रतिदिन कई किलोमीटर तक

पद्यात्रा करते हैं, तत्परचात योगाभ्यास करते हैं। उनकी यही जीवनचर्या उनके जीवन का अभिन्न अंग है।

ऐसे ही एक और दिन सर महाविद्यालय में योग के माध्यम से स्वास-साधना सिखा रहे थे। उस समय सर ने अपने पेट पर हम लोगों को खड़े रहने के लिए कहा हम सभी हर रहे थे कि सर को चोट न लग जाए, पर सर के चार-वार कहने स पहले येरकलवार सर उनके पेट पर खड़े हुए फिर पार्टिल सर। इसके बाद जब सर ने वे लोगों को पेट पर खड़े होने के लिए कहा तब तो हम और घबरा गए पर सर की बात पर भरोसा कर दो लोग सर के पेट पर खड़े हुए। हमने देखा सर सामान्य ढंग से से हे हैं उन पर कोई असर नहीं हो रहा था। ये थी उनकी योग-साधना। इसके बाद सर ने मुझे भी अपने पेट पर खड़े रहने के लिए कहा। पहले तो मैं सामान्य रूप से खड़ा खा, एकाएक मैं मस्ती के मूड में आ गया। मैं उनके पेट पर नाचने लगा। मेरी इस हाकत पर सभी लोग तो इसने ही लगे पर सबसे अधिक कोई खिल-खिलाकर हैसा, बो अवस्थी सर थे। उनकी बह हैंसी उनके हास्य की नुक्तावस्था थी। वे योग के माध्यन से नाक से पानी खींचकर मुँह से बाहर निकालना, धागा निकालने जैसे कई काउन योगाभ्यास करके दिखाते हैं। पता नहीं क्यों सर और मेरी ट्यूनिंग बहुत ही

डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि / 149

बढ़िया है। हम एक-दूसरे की कंपनी बहुत एन्जॉय करते हैं। हमारी जोड़ी को सभी सराहते हैं। महाविद्यालय हो या महाविद्यालय से बाहर, प्रत्येक व्यक्ति जो भी हमसे मिलता है, हमारी ट्यूनिंग की तारीफ करता ही है।

महाविद्यालय में सर के सुझावों पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है। उनके सुझाव बहुत ही यूनिक रहते हैं। मीटिंग में सर के द्वारा जो भी सलाह दी जाती है, उसे तरंत अमल में लाया जाता है। सर बहुत ही स्पष्टवादी के किसी भी विषय पर खुलक अपनी बात रखते हैं। उनके बात रखने का अंदर्ज ही निराला है। वब्दों के वे जादूगर हैं। उनके शब्दों में ही वह ताकत है कि सामने वाला नतमस्तक हो जाता है। यदि वे क्रोध में आ जाएँ तो उनके प्रकोप से कोई बच नहीं सकता, परंतु क्रोध में भी वे किसी भी तरह के गलत शब्दों का प्रयोग नहीं करते। यदि किसी के संबंध में उनके मन में खटास आ जाए, कोई व्यक्ति यदि उनकी नज़र से गिर जाए, वह फिर कभी उनकी नज़र में उठ नहीं सकता। वो जब भी सामने आएगा, जिल्ही बार आएगा, उनके प्रकोप के बच नहीं पाण्ण

महाविद्यालय का निरंतर विकास हो, इस दृष्टि से वे लगातार प्रयासरत रहते हैं। पिछले वर्ष हमारे महाविद्यालय में नॅक समिति आई थी। उसी समय मेरी तबियत खराब हो गई। उसी मुश्किल घड़ी में सारा विभागीय काम अकेले सर के कंधों पर आ गया। मैं अस्पताल में चिंतित था कि सर अकेले सारे काम कर रहे हैं। मेरी इस चिंता से सर वाकिफ थे। सर उस समय महाविद्यालय से जुड़ी हर एक जात शेयर लाते थे। 'मैत्री' पत्रिका का संपादन कार्य मेरी ओर ा और आखिरी दौर में ही मेरी तबियत बिगड़ गई थी। सर ने कहा, 'मेरे रहते तुम कोई चिंता मत करो। अपनी ओर ध्यान दो।' सर ने 'मैत्री' पत्रिका का संपादन दायित्त्व स्वीकारा और उसे पूर्णता प्रदान की। ऐसे कई मौकों पर जब भी विभाग को मेरी आवश्यकता रही मैं किसी ना किसी अत्यावश्यक कार्य के कारण अनुपस्थित रहा। परिस्थितियाँ ही ऐसी रहतीं कि सर भी कुछ कह नहीं पाते थे। कभी मेरे बड़े भाई की असमय मृत्यु, कभी मैं अस्पताल में, कभी आवश्यक व्यक्तिगत कार्य, ऐसी स्थिति में सर ने मेरी परिस्थिति को समझा। सारा कार्य उन्होंने और हमारे अंशकालीन प्राध्यापक प्रा. प्रीति गौतन, प्रा. रोमा दुर्गे, प्रा. संतोष कौर वालिया, हाल में ही आई प्रा. जागृति सिंह जी ने संभाला। तब से सर मुझे चिढ़ाते रहते हैं कि, 'जब भी विभाग में कोई काम आ जाए नागदेवे जी गायब।' और मैं भी मजाकिया लहजे में कहता- 'वैसे तो सारा काम मैं ही करता हैं, सबूत हैं मेरे कंधे, देखो कितने दर्द दे रहे हैं। कितना काम मुझसे कराते हैं। 'सर कभी किसी कार्य से जाते हैं तो में यही कहता हूँ' सारा काम मेरे ती जिम्मे है, पूर विभाग मेरे ही कंघों पर।' और हम सब हँसने लगते। हमारे विभाग के हम सब साथी

150 / डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि एक परिवार की तरह ही रहते हैं। मेरे लिए मेरे विभाग के सभी साथी प्रा. प्रीति ्तम, प्रा. रोमा दुगें, प्रा. संतोष कौर वालिया और प्रा. जागृति सिंह सभी मेरे लिए मेरी बहनें ही हा सभी साथी एक परिवार की तरह मिल-जुलकर रहते हैं और इस परिवार के मुखिया हैं अवस्थी सरं। जिन्होंने बड़े प्यार से हम सबको एक माला में पिरोया है। हमारे विभाग में जो भी व्यक्ति आता है वह हमारे इस परिवार की तारीफ करता ही है। इस विभाग की इतनी तारीफ होती है कि लगता है विभाग को औरों की दृष्टि से बचाने हेतु एक काला टीका लगा दिया जाए। कहते हैं, नींव मज़बूत रही तो भवन अपने आप मजबूत हो जाता है। हमारी नींव हैं हमारे आदर्श अवस्थी सर, जो हमारी शक्ति है। महाविद्यालय में छात्र विशेष रूप से सर की कक्षा में अधिक संख्या में उपस्थित रहते हैं। बच्चे सर की कक्षा में जाने के लिए आतुर रहते हैं। कक्षा में सर के पहुँचने से पहले ही वे पहुँचते हैं। सब जानते हैं कि सर समय के कितने पाबंद है। सर को कक्षा की ओर जाते हुए देख सारे बच्चे तेजी से भागते हुए कक्षा में पहुँचते हैं। जो बच्चा देरी से पहुँचा समझो वह सर का ज्ञान पाने से वंचित रह गया। साथ ही सर का आशीर्वाद रूपों कोप का प्रसाद उसको प्राप्त हुआ। वे बड़ी रोचकता के साथ अपन चुटीले अदाज में छात्रों को पढ़ाते हैं। यदि विषय गंभीर हो तो बड़ी गहराई से, तल्लीनता से पढ़ाते हैं। विषय की विस्तार से जानकारी देते हैं। उनकी गंभीरता देखने योग्य होती है। वे एक अनुशासनप्रिय व्यक्ति हैं, परंतु जब हम शैक्षणिक यात्रा पर जाते हैं, तब सर का बचपना भी देखने लायक रहता है। वे बच्चों के संग पूरे बच्चे बन जाते हैं। उनके साथ मस्तो करना, बस में बच्चों को नचवाना, जो नहीं नाच रहे होते उन पर बहुत ही ठंडा पानी डालना, पेड़ पर चढ़ना, बच्चों के साथ रेस लगाना, भोजन करते समय बच्चों जैसी हरकतें, उनका यह चुटीला अंदाज बच्चों को बहुत भाता है। शैक्षणिक यात्रा के माध्यम से विषय को इस तरह संमझाते हैं कि वह विषय हमेशा के लिए विद्यार्थियों के मस्तिष्क में अंकित हो जाता है। बच्चे सर का बहुत' आदर करते हैं, उन्हें बहुत चाहते हैं। यहाँ तक कि पूर्व छात्र उनसे मिलने के लिए बेहद आत्मीयता के साथ पहुँचते हैं। छात्रों का प्रेम तो सभी शिक्षकों के साथ रहता ही है पर सर से कुछ अधिक ही है। शायद सर का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि जो भी उनस मिला वह उन्हों का हो गया। महाविद्यालय में सर निरंतर नित नए प्रयोग करते रहते हैं। विभाग में ही उन्होंने 'शोध सत्संग', 'स्वानुशासित समय बद्ध अध्ययन प्रक्रिया', 'सृजन-संवाद' जैसे उपक्रमों को आरंभ किया। 'शोध सत्संग' के माध्यम से उन्होंने शोध को नई दिशा दी। शोधकर्ताओं के शोध पर चर्चा की जाती है। उनके शोध का आस्वाद

डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि / 151

लिया जाता है। 'स्वानुशासित समय बद्ध अध्ययन प्रक्रिया' के माध्यम से छात्र अपनी प्रगति कैसे की जाए, प्रतिदिन की दिनचर्या का आकलन कर अपना अध्ययन-समय कैसे बढ़ाए आदि बातें वह स्वयं तय करने लगता है। 'सृजन-संवाद' के माध्यम से सृजनकर्ता अपनी कलम की धार को तेज बनाता है। स्व-रचित रचनाओं का पठन किया जाता है। उस पर चर्चा की जाती है। जिससे सृजनकर्ता के सजनकर्ष में सुधार होत है।

रिश्तों की अहमियत सर जानते हैं। सर के जिनसे भी रिश्ते बने हैं उन्हें वे पूरी शिद्दत से निभाते हैं। महाविद्यालय में भी सर के कुछ लोगों से रिश्ते बन गए। महाविद्यालय में सर की बड़ी बहन के रूप में समाजशास्त्र विभाग की पूर्व प्रमुख प्रा. शीला चहांदे मैडम रहीं जो अब सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। सर के अब भी उनसे घरेलू रित्ते हैं। छोटी बहन के रूप में अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख प्रज्ञा बागड़े मैडम हैं। बड़ी बहन के रूप में चहांदे मैडम को डाँटने का अधिकार भी रहा है। मैंने प्वयं सर को डाँट खाते हुए देखा है। पर उसमें भी एक निःस्वार्थ प्रेय, एक दूसरे के इति अधिकार का भाव दिखाई देता है। छोटी बहन बागड़े मैडम और सर के बीच एक निश्छल प्रेम भाव मैंने बेहद करीब से महसूस किया है। बेटी के रूप में सर का बेहद आदर करने वाली अंग्रेजी विभाग की प्रा. डॉ. मेघा रामटेके हैं। सर अपनी बेटी का बहुत ध्यान रखते हैं। भाई के रूप में अंग्रेजी विभाग के प्रा. सुदेश भोवते का वे बहुत आदर करते हैं। उनके घर की आलू की सब्जी और रोटी सर वो बहुत स्वादिष्ट लगती है। जब भी वे आलू की सब्जी और रोटी लते हैं, सर वो टिफिन भोवते जी से छीन लेते हैं और उन्हीं को खाने नहीं देते। उनके लिए नाम मात्र का एक निवाला रखते हैं। यह दृश्य देखने लायक होता है, हम सभी हँसने लगते हैं। वे आपस में कई गंभीर विषयों पर भी चर्चा करते रहते हैं। लघु भ्राता के रूप में इतिहास विभाग के प्रा. डॉ. चंद्रशेखर पाटिल हैं। सर को उनकी सादगी बेहद प्रिय है। मेरे और सर के रिश्ते तो इस लेख में कई जगह टूष्टिगोचर हुए हैं आगे भी होंगे। मेरी पत्नी शुभांगी, जिन्हें वे अपनी बहू कहते हैं, एझे सर का डर दिखाकर अपने काम साध लेती हैं। मेरे बच्चे जब कोई अच्छा कार्य करें तो सर बड़े अपनत्व के साथ कहते हैं कि अपने बड़े पापा पर (अर्थात उन पर) गए हैं और यदि मेरे बच्चे कोई गलती कर देते हैं तो कहते हैं-तुम्हारी छाप है। मेरी माँ मुझसे हमेशा कहती हैं, 'तुम सर के सानिध्य में हो इसलिए मैं निश्चित हूँ।' उनके सानिध्य में रहकर प्रत्येक व्यक्ति निश्चित रहता है। महाविद्यालय के प्रत्येक व्यक्ति का उनसे कुछ न कुछ रिश्ता अवश्य है। सर केवल रिश्तों का मान ही नहीं रखते, वरन उसे शिदत मैंने हमेशा ही सर को औरों की मदद करते हुए देखा है। मनुष्य चाहे कैसी से निभाते भी हैं।

Scanned with CamScanner

國

152 / डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि

भी परेशानी में हो, किसी भी तरह के संकट में हो, चाहे निराशावाद से ग्रसित हो उनसे मिलने पर सारे संकट, परेशानी काफूर हो जाती है। आशाबाद का जन्म होता ु जोर मनुष्य संफारात्मक कदम उठाने लगता है। रेकट के समय के वे संकट-जोबक ही बन कर आते हैं। ऐसे हा कई संकटों का लामना मुझे भी करना पढ़ा और उन संकटों से उन्होंने ही मुझे बाहर निकाला। संकट चाहे व्यक्तिगत हो, चाह साहित्यिक, चाहे और किसी प्रकार का- वे हर क्षण मेरे साथ ही खड़े रहे, एक भाई की तरह, एक दोस्त की तरह। जब वे किसी अनजान व्यक्ति की मदद कर सकते हूं, तो अपने करीबियों के लिए तो वे क्या नहीं कर सकते। उनके लिए तो वे अपनी जान छिड़कते हैं। अपने करीबियों की तारीफ़ तो वे पीठ पीछे भी करते रहते है। उनके कुछ करोबी मित्रों से में कभी भी पूरी तरह से नहीं मिला। किर भी मैं उनके बार में बहुत कुछ जानता हूँ। जैसे श्री संजय तिवारी जी, श्री मनोज सिंह जी, श्री संतोष त्रिपाठी जी आदि। संजय जी से हमारी पहली मुलाकात धरमपेठ साइंस कॉलेज में हुई। ऐसा लगा ही नहीं कि हमारी उनसे पहली मुलाकात थी। हम दोनों को जोड़ने बाली कड़ी हमारे अवस्थी सर थे। भले ही वे वहाँ मौजूद नहीं थे लेकिन सर के मुख से इतनी बार तारीफ़ सुन चुके थे कि संजय जी हमारे लिए अनजान होने के बावजूद अनजान नहीं थे। हम दोनों निरंतर सर के संदर्भ में बातें कर रहे थे। सर के प्रति आदर उनकी आँखों में, उनके संपूर्ण व्यक्तित्त्व में दिखाई दे रहा था। देला ही आदर मैं उन सबमें भी देखता हूँ जो उनके करीब होते हैं। सर को जो करीब से जानता है, समझता है, वो दिल से सर का आदर ही नहीं करता, उनके जैसा बनने का प्रयास भी करता है। कुछ भी गलत कार्य करने से पहले वो मन ही मन सर की आँखें देख लेता है और गलत कार्य करने से अपने आपको रोक लेता है। यह दूश्य अपने आप में वी. शांताराम की पुरानी फ़िल्म 'दो आँखें बारह हाथ' जैसा ही है। जहाँ वे 06 खुखार बिया नायक की आंखों की कल्पना कर गलत कार्य करने से बच जाते है। यह आँखों का डर नहीं वरन उनके प्रति आदर है। यह आदर उनके संपूर्ण व्यक्तित्त्व के प्रति है। मैं उन्हें हमेशा कहता हूँ, 'सर आपने सभी का जो सात्विक प्रेम और आदर पाया है यही आपके जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है।' सर के व्यक्तित्त्व की संपूर्णता में उनके माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कार गहराई से दिखाई देते हैं। माँ तो माँ है, उनसे मिलो तो पूरी तबियत खुश हो जाती है। उनके विचार, उनकी वातें सुनने योग्य हैं। वे कहती हैं, 'जो पढ़ाता है वह ही ब्राह्मण है। जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं होता, ब्राह्मण होने के लिए सद्कर्म एवं सद्विचार जरूरी है।' उनकी बातें मनुष्यत्त्व को धारण किए हुए हैं। यहां मनुष्यता सर में भी है। कहते हैं माता-पिता के गुण ही बच्चों में आते हैं। सर को देखें तो यह कथन सही नज़र आता है। हमारी भाभी भी सर के जैसी ही हैं। उनके जीवन में भी अनुशासन

डॉ. मिथिलेश अवस्थी : सृष्टि एवं दृष्टि / 153

का विशेष महत्त्व है। ऐसा लगता है कि दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हैं। पर जब हम भाभी-देवर एक साथ मिल जाते हैं तो सर को छेड़ने लगते हैं। हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं, ऐसा लगने लगता है। सर का व्यक्तित्त्व ही कुछ ऐसा है कि जो भी व्यक्ति उनसे मिला वो उनके व्यक्तित्त्व से प्रभावित हुए जिना नहीं रह सकता। वे एक ऐगे व्यक्ति हैं जो जिसी भी परिस्थिति में अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करते। सिद्धांतों पर चलने वाले, मूल्यों को आत्मसात करने वाले, जिनकी शाखिसयत के आगे प्रत्येक व्यक्ति नतमस्तक हो जाता है। वे एक श्रेष्ठ पत्रकार, प्रख्यात कवि, साहित्यकार, आलोचक, समीक्षक, प्रखर वक्ता, अनुसंधाता, बहुआयामी व्यक्तित्त्व के धनी, ज्ञान की साक्षात मूर्ति हैं। उनमें किंचित मात्र भी अहंकार नहीं है। जीवन के कठिन समय से वे भी गुजरे हैं परंत उनके चेहरे पर उसके भाव कभी नज़र नहीं आते। उनका मानना है कठिन परिन्धितियाँ मनुष्य को सीख देती हैं। हमारे अनुभव ज्ञान को प्रगादता देते हैं। उनकी कही गई हर बात मेरे मस्तिष्क में सदैव गूँजती रहती है। मैं यह नहीं जानता कि मैं उनके जैसा बन पाउँगा पर मैं यह जरूर जानता हूँ कि सर मुझे एक दिन वैसा बना ही देंगे क्योंकि सर अपने छात्र को अधूरा नहीं छोड़ते और मैं तो तन-मन से उनका छोटा भाई हूँ, साथी हूँ, शिष्य हूँ। सर अपने कर्तव्य का पालन अवश्य करेंगे। उनके जैसा गुरु, भाई और साथी पाना मेरा सौभाग्य है। उनके व्यक्तित्त्व की महानता हिमालय के उच्च शिखर से भी ऊँची है। उनकी शीतल छाया चाँद की छाया से भी अधिक शीतल है। उनके स्वभाव की शुभ्रता पर्वत शिखर में आच्छादित बर्फ से भी अधिक शुभ्र है। जो भी मनुष्य उनकी संगति से लाभान्वित हुआ वह उन्हीं के रंग में रंग गया। मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनके साथ रहने का मौका मिला, उनसे सीखने को मिला। उनके व्यक्तित्त्व के नए-नए आयामों को करीब से जानने को मिला। उसे लिपिबद्ध करने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं अपना लेख वही श्रद्धा के साथ सर को समर्पित करता है।

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू. एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कामठी मार्ग, नागपुर 440-026 मो.: 9921286071 ई-मेल: sumedh2911@gmail.com

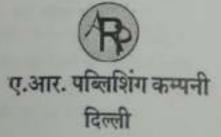
Scanned with CamScanner

1620

भारतीय साहित्य चिन्तन और चुनौतियाँ

सम्पादक

मनोज पाण्डेय





ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी 1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 मो. : + 91 9968084132. + 91 9910947941 arpublishingco11@gmail.com

BHARTIYA SAHITYA : CHINTAN AUR CHUNAUTIYAN Edited by Manoj Pandey

> ISBN : 978-93-88130-16-5 Criticism

> > ि सम्पादक प्रथम संस्करण 2019

> > > मूल्य : ₹ 625

ले-आउट : शेष प्रकाश शुकल मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉय्येक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

प्रखर साहित्य-चिन्तक पद्मश्री प्रो. रमेशचन्द्र शाह को सादर!

अनुक्रम

भारतीय साहित्य : चिन्तन और चुनौतियाँ —रमेशचन्द्र शाह	17
रवीन्द्रनाथ टैगोर : नवजागरण, राष्ट्रवाद और भारतीय भाषाएँ <i>—इन्द्रनाथ वौधुरी</i>	25
भारतीय साहित्य में सन्निहित राष्ट्रीय-सांस्कृतिक इतिहास —सूर्यप्रसाद दीक्षित	41
भारतीय साहित्य की चिन्ताधारा सूरज पालीवाल	47
काल-चेतना और साहित्य सृष्टि <i>—नन्दकिशोर आचार्य</i>	55
भारतीय साहित्य की चुनौतियाँ और चिन्तन -रमेश दवे	65
भारतीय साहित्य में राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा का महत्व —जितेन्द्र श्रीवास्तव	71
भारतीय साहित्य : अतीत और वर्तमान —शिवप्रसाद शुक्ल	83
आदिवासी साहित्य : भारतीय साहित्य के लिए एक चुनौती <i>—डॉ. वीणा दाढे</i>	89
उजली हँसी के छोर की तलाश : उजली हँसी के छोर में <i>—आलोक पाण्डेय</i>	98

Rescarding undarits of strend dicters	106	anothin entrope of fading sensity a musice of againing - aft when whenever, all spine from analy.	Ear
	the second	-डॉ. फूम्म, डॉ. अभिषेक परेल	
जातारवादी द्वावया क चपुल म गरभव भारतान गाव जन्म के कीवतर		मराठी रंगभूमि पर दिशांसर करनेवाली दो कालतयी नाट्य कृतियी :	202
	1.000	'नटसप्राट' और 'पानीराम कोतवाल'	
मारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य	120	-डॉ. सोनू जेसवानी	
-डॉ. अशोक सुमार		भारतीय साहित्य की चुनीतियों	209
मारतीय साहित्य और जीवन-मूल्य	125	-डॉ. राजेश ठासुर	
-डॉ. जोगेन्द्र सिंह विसेन	-	हिन्दी साहित्य की कालपदी रचनाएँ	213
भारतीय साहित्य के गौरव यन्व 'मुक्रमाटी' में सम-सामयिक पिन्तन	130	- इ.स. मीला सिंह	
-डॉ. यन्द्रकुमार जैन		राष्ट्रीयक्षा की अवधारणा और राष्ट्रकोय	21.6
सारकीय साहित्यिक चिन्तन के विविध आयाम	139	-डॉ. आमन्दसिंह पटेल	
्य करणा जी. शीवास्तव		भारतीय साहित्य को विशेषतारी	225
an 2 2 . And Provent of the Underlined	145	- वैजीनाथ	
द्वासाखया कावता म लाकनवत्तन - २२० ३ - २४ - ४४		anshu ankso alt dige-and	182
<u>—हों, आनित कुमार राय</u>		- मी मो- तत्वा जागत	
छित्तमे काळा में भारतीयता और राष्ट्रीयता	100	annha mhan sh mus fàdhamh	252
्या यन्द्रजेखर सिंह		HIGHL THEOR AN AND FRAME	
4	157	and a standard the standard with the	- A -
भारतीय साहित्य की यिन्तन-द्वीष्ट		भारतीयता का समाजरात्व्य	242
-द्रमेशनदिनी	101	-फरहत पर्यावन	
ज्यात्रीय साहित्य की अवधारणा और युध्दि	101	भारतीयाल के सन्दर्भ में : हिन्दी और मठती के मुंगर कता की	144
मार्गान मानि अयन		मुह्तनाम्प्रक अध्ययन	
The second secon	168	-हर, मेग्रुकिती इत्यारे	
भारतीय साहित्य और आवनन्म्रेण		atterdu al shy-utten stimulae : antene at mean	955
-डॉ. दिलाम खुमार अवरवर	174	-डर. मसीट मेख	
संगम साहित्य का वैशिषट्य		भारतीय भाषपा एवं साहित्य के जावक : गण	195
- पीच्य क्रमार	181	-20 2025 4224	
	101	the other a	260
हिन्दी भाषा एवं साहत्य : अव्ययन मा	-	भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्यान	
-ही. मीनासी जासी	185	-gistern faurers freet.	
साहित्य में राष्ट्रीय चिन्तान			
-at gua de de serve			

साहित्य में राष्ट्रीय चिन्तन

डॉ. सुमेध पी. नागदेवे

भाषा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक एवं सांस्कृतिक घरोहर की संवाहक होती है। किसी भी राष्ट्र की एकता-अखंडता को बनाने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण कड़ी है। भाषा और उसके साहित्य के माध्यम से ही प्रत्येक राष्ट्र का विकास हो पाया है। कहते हैं, जिस देश की भाषा का साहित्य समृद्घ होता है, वह देश, उसका समाज विकसित होता है। जीवन के तमाम स्तर पर विशाल लोक समुदाय को किसी ना किसी भाषा का उपयोग करना ही पड़ता है। साहित्य ही मनुष्य में नैतिकता तथा जीवन-मूल्य भरता है। वह साहित्य ही है, जो मनुष्यों में भारतीयता और राष्ट्रीयता के मुल्यों को पिरोता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो देश में आज भारतीयता और राष्ट्रीयता का संकुचित रूप दिखाई दे रहा है। मनुष्य में मनुष्यता का हास होता जा रहा है। उसमें पशुता नज़र आती जा रही है। देश में राष्ट्रीयता की भावना कम होती जा रही है। जो भारतीय अन्य देश में बस गया है, वह पुनः लौट कर आने का प्रयास नहीं करता। वह वहीं बस जाता है। ऐसे बहुत कम लोग हैं जो देश के लिए कुछ करना चाहते हैं। आज राष्ट्र धर्म को महत्व ना देकर केवल अपने जाति, धर्म, वर्ग, पंघ को महत्त्व देने लगते हैं, तब उस देश की राष्ट्रीयता, उसकी एकता, अखंडता को ठेस पहुँचती है। इन विपरीत स्थितियों में साहित्यकारों की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। हमारा इतिहास हमें बताता है कि हमारी संकुचित राष्ट्रीयता की भावना के कारण ही यह देश कई वर्षों तक विदेशी शासकों का गुलाम रहा था। किस तरह हम विभिन्न आधारों में बंटे रहे, जिसका लाभ कई विदेशी ताकतों ने उठाया।

आदिकाल के साहित्य पर यदि हम गौर करें तो हमें नज़र आएगा कि उस समय के साहित्यकारों ने राष्ट्रीयता की भावना को उठाया तो सही, लेकिन उनकी राष्ट्रीयता

भारतीय साहित्य : चिन्तन और चुनौतियाँ / 185

केवल उनकी रियासत, और रियासतदार की प्रशंसा तक ही सीमित थी। उनकी किवल उनकी रियासत, और रियासतदार की प्रशंसा तक ही सीमित थी। उनकी रियासत ही उनके लिए उनका देश थी। वे अपने पड़ोसी को अपना शत्रु समझते वे। जिसका लाभ मुस्लिम शासकों ने उठाया और अधिकतर भारतीय शासकों ने उनकी अधीनता स्वीकार की। मुस्लिम शासक यहाँ आए और यही बस गये। अब उनका भी देश यही हो गया।

उनको भी देश यहा हो गया । भक्तिकाल के साहित्य में भक्तििचारा बही और अध्यात्म के मार्ग से भारतीय जीवन-मूल्यों का संरक्षण किया गया। इस काल में साहित्य के माध्यम से दो विभिन्न लंस्कृतियों का मेल किया गया। अपने साहित्य के माध्यम से तुलसीदासजी ने कहा संस्कृतियों का मेल किया गया। अपने साहित्य के माध्यम से तुलसीदासजी ने कहा या- ''कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहं हित होई।''' कीति, कविता और सम्पत्ति वही उत्तम है जो लोकहित में हो। जिस तरह गंगा नदी कहाँ-जहाँ से बहती है, वहाँ-वहाँ सबका कल्याण करती जाती है। अतः साहित्य ऐसा होना चाहिए जो मनुश्य में जीवन-मूल्यों को पिरोकर राष्ट्र को मज़बूत करने की दिपा में काम करता हो। इस काल में नैतिक शिक्षा का विशेष महत्व था। फिर भी यदि राष्ट्रीयता की बात करें तो इस काल में वह दो संस्कृति के मेल में, भक्ति की घारा में कहीं खो गयी। राष्ट्रीयता हिन्दू-मुस्लिम शासकों के दो पाटों में पिस कर रह गयी। भारतीयता का भाव इस दौर में भी नहीं था, केवल अपनी सत्ता, अपनी रियासत तक ही सीमित था।

रीतिकाल में अंग्रेजों, फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों ने इस देश पर अपनी सत्ता स्थापित की । वे आए तो इस देश में व्यापार करने परन्तु यहाँ के सत्ताधीश बन गये, जिसका मूल कारण था हमारे देश के लोग जाति, धर्म, वर्ग, पंथ में बंटे हुए थे। हिन्दू-मुस्लिम शासकों के रूप में बंटे थे । उनके लिए उनकी रियासत ही उनका देश । उनकी इसी जनेकता का लाभ उठाकर, 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनाकर इन विदेशी शासकों ने इस देश को गुलाम बनाया । इन गुलाम लोगों को भारतीय होने का अहसास दिलाया । उनके स्वाभिमान, आत्मसम्मान को झकझोरा । रियासतों में बंटे इस देश को भारत के रूप में पुनः एक सूत्र में बाँधकर हम सब को भारतीय होने का गौरव प्रदान किया । जब हमें यह एहसास हुआ कि हम सभी भारतीय होने का गौरव प्रदान किया । जब हमें यह एहसास हुआ कि हम सभी भारतीय होने लक्ष्मीबाई, नानासाहेब पेशवा, अंग्रेजों के अधीन भारतीय सिपाहियों की विद्रोही सेना के द्वारा संयुक्त रूप से लड़ी गयी । इस लड़ाई में भले ही भारतीयों की हार हुई परन्तु इस लड़ाई ने हिन्दू हो या मुस्लिम या किसी अन्य वर्ग, पंथ से, सभी के

186 / भारतीय साहित्य : चिन्तन और चुनौतियाँ

भारतीय होने का एहसास दिलाया। उन्हें यह महसूस कराया कि हम अलग-अलग तिवासती के नहीं इस भारत भूमि के नागरिक हैं।

अंग्रेजों के भारत आने के उपरांत उन्हें यह देश चलाने के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता होने लगी, फलस्वरूप उन्होंने शिक्षा का मार्ग सभी के लिए खोल दिया। जो शिक्षा भारत में कभी केवल एक वर्ग के लिए सीमित थी। जब यह शिक्षित होग उच्च शिक्षा हेतु विदेश गये, तब उन्हें यह एहसास हुआ कि हम कितने पिछड़े होए हैं। जब वे भारत लौटे, तो उन्होंने कई सुधारवादी आंदोलन चलाए। कई बुराइयों, हुए हैं। जब वे भारत लौटे, तो उन्होंने कई सुधारवादी आंदोलन चलाए। कई बुराइयों, कुरीतियों का विरोध किया। इन सुधारवादी आंदोलन में राजाराम मोहन रॉय, न्यायमूर्ति रानडे, महात्मा ज्योतिबा फुले आदि प्रमुख थे।

28 दिसंबर 1885 मुंबई में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। पहले तो इसका कार्य सामाजिक स्वरूप का था, परन्तु धीरे-धीरे इसने अपने आप को राजनैतिक स्वरूप में ढाल लिया। इस दौर में इसे राजनैतिक गति प्रदान हुई। लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, बालकृष्ण गोखले, सुभाशचंद्र बोस आदि नेताओं के मार्गदर्शन में आंदोलन और अधिक तेज हुए।

जनता में आज़ादी के बीज बोने में भारतीय पत्रकारिता का विषेश महत्व रहा है। बंगाल में प्रकाशित 'बंगाल गजट' अर्थात 'हिक्की गज़ट' अखबार के सम्पादक त्रेम ऑगस्ट हिक्की जो स्वयं ब्रिटिश नागरिक थे। पत्रकारिता को ही अपना धर्म एवं उनका कर्म समझकर उन्होंने अंग्रेजों की नीतियों के ख़िलाफ अपने अखबार के माध्यम से आवाज़ बुलंद की। अपने अखबार के माध्यम से पत्र्कारिता किसे कहते माध्यम से आवाज़ बुलंद की। अपने अखबार के माध्यम से पत्र्कारिता किसे कहते हैं, वह समझाया। भले ही उन पर कई प्रतिबन्ध लगाए गये, परन्तु उन्होंने अपनी आवाज़ को मुखर ही रखा। उनकी इसी निर्भयता ने अन्य पत्रकारों को नयी दिशा दी। जो आवाज़ 1857 ई. की लड़ाई में कहीं दब गयी थी, जो स्वाधीनता का स्वर सुप्त रूप में रहने वाले भारतीयों के मन से कहीं खो गया था। उस स्वर को इस अखबार ने हवा दी। भारतीय पत्रकारों के डर को समाप्त किया। उनके स्वाभिमान, आत्मसम्मान को जगाया। उन्होंने अपने लेख, कहानी, निबन्ध, काव्य, प्रहसनों के

हिन्दी साहित्य में भारतेंदु मंडली ने अपनी पत्रकारिता एवं अपने साहित्य के बिषय-बस्तु के अंतर्गत राष्ट्रीयता और सामाजिक चेतना पर विशेष बल दिया। बालमुकुंद गुष्त ने 'शिवशंभु के चिट्ठे' प्रसिद्ध व्यंग्य लेख के माध्यम से ब्रिटिश शासकों पर तीखा प्रहार किया। लोगों के भीतर आज़ादी के बीज बोने हेतु हमारे

भारतीय साहित्य : चिन्तन और चुनौतियाँ / 187

स्वतंत्रता सेनानी प्रयास कर रहे थे, तो दूसरी ओर अधिकतर भारतीय साहित्यकार त्वतंत्रता सेनानी प्रयास कर रहे थ, ता क्राण अपनी लेखनी से जनता में जनजागरण कर रहे थे। अधिकांश हिन्दी साहित्यकातं अपनी लेखनी से जनता में जनजागरण कर हैं। जैसे जयशंकर प्रसाद राजि अपनी लेखनी से जनता म जनजागरण पत्र हैं। जैसे जयशंकर प्रसाद रचित नाटक की रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना पर ही आधारित हैं। जैसे जयशंकर प्रसाद रचित नाटक की रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना पर हा आवतारत भारती', भारतेंदु हरिश्चंद्र की 'भारत दुर्दशा' 'चंद्रगुप्त', मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती', वालकष्ण शर्मा 'नवीन' का 'पाल 'चंद्रगुप्त', मैधिलीशरण गुप्त का भारत सालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का 'पराजय गीत' सुभदाकुमारी चौहान की 'झॉसी की रानी', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का 'पराजय गीत' सुभदाकुमारी चोहान को 'झासा का रागा' मार्ग्य रामनरेश त्रिपाठी का 'मानसी' काव्य संग्रह, रामधारीसिंह दिनकर की अधिकांश रामनरेश त्रिपाठी का 'मानसी' काव्य संग्रह, रामधारीसिंह दिनकर की अधिकांश रामनरेश त्रिपाठी का 'मानसा' कार्ज स्ट्राप्रेम तथा जनजागरण से भरी हैं। बंगाने रचनाएँ जैसे 'कुरुक्षेत्र', 'हुँकार' आदि राष्ट्रप्रेम तथा जनजागरण से भरी हैं। बंगाने रचनाए जस 'कुरुक्षत्र', हुफार जात साहित्यकारों में रवीन्द्रनाय ठाकुर, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, डी. एल. रॉय आहि साहत्यकारा म रवान्द्रनाय जाउन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं से देश को नयी दिशा दी। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याव साहत्वकारा न अपना रपनाया की रचना 'वंदेमातरम' राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति का अप्रतिम उदाहरण है। मराहं साहित्यकारों में केशवसूत, चीर सावरकर, कुसुमाग्रज की अधिकतर रचनाएँ राष्ट्रप्रेय पर ही आधारित हैं। 'क्रांतीचा जयजयकार' इस कविता के माध्यम से एक राजबन्द्री के मन में व्यक्त विचारों को अभिव्यक्त किया है-

''कशास आई, भिजविसि डोळे, उजळ तुझे भाल/रात्रीच्या गर्भात उद्याचा अने उषःकाल/सरणावरती आज आमुची पेटतात प्रेते/उठतिल त्या ज्वालांतुन भावी क्रांके नेते/लोहदण्ड तव पायांमधले खळाखळा तुटणार/ आई, खळाखळा तुटणार/गई जयजयकार क्रांतिचा गर्जा जयजयकार""

रवतंत्रता आंदोलन के दौर में हमने देखा है कि किस तरह विभिन्न जाति, मं वर्ग, पंच के लोगों ने अपने आप को भूलकर, केवल यह याद रखा कि मैं भारतीय हूँ। उस दृष्टि से प्रयास कर मिलजुलकर, एकदूसरे का हाथ पकड़कर, कंधे से कंच मिलाकर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। असंभव सी प्रतीत हो वाली अपनी आज़ादी को प्राप्त किया। 15 अगस्त 1947 ई. में यह देश आज़ाद हुव और राजतंत्र से हटकर इस देष में लोकतंत्र स्थापित हुआ। फिर वह स्वर्णिम विग भी आया जिस दिन संसद के पटल पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की अध्यक्षता भारतीय संविधान को प्रस्तुत किया गया और तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रमा ने उसे मंजूर किया। राष्ट्रीयता को परिभाषित करते हुए डॉ. आंबेडकर ने कहा-प्रयम भारतीय हूँ, मध्य में भी भारतीय हूँ, और जीवन के अंत तक मैं भारती^{य ह} रहेंगा।''

आजादी के संघर्ष के दौरान हम भारतवासियों ने बड़े ही सुंदर सुनहरे सपने ले जब देश आज़ाद होगा, तब इस देश में रामराज्य स्थापित होगा। चारों तरफ ^{कुर्गा}

188 / भारतीय साहित्य : चिन्तन और चुनौतियाँ

होगी। इस देश में अमन-चैन स्थापित होगा। अभिव्यक्ति की आज़ादी होगी। तब हम बड़े गर्व से, अपने अधिकार से, स्वाभिमान के साथ, आत्मविश्वास के साथ एक स्वर में कह सकेंगे, कि हम आज़ाद हैं। यह हमारी भारत भूमि है, जिस पर हमें गर्व है। जैसे ही यह देश आज़ाद हुआ, यह मुल्क दो हिस्सों में बँट गया। एक भारत बना तो दूसरा पाकिस्तान। यह विभाजन अपने साथ भीषण हिंसा और रक्तपात लाया। कल्लेआम में हजारों लोग मारे गये, लाखों लोगों को अपना घर-बार, कारोबार छोड़कर अनजान स्थानों पर जाना पड़ा। विभाजन की इस त्रासदी को यघपाल ने अपने उपन्यास 'झूठा सच' और भीष्म साहनी ने 'तमस' में दर्शाया है। जो लोग एक-दूसरे से कंधे से कंधा मिलाकर आज़ादी की लड़ाई लड़े थे, वे एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गये, एक-दूसरे को शक की निगाहों से देखने लगे, आज भी शक की यह स्थिति हमें दिखाई देती है।

आज़ादी के कुछ वर्षों में ही हमारे पड़ोसी देश ने हम पर आक्रमण किया। 1962 में चीन ने 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का नारा लगाकर हमारी पीठ पर खंजर घोंपा। हम पर आक्रमण किया। इस दौर में हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से देश में पुनः देशभक्ति का बीज बोया। हमारे राष्ट्रसंतों ने अपने भजनों द्वारा राष्ट्रीयता की लौ जगाई। राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज ने सरहद पर भारतीय सिपाहियों के समक्ष भजन गाते हुए कहा—

"आओ चीनियों, मैदान में, देखो हिन्द का हाथ 1/ अब हिन्द जाग गया तुम्हारे साथ। 1/ भारत से लड़नेवाले हो? ईश्वर से जरा तो डरो 1/ अरे सुन लो 1/ क्यों संसार दुखाते हो? शांति भंग करवाते 1/सब देश को क्रोध चढ़ाकर, अपना नाश कराते हो।"

कैफी आज़मी के गीत ने लोगों के भीतर वीर रस भर दिया। एक सैनिक के अंतर्मन की आवाज़ को अपने गीत के माध्यम से प्रस्तुत किया—

"कर चले हम फ़िदा जानो-तन साथियों/ अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों/ सांस धमती गयी, नब्ज़ जमती गयी/ फिर भी बढ़ते कदम को न रूकने दिया/कट गये सर हमारे तो कुछ गम नहीं/ सर हिमालय का हमने न झुकने दिया/ मरते-मरते रहा बांकपन साथियों/ अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों"

इस तरह के गीतों ने हम भारतीयों के मन पर गहरा प्रभाव डाला। साहित्यकारों ने पुनः एक बार देशभक्ति की भावना को अपने साहित्य में तरजीह दी।

आज़ादी के बाद जो सपने भारतीयों ने देखे थे, वे सब धुंधले पड़ गये। रामराज्य

भारतीय साहित्य : चिन्तन और चुनौतियाँ / 189

की कल्पना, कल्पना ही रह गयी और मोहभंग की रिवर्ति का निर्माण हुआ। के की कल्पना, कल्पना ही रह गया आर पाल आवर्श थे, वे ही कमजीर जोर क्षेत्र भण्डाचार में लिप्त हो गया। जो नेता कभी हमारे आवर्श थे, वे ही कमजीर जोर क्षेत्र भ्रष्टाचार में लिप्त हो गया। जा नता पास की भी प्रमाणपत्र बाटे जो स्वतंत्रता सेनाक हो गए। ऐसे भ्रष्ट नेताओं ने ऐसे लोगों को भी प्रमाणपत्र बाटे जो स्वतंत्रता सेनाक हों गए। ऐसे घट्ट नेताओं ने ऐसे सामा की कि बिना जेन-देन के कोई काम होना नहीं थे। नौकरशाही में घूसखोरी ऐसी बढ़ी कि बिना जेन-देन के कोई काम होना नहीं थे। नौकरशाही में धूसखारा धुसा लोलुपता बलवती होने लगी। सता पाने हैन असंभव हो गया। राजनीति में सत्ता लोलुपता बलवती होने लगी। सता पाने हैन असंभव हो गया। राजनाति म सरा जाने लगे। जनता त्रस्त होने लगी। साहित्यकारी न् नेतागण किसी भी स्तर पर जान के जान यथार्थ को अपने साहित्य में स्थान दिया। जनता की इसी मानसिक कुंठा, इसी नग्न यथार्थ को अपने साहित्य में स्थान दिया। आज की इस परिस्विति पर अदम गोंडवी जी ने कहा है-

को इस पारास्थात पर जावने ये हुक्काम कर देंगे/ कमीशन दो तो हिन्दोस्तान ''जो डलहौजी न कर पाया वो ये हुक्काम कर देंगे/ कमीशन दो तो हिन्दोस्तान को नीलाम कर देंगे/ ये बन्दे-मातरम का गीत गाते हैं सुबह उठकर/ मगर बाज़ार का नालाम कर देग/ य बच्च ताणार में चीजों का दुगुना दाम कर देंगे/ सदन में घूस देकर बच गयी कुर्सी तो देखांग/ वो अगली योजना में घूसखोरी आम कर देंगे।''

हमारे देश में कई विदेशी शासक आए, उनके साथ उनके लोग भी आए। उन्हें यह देश इतना प्यारा लगा कि वे यहीं बस गये। उनका इस देश पर अटूट प्रेम रहा। आजादी की लड़ाई के बारे में हम सभी को पता है कि किस तरह सभी ने एक साथ मिलजुलकर, संघर्ष के बाद आज़ादी प्राप्त की थी। यह भारत देश की खूबी है हि जो यहाँ आया वह यहीं बस गया। चाहे आर्य हो या यूनानी, चाहे मुगल हो या ब्रिटिश, चाहे फ्रांसीसी हो या पुर्तगाली जो भी यहाँ आया यहीं का हो गया। जो यहाँ आकर यही बस गया, वो ही भारतीय कहलाया। परन्तु आज मनुष्य, मनुष्य में है भेद किया जा रहा। उन्हें विभिन्न आधारों पर चाहे जातिगत हो या धर्मगत, बाहे भौगोलिक हो या भाषागत बॉटा जा रहा। मनुष्यता का भाव कहीं खो गया ऐस महसूस होने लगा। अहिंसा के स्थान पर हिंसा बढ़ने लगी। मनुष्य से अधिक पशु को महत्व दिया जाने लगा। देशभक्त और देशद्रोही के सम्बन्ध में सकारात्मक का और नकारात्मक चर्चा और अधिक छिड़ने लगी। ऐसा लगने लगा कि देव दिपाहीन होने लगा है। ऐसी स्थिति में साहित्यकारों की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है। हम यह जानते हैं जब भी समय आया साहित्यकारों ने अपनी भूमिका को बखुबी निभाया है। निर्भयता से बेखौफ होकर उन्होंने सरकार के खिलाफ अपनी आवल बुलंद की। चाहे आज़ादी का दौर हो, चाहे युद्ध का वातावरण, साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से इस देश को नयी दिशा दी। वर्तमान में साहित्यकारों को पुनः उस दिश में बढ़ना होगा, पुनः भारतीयता और राष्ट्रीयता के बीज बोने होंगे। पुनः अति

190 / भारतीय साहित्य : चिन्तन और चुनौतियाँ

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S **RESEARCH JOURNEY**

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL October-2018 Special Issue - LXIV

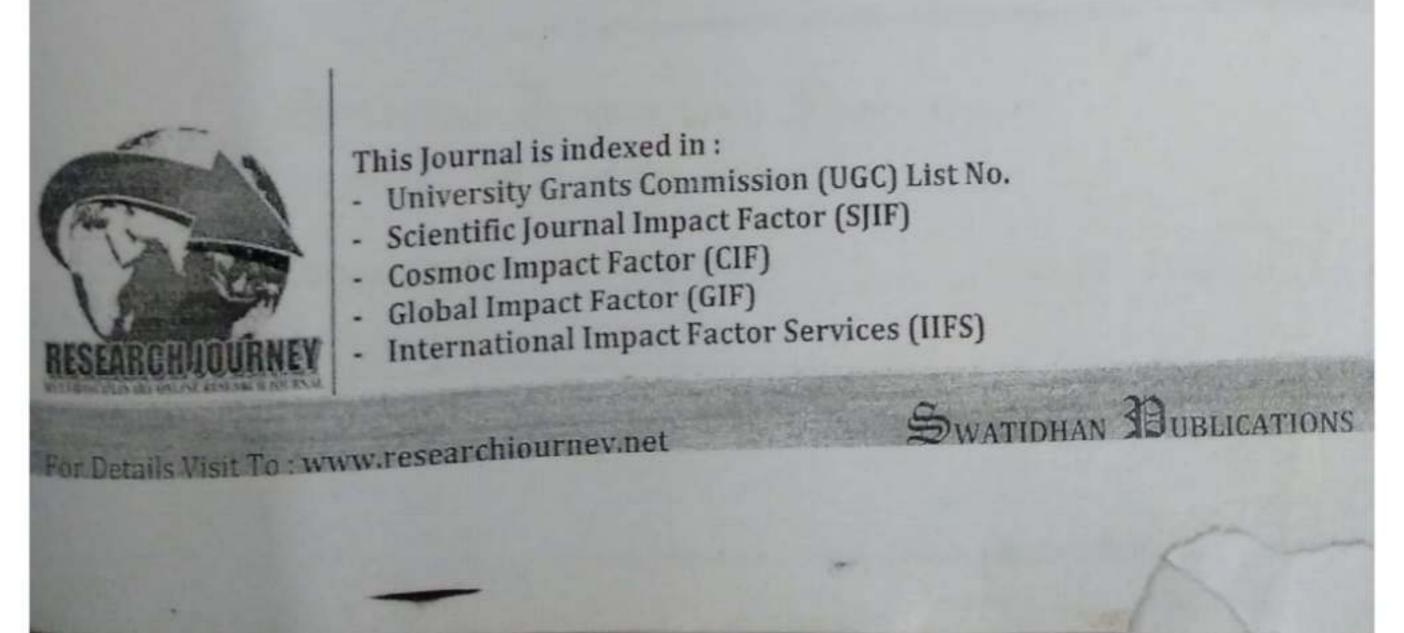
हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज

अतिथि संपादक प्रा. निवृत्ति लोखंडे सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर

विशेषांक कार्यकारी संपादक डॉ. अपर्णा कुचेकर विभागाध्यक्ष, स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर



मुख्य संपादक डॉ. धनराज धनगर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला तह.- येवला, जिला- नासिक



RESEARCHRIDURNEY	npact Factor - (SJIF) - <u>6.261</u> , (CIF) - <u>3.452(2015)</u> , (GIF) - <u>0.676</u> (2013) Special Issue 64 : हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज UGC Approved Journal
Impact	Factor - 6.261 ISSN - 2348-7143
	INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
	RESEARCH JOURNEY
-	Multidisciplinary International E-research Journal
	PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
	October-2018 Special Issue – LXIV

अतिथि संपादक प्रा. निवृत्ति लोखंडे सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर

विशेषांक कार्यकारी संपादक डॉ. अपर्णा कुचेकर विभागाध्यक्ष, स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर

मुख्य संपादक डॉ. धनराज धनगर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला तह.- येवला, जिला- नासिक

1

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 500/-

Website - www.researchjourney.net Email - researchjourney2014gmail.com

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal

ISSN :

Impact Factor - (SJIF) - AZG LUUE Lat 484/201 Dr. Dhanraj T. Dhangar, ALL REPORTS AND ADDRESS OF THE PARTY OF THE Assist. Prof. (Marathi) Prof. Tejesh Beidar, Nashikroad (English) MGV'S Arts & Commerce College, Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi) Dr. Anil Down Minthe Billg Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Sandi Arabia. - Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon Dr. Shailendra Lende - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India Dr. Dilip Pawar - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik. Dr. R. R. Kazi - North Maharashtra University, Jalgaon Prof. Vinay Madgaonkar - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India 10 Prof. Sushant Naik - Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India Dr. G. Haresh - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India Dr. Munaf Shaikh ÷. - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon Dr. Samjay Kamble 2.0 -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari Prof. Vijay Shirsath - Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.] Dr. P. K. Shewale ÷. - Vice Principal, Arts, Science, Commerce College, Harsul [M.S.] Dr. Ganesh Patil - M.V.P.'s, SSSM, ASC College, Saikheda, Dist. Nashik [M.S.] Dr. Hitesh Brijwasi - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.] Dr. Sandip Mali - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.] Prof. Dipak Patil - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.] Advisory Board -

Dr. Marianna kosic - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.

Dr. M.S. Pagare - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon ...

Dr. R. P. Singh -HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India **

* Dr. S. M. Tadkodkar - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.

* Dr. Pruthwiraj Taur - Chairman, BoS., Marathi, S.R.T. University, Nanded.

* Dr. N. V. Jayaraman - Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore

* Dr. Bajarang Korde - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India

* Dr. Leena Pandhare - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road

* Dr. B. V. Game - Act. Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

* Dr. J. S. More - BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopargaon

* Dr. S. B. Bhambar, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari

* Dr. Uttam V. Nile - BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada

* Dr. K.T. Khairnar- BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati

* Dr. Vandana Chaudhari KCE's College of Education, Jalgaon

* Dr. Sayyed Zakir Ali, HOD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon

* Dr. Sanjay Dhondare - Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule

* Dr. Amol Kategaonkar - M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by -

2

1.0

...

- -

**

@ Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik Email: swatidhanrajs@gmail.com Website: www.researchjourney.net Mobile: 9665398258

Website - www.researchjourney.net

Email - researchjourney2014gmail.com



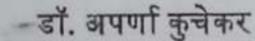
'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013) Special Issue 64 : हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज **UGC** Approved Journal

ISSN: 2348-7143 October-2018

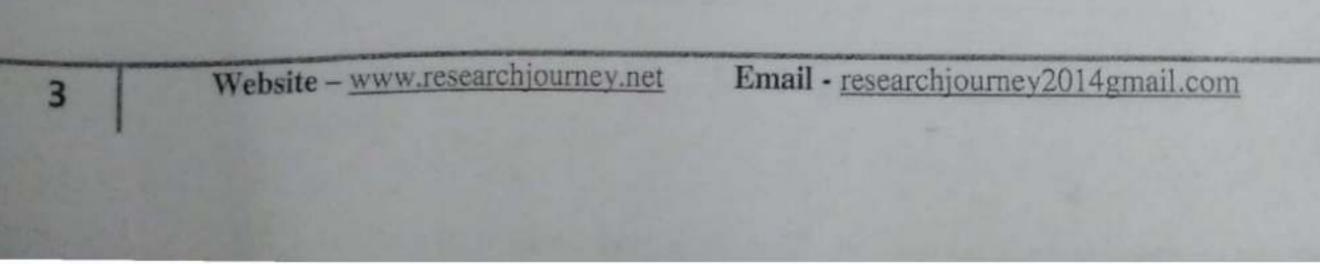
संपादकीय दृष्टिक्षेप....

क्रांति का स्वरूप हर एक युग में परिवर्तित होता रहा है, फिर भी हर नई क्रांति ने हमेशा नवनिर्माण किया है। सभी क्रांतियों ने इतिहास में अपना अलग महत्त्व प्रस्थापित किया है। सभी क्रांतियों मे अपना अलग सिक्का जमानेवाली औद्योगिक क्रांति ने अखिल विश्व में ही पूरा परिवर्तन लाया। इसी की अगली सीढ़ी के रूप में 'कम्पूटर' और 'इंटरनेट' के रूप में कदम रखा और रोजगार के नए-नए अवसर निर्माण होते गए और भाषा के अध्येताओं के सम्मुख बेरोजगारी की समस्या ने सिर उठा लिया। कश्मकश में पड़ा हिंदी अध्येता भाषा के प्रति उदासीन रहने लगा। इसी बात को मद्देनजर रखकर 'हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज' इस विषय पर संपूर्ण भारत वर्ष से शोधालेख प्राप्त हुए। विद्वानों एवं शोधार्थीयों द्वारा विचार, चिंतन एवं मंथन से लिखे शोधालेखों से निश्चित तौर पर बेरोजगारी की समस्या का हल ढूँढने में कारगर सिद्ध होंगे।

रोजगार के अवसरों पर प्राप्त विविध शोधालेखों में विषय का सम्यक विवेचन, विश्लेषण किया गया है। इन सारे शोधालेखों का 'रिसर्च जर्नी' इस आंतर्राष्ट्रीय पत्रिका के विशेषांक के रूप में लोकार्पण करते हुए हम विशेष आनंद का अनुभव कर रहे हैं। आशा है कि, इस विशेषांक का अभ्यागत हिंदी अध्येताओं को लाभ होगा।



(संयोजक राष्ट्रीय संगोष्ठी) विभागाध्यक्ष, स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, शंकरराव मोहिते महाविद्यालय, अकलूज तह.- माळशिरस, जिला- सोलापुर



'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal Impact Factor - (SJIF) - <u>6.261</u>, (CIF) - <u>3.452(2015)</u>, (GIF)-<u>0.676</u> (2013) Special Issue 64 : हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज **UGC** Approved Journal

ISSN: 2348-7143 October-2018

त.क.	शीर्षक	लेखक	पृ.क्र.
1	वैश्वीकरण के दौर में भाषा और अनुवाद	डॉ.गिरीश काशिद	06
2	सिनेमा एवं हिंदी	डॉ.देवकला शर्मा	11
3	अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज और हिंदी	डॉ. अमोल चव्हाण	17
4	कम्प्युटर में हिंदी का प्रयोग समस्या एवं समाधान	डॉ. राहुल उठवाल	20
5	अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज और हिंदी	डॉ.विजय पाल	27
6	इंटरनेट जगत और हिंदी	डॉ. सुमेध नागदेवे	30
7	हिंदी सिनेमा और भारतीय भाषाएँ	डॉ. आरिफ जमादार	34
8	भाषा, हिंदी भाषा संदर्भ रोजगार	डॉ.ऋषी चौबे	38
9	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मिडिया अनुवाद 'डबिंग'	डॉ. नवनाथ शिंदे	42
10	सिनेमा एवं हिंदी	डॉ.सतीश घोरपडे	46
11	अंतरराष्ट्रीय क्षितिज एवं हिंदी	डॉ. बलवंत बी.एस	49
12	विश्व में हिंदी का महत्त्व	डॉ.सुब्राव जाधव	53
13	सिनेमा और हिंदी का अत:संबंध	डॉ. कल्पना पटोले	58
14	बैंको में प्रयुक्त हिंदी	डॉ. शीला भास्कर	62
15	प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप एवं दिशाएँ	डॉ.शीतल माने	68
16	मातृभाषा हिंदी	डॉ. पूनम सिंह	71
17	प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप एवं उपयोगिता	डॉ.मदन खरटमोल	74
18	अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी	डॉ.नीलम वीराणी	77
19	राष्ट्रीय अस्मिता एवं रोजगार की भाषा हिंदी	डॉ.संजय धोटे	80
20	व्यावसायिक क्षेत्र में हिंदी का बदलता स्वरूप	डॉ.सपना तिवारी	84
21	हिंदी पत्रकारिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका	प्रा.दत्तात्रय साळवे	88
22	हिंदी ने 'कर ली दुनिया मुट्ठी में'	प्रा.सूर्यकांत चव्हाण	91
23	वैश्वीकरण के दौर में हिंदी एवं रोजगार	दिलना के	95
24	सिनेमा एवं हिंदी	श्रीमती प्रीती गौतम	99
25	संसद से लेकर सडक तक धुंधली सी हो गई है हिंदी	सुनील कुमार यादव	103
26	कम्प्युटर में हिंदी का प्रयोग समस्या एवं समाधान	प्रा.संगीता भोसले	105
4	Website – www.researchjourney.net	Email - researchjourney2014g	mail.com



'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal Impact Factor - (SJIF) - 6.261 (CIF) - 3.452(2015). (GIF)-0.676 (2013) Special Issue 64 : हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज **UGC** Approved Journal

ISSN: 2348-7143 October-2018

of the Parameter of the Australia line water

इंटरनेट जगत और हिन्दी

डॉ. सुमेध पानाचंद नागदेवे डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू. एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कामठी मार्ग, टेका नाका, नागपुर-२६ मो.नं. ९९२१२८६०७१ Email: sumedh2911@gmail.com

शोध - सारांश

30

आधुनिक युग में संपूर्ण विश्व इंटरनेट के महत्त्व को जानता है। जब भारत में कम्प्यूटर आया तब वहाँ केवल अंग्रेजी का ही प्रयोग होता था। भारतीय भाषाओं का उसमे कोई स्थान नहीं था। अधिकतर कम्प्यूटर का संबंध व्यवसाय से था। अतः आम जनता को ध्यान में रखते हुए भारतीय भाषाओं में सॉफ्टवेयर विकसित किए गए। इस कदम ने संचार पद्धति को गति प्रदान की। भारतीय भाषा के साथ-साथ हिन्दी भाषा भी अपना स्थान धीरे-धीरे हासिल करने लगी। हिन्दी वेब के विकास में तकनीकी अवरोध के कारण इंटरनेट पर हिन्दी की वांछित प्रगति नहीं हो पाई थी लेकिन कुछ वर्षों में सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानों और कुछ बुद्धिजीवियों के प्रयास से यह समस्या लगभग दूर हो चुकी है। आज गूगल, जैसे कई सर्च इंजिन हिन्दी में विकसित हो जाने से हिन्दी खोजने की समस्या समाप्त हो चुकी है। यूनिकोड टेक्नॉलॉजी के आगमन से हिन्दी के लिए भी यूनिवर्सल कोड उपलब्ध हो पाए हैं। वैश्वीकरण के इस युग में विश्वभाषा हिन्दी इंटरनेट के लिए उपयुक्त और महत्वपूर्ण भाषा बन गयी है। प्रस्तुत शोध 'इंटरनेट जगत और हिन्दी' में हिन्दी के विकास, उसके सशक्तिकरण को दर्शाता है।

संकेताक्षर : इंटरनेट, वेब तकनीक, फॉन्ट, डाटाबेस, अक्षरग्राम ।

संचार माध्यमों की क्रांति के इस युग में सभी माध्यमों के केंद्र में कही ना कही आज कंप्यूटर है। वैश्वीकरण के दौर में संपूर्ण विश्व इंटरनेट वेब तकनीक के महत्व को जानता है, समझता है। वेब तकनीक के माध्यम से विकास करनेवाले देशों में भारत प्रमुख है। जब भारत में कम्प्यूटर आया तब उसका की-बोर्ड केवल अंग्रेजी के लिए ही बना था। चूंकि कम्प्यूटर का संबंध व्यवसाय-व्यापार से था अतः छोटी-छोटी कंपनियों ने भारतीय भाषाओं में सॉफ्टवेयर विकसित किए। इंटरनेट ने तो संचार पद्धति में क्रांति ही ला दी। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हिन्दी अपना स्थान धीरे-धीरे हासिल करने लगी। आज हिन्दी के लगभग सभी समाचार पत्र, पत्रिकाएँ जैसे हंस, तदुभव, वागर्थ इंटरनेट पर मौजूद है। गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी एरिक स्मिथ के अनुसार, ''इंटरनेट पर आनेवाले दिन हिन्दी और मंदारिन जैसे भाषाओं के है और अंग्रेजी तीसरे नंबर की भाषा बनकर रह जानेवाली है।" इंटरनेट के चलते केवल सूचना एवं तकनीकी क्षेत्र में ही नहीं अपित मानव-जीवन शैली में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए।

वर्तमान में संचार के क्षेत्र में परंपरागत संचार माध्यम के स्थान पर वेब तकनीक जैसी नयी विधा का जन्म हुआ है। एक समय था जब इस क्षेत्र में अंग्रेजी का एकाधिकार था, लेकिन कुछ वर्षों में इंटरनेट में हिन्दी की अनेक वेबसाइट दिखने लगी है। एक समय था जब हमे अपने

इंटरनेट आधारित मीडिया अपनी स्वतंत्र पहचान बना चुका है, लेख, बालेंदु दधिच, १/११/२००६, Srijgatha.com

Website - www.researchjourney.net Email - researchjourney2014gmail.com

 TRESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal Impact Factor - (SJIF) - <u>6.261</u> (CIF) - <u>3.452(2015)</u>. (GIF) - <u>0.676</u> (2013) Special Issue 64 : हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज</u> UGC Approved Journal
 ISSN : 2348-7143 October-2018

 लेख की सुरक्षा की चिंता सताली थी परंतु अब इस तकनीक के कारण वह चिंता समाप्त हो गयी। हिन्दी में ई-मेल भेजे जा सन्दर्भ के जिन्ही कि कि कारण वह चिंता समाप्त हो

गयी। हिन्दी में ई-मेल भेजे जा सकते हैं, विद्यार्थी किसी भी विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। लघु पत्रिका का संचालन कर अपने संपूर्ण रचना कर्म को संपादक के रूप में इंटरनेट पर प्रकाशित कर सकता है और किसी भी विषय, किसी भी मुद्दों पर किसी भी समस्या पर विमर्श कर सकता है।

हिन्दी भाषा इंटरनेट के माध्यम से हिन्दी प्रचार-प्रसार में भी अहम भूमिका निभा रही है। आज बहुत सी सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं ने भी अपनी वेबसाईट हिन्दी में बनाएँ हैं। पहले देवनागरी में ई-मेल भेजना बेहद ही मुश्किल कार्य था लेकिन अब आसान हो गया है। सर्वप्रथम सॉफ्टवेयर कंपनी 'सुवी इन्फॉर्मेशन कंपनी सिस्टर इंदौर' ने निःशुल्क ई-मेल सेवा आरंभ किया, जिससे देवनागरी के लिए नया प्रवेश द्वार खुला। ''हिन्दी में ई-मेल की सुविधाएँ निम्नलिखित वेबसाइटों पर उपलब्ध है।

www.epart.com www.mailijol.com www.cdacindia.com www.rediffmail.com www.langoo.com www.webduniya.com www.bharatmail.com www.nidatrans.com**⁵

सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति से सरकार ने अपने कार्यालयों के कामकाज में हिन्दी भाषा के प्रयोग में बढ़ावा देने के लिए हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सी डॅक' को विकसित किया। 'मंत्र राजभाषा' अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के लिए सहायक है। यूनिकोड टेक्नॉलॉजी के आगमन से हिन्दी के लिए भी यूनिवर्सल कोड उपलब्ध हो पाए है। ूग्तंरईॉण्बवउ से हमें हिन्दी से संबंधित नियम, साहित्य, व्याकरण तथा शब्दकोश की जानकारी मिलती है। ूण्अवंदम्रेण्बवउ से हमे हिन्दी में समाचार प्राप्त होते हैं। आज हिन्दी भाषा सीखने के लिए कई वेबसाइट उपलब्ध है।

www.rajbhasha.com www.rajbhasha.nic.in www.tdil.mit.gov.in www.indianlanguages.com www.dictionary.com www.educindia.com www.educindia.com www.rosettastone.com www.bharatdarshan.co.nz www.wordanywhere.com www.hindinet.com www.hindibhasha.com www.sahityaakademi.org

31

मीडिया और हिन्दी, संपादक डॉ. मधु खराटे, डॉ. हणमंत राव पाटील, डॉ. राजेंद्र सोनवणे, विद्या प्रकाशन, पृ.८२

Website - www.researchjourney.net Email - researchjourney2014gmail.com

 RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal

 Impact Factor - (SJIF) - 6.261. (CIF) - 3.452(2015). (GIF) - 0.676 (2013)

 Special Issue 64 : हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय खितिज

 UGC Approved Journal

ISSN : 2348-7143 October-2018

आदि कई हिन्दी इंटरनेट साईट का होना हमारे लिए गौरव की बात है। ये साइट हमें विभिन्न सेवाएँ उपलब्ध कराता है। '''वर्ल्ड वाइल्ड वेब' यह पूरे संसार में फैला हुआ एक बड़ा डाटाबेस है। इंटरनेट से जुड़ने के बाद इस डाटा बेस से विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ वेब पेज पर उपलब्ध करा सकती है। वेब पेज को साइट भी कहा जाता है।''⁶ प्रत्येक विषय के लिए अलग-अलग वेब पेज अथवा वेब साइट होते हैं। जैसे, व्यापार, वाणिज्य, मनोरंजन, शिक्षा, चिकित्सा आदि। वेब इंटरनेट पर जानकारी प्राप्त करने का सबसे आसान, तीव्र एवं प्रचलित माध्यम है। इसमें गूगल सबसे अच्छी वेबसाइट है। गूगल अब हिन्दी, बंगला को भी सपोर्ट करने लगा है। ोलचम के माध्यम से चलचित्र मोड में ज्ञान का आदान प्रदान तथा संवाद साध सकते हैं। ध्वदज ब्वदअमतजमत वर्ज्तिूतम इंटरनेट के माध्यम से डाऊनलोड कर हिन्दी में कम्पोज की गयी सामग्री को हिन्दी में ही किसी अन्य फॉन्ट में रूपांतरित किया जा सकता है। जिससे फॉन्ट की समस्या का निदान हो पाया है।

इंटरनेट के जरिए ही वेब पत्रकारिता में मल्टीमीडिया का प्रयोग होता है। इसमें समाचार और पाठ्य सामग्री निरंतर अपडेट होती है। सूचना तथा समाचारों के साथ इसमे 'साहित्य की विभिन्न विधाएँ, ज्ञान-विज्ञान मनोरंजन तथा प्रादेशिक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों को प्रमुख रूप से स्थान दिया जाता है। 'नयी दुनिया' नामक हिन्दी समाचार पत्र हिन्दी वेब पत्रकारिता में पहला पत्र है। ''कंप्यूटर और इंटरनेट के कारण दुनिया भर के समाचार-पत्र कोई भी व्यक्ति कहीं भी पढ़ सकता है। 'नवभारत टाइम्स' जैसे समाचार पत्र अमेरिका में उसी समय पढ़ा जा सकता है, जब वह यहाँ पढ़ा जाता है।" अॉन लाईन समाचार पत्र की यह विशेषता है कि उसमें समय-समय पर नई जानकारी भरने का कार्य निरंतर चलता है। क्षण-क्षण नई जानकारी जुड़ती जाती हैं। आज हिन्दी के लगभग सभी दैनिक समाचार पत्र इंटरनेट पर उपलब्ध है। कई पत्रिकाएँ भी हिन्दी में हैं। इनमें कुछ साहित्यिक लघु पत्रिकाएँ हैं। जैसे हंस, तद्भव, वागर्थ इत्यादि। कुछ इंटरनेट की पत्रिकाएँ हैं, जैसे अभिव्यक्ति, अनुभूति, हिन्दी नेस्ट, कृत्या आदि अनेक प्रतिष्ठित समाचार पत्रों ने भी अपने वेब संस्करण आरंभ किए जिनमें दैनिक जागरण, भास्कर, नवभारत, राष्ट्रीय सहारा, बीबीसी हिन्दी आदि प्रमुख है। 'दैनिक जागरण डॉट कॉम' विश्व का नंबर एक हिन्दी न्यूज पोर्टल बन गया है। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की 'हिन्दी समय डॉट कॉम' पर कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध, आलोचना और पत्र जैसी विधा का अच्छा खासा संकलन तैयार किया गया है। कई साहित्यकारों का समग्र रचना कर्म भी इस साइट में उपलब्ध है।

हिन्दी वेब के विकास में तकनीकी अवरोध के कारण इंटरनेट पर हिन्दी की वांछित प्रगति नहीं हो पाई थी लेकिन कुछ वर्षो में वेब कंपनियों, सरकारी तथ गैर सरकारी तकनीकी संस्थानों और कुछ बुद्धिजीवियों के प्रयास से यह समस्या लगभग दूर हो चुकी है। यूनिकोड सम्मत फॉन्ट

प्रयोजनमूलक, हिन्दी, माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, पृ.२११ प्रयोजनमूलक हिन्दी, यशवंतराव चव्हान महाराष्ट मुक्त विद्यापीठ, लेखक डॉ. सुधाकर गोकालकर, संपादक डॉ. चंद्रकांत गर्जे, प्रकाशन : मार्च २००२, पृ. १०६ मीडिया और साहित्य अतः संबंध, संपादक, रतनकुमार पाण्डेय, अनंग प्रकाशन,पृ.८४

32

Website - www.researchjourney.net Email - research

Email - researchjourney2014gmail.com



'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal Impact Factor - (SJIF) - 6.261. (CIF) - 3.452(2015). (GIF)-0.676 (2013) Special Issue 64 : हिंदी की गरिमा एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज UGC Approved Journal

ISSN: 2348-7143 October-2018

के आ जाने से किसी भी साइट के साथ संपर्क साधना आसान हो गया है। विन्डोज, एक्सपी तथा लिनक्स जैसे ऑपरेटिंग सिस्टम का इंटरफेस अब हिन्दी में बन चुका है। माथा तकनीक में विकसित उपकरणों को जनसामान्य तक पहुँचाने हेतु एडोब और माइक्रोसॉफ्ट और एक्सपी ढारा हिन्दी फॉन्ट विकसित किया गया। माइक्रोसॉफ्ट द्वारा यूनिकोडित फॉन्ट मंगल से फॉन्ट की समस्या हल हो चुकी है। वर्तनी सुधार सॉफ्टवेअर, शब्दकोश आदि की उपलब्धि के लिए सी डॅंक, आय आय टी मुंबई और मैसूर लगातार सक्रिय है। गूगल, एम.एस.एन. लाइव, याहू, रेडिफ, हिंखोज आदि जैसे सर्च इंजिन हिन्दी में विकसित हो जाने से हिन्दी खोजने की समस्या समाप्त हो चुकी है। वेब डिजायनरों की बढती संख्या को भी इस दृष्टि से हम सकारात्मक मान सकते हैं। इंटरनेट पर अभिव्यक्ति की नई तकनीक ब्लॉग के कारण हिन्दी विशेष रूप से लोकप्रिय हो रही है। इन हिन्दी ब्लॉग्स में अक्षरग्राम, नारद, सर्वज्ञ, निरंतर, परिचर्चा, बुनो कहानी आदि जैसे सैकड़ों ब्लॉग उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं। कई ऑनलाईन पत्रकार हिन्दी वेब पत्रकारिता को समृद्ध बना रहे हैं।

आज ''आप इंटरनेट पर खोज हिन्दी में कर सकते हैं यह एक ऐसा अस्त्र है जिससे देर सबेर हरे एक साइट को यूनिकोड सम्मत होना ही पडेगा वरना उन्हें देखने वाले या पाठक नहीं मिलेंगे। यह मानकीकरण की तरह एक बड़ा कदम है।" दर्तमान में सरकार को जागरूक रहकर सभी शाला, महाविद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा अनिवार्य करना होगा। जिससे इंटरनेट जगत में हिन्दी भाषा सशक्त रूप से आगे बढ़ेगी और विश्वभाषा हिन्दी इंटरनेट के लिए उपयुक्त और महत्वपूर्ण भाषा बनेगी।

संदर्भ

33

- 9. इंटरनेट आधारित मीडिया अपनी स्वतंत्र पहचान बना चुका है, लेख, बालेंदू दधिच, 9/99/200E, Srijgatha.com
- २. मीडिया और हिन्दी, संपादक डॉ. मधु खराटे, डॉ. हणमंत राव पाटील, डॉ. राजेंद्र सोनवणे, विद्या प्रकाशन, पृ. ८२
- ३. प्रयोजनमूलक, हिन्दी, माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, पृ.२११

Website www.researchjourney.net

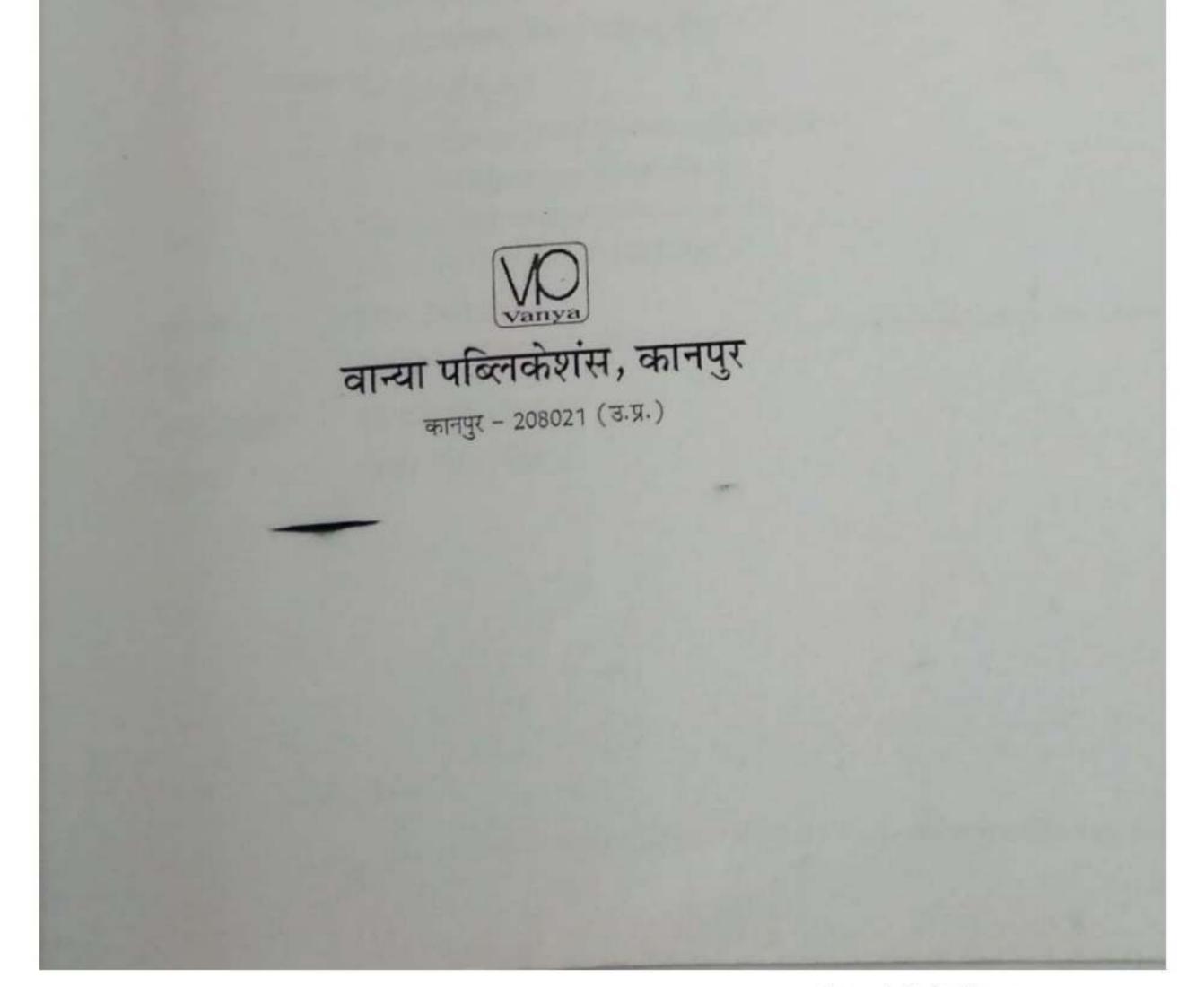
- ४. प्रयोजनमूलक हिन्दी, यशवंतराव चव्हान महाराष्ट मुक्त विद्यापीठ, लेखक डॉ. सुधाकर गोकालकर, संपादक डॉ. चंद्रकांत गर्जे, प्रकाशन : मार्च २००२, पु. १०६
- 4. मीडिया और साहित्य अंतः संबंध, संपादक, रतनकुमार पाण्डेय, अनंग प्रकाशन,पू. 58

Scanned with CamScanner

Email - researchjourney2014gmail.com

भारतीय साहित्य और अनुवाद

संपादक डॉ. गजानन किशनराव पोलेनवार



ISBN 978-93-91119-35-5 मूल्य : पाँच सौ पचास रुपये मात्र

भारतीय साहित्य और अनुवाद पुस्तक

डॉ. गजानन किशनराव पोलेनवार

संपादक

संपादक 0

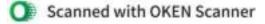
वान्या पब्लिकेशंस प्रकाशक

3A/127 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,

कानपुर - 208 021

Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com info@vanyapublications.com Website : www.vanyapublications.com Mob.: 9450889601, 7309038401

प्रथम, 2021 संस्करण 550.00 मूल्य रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर शब्द-सज्जा सार्थक प्रिंटर्स, कानपुर मुद्रक



अनुक्रम

- संस्कृति और अनुवाद : पारस्परिक अंतः संबंध 1. डॉ. सतीष यादव अनुवाद : अतित और इतिहास 2. डॉ. संतोष गिरहे भारतीय नाट्य साहित्य और नाट्य-अनुवाद-सौंदर्य 3. (मराठी नाटक 'घासीराम कोतवाल' के विशेष संदर्भ में) डॉ. सोनू जेसवानी अनुवाद की समस्याएँ 4. डॉ. संजय एस. धोटे भारतीय साहित्य और भारतीयता 5. डॉ. सुमेध पी. नागदेवे भक्तिकालीन संत साहित्य : एक दृष्टिक्षेप 6. प्रोफेसर डॉ. आबासाहेब राठोड 7. भारतीय साहित्य की समस्याएँ डॉ.मा.ना.गायकवाड 8. भारतीय संत साहित्य भारतीय साहित्य और अनुवाद की भूमिका 9. डॉ.रमेश टी. बावनथड़े 10. हिन्दी साहित्य और अनुवाद
- सुफी भाहेमिना सबा

प्रा.डॉ.मनोहर भंडारे

डॉ के पद्मा रानी

प्रा. उर्मिला पवार

14. साहित्यिक अनुवाद की समस्याएँ

- प्रा. डॉ. रविंद्रनाथ माधव पाटील 12. भारतीय साहित्य
- 11. संत कबीर के दोहों में व्यक्तित्व विकास

13. भारतीय समाज में अनुवाद की उपादेयता

	the function of a second
15.	अंतरभाषिक अनुवाद एवं समस्याएँ : हिंदी, मराठी के संदर्भ में
	डॉ. सपना तिवारी
16.	निराला के काव्य में चित्रित भारतीयता के बिंब सार
	लक्ष्मण किशनराव पेटकुले
17.	भारतीय साहित्य और अनुवाद की समस्याएं
	पा कमलाकर देवरावजी नवघरे
18.	भारतीय परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक साहित्य अध्ययन का क्षेत्र और विस्तार
	गा हो सहल पंडलिकरात वाघमारे
40	भारतीय साहित्य में जीवन मूल्यों का मांगलिक स्वरूप एवं लोकतांत्रिक
19.	
	संबद्धता
	डॉ. शोभा राजेश बघेल
20.	महिला सशक्तीकरण एवं समाज
	उर्मिला कुमारी
21.	भारतीय संत साहित्य
	डॉ. अर्पिता अग्रवाल
22.	भारतीय साहित्य का स्वरूप
	डॉ. राजकुमारी यादव
23.	आधुनिक कालीन गद्य साहित्य का स्वरूप
20.	मा मन्नती दिपक जनघरे
~	का गाहिला का ऐतिहासिक परिप्रक्ष्य एव अनुवाद विशान
24.	डॉ. हरगोविंद टेंभरे
	डा. हरगापप एगर

25. भारतीय साहित्य में अनुवाद प्रक्रिया का महत्व डॉ. मनीष जी. टेंभरे
26. भारतीय साहित्य में अनुवाद की भूमिका सारीका गौतमराव खरात (थोरात)
27. मशीनी अनुवाद और हिंदी रूप विश्लेषण वासुदेव, कुलदीप कुमार पाण्डेय

-

38 / भारतीय साहित्य और अनुवाद

5

भारतीय साहित्य और भारतीयता

डॉ. सुमेध पी. नागदेवे

सारांश

भारतीय अर्थात भारत से संबंधित। जिसने भारतीयता को अपने भीतर आत्मसात किया हो वही भारतीय। भारतीयता से तात्पर्य उस विचार या भाव से है जिसमें भारत से जुड़ने का बोध होता है जो भारतीय संस्कृति से संबंधित हो। भारतीयता का प्रयोग राष्ट्रीयता को व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है परंतु राष्ट्रीयता की संकुचित भावना के कारण ही यह देश हजारों वर्षों तक विदेशी शासकों का गुलाम रहा। हम विभिन्न आधारों में बॅटे रहे, जिसका लाभ विदेशी ताकतों ने उठाया। आदिकाल से लेकर भक्तिकाल तक, भक्तिकाल से रीतिकाल तक हमें देश में राष्ट्रीयता का अभाव दिखाई पड़ता है। 1857 ई. में अंग्रेजों के ख़िलाफ आज़ादी की पहली लड़ाई लड़ी गई। अंग्रेजों को कामकाज कराने हेतु शिक्षित भारतीयों की आवश्यकता थी। अतः उन्होंने शिक्षा के द्वार सभी के लिए खोल दिए। जब यह शिक्षित लोग उच्च शिक्षा हेतु विदेश गए तब उन्हें यह एहसास हुआ कि हम कितने पिछड़े हुए हैं। जब वे भारत लौटे तो उन्होंने कई सुधारवादी आंदोलन चलाए। जनता में आज़ादी के बीज बोने में भारतीय पत्रकारिता का विशेष महत्त्व रहा है। एक तरफ स्वतंत्रता सेनानी जनजागरण कर रहे थे तो दूसरी ओर अधिकतर भारतीय साहित्यकार अपनी लेखनी से जनता की चेतना को झकझोर रहे थे। इस स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न जाति, वर्न, वर्ग, पंथ के लोगों ने मिलजुलकर, एक-दूसरे का हाथ पकड़कर, कंधे से कंधा मिलाकर भारतीयता को आत्मसात कर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया तब जाकर हमें आज़ादी मिली। 1962 में चीन ने 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का नारा लगाकर हमारी पीठ पर खंजर घोंपा। इस दौर में हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से देश में पुनः भारतीयता का बीज बोया। आज़ादी के कुछ वर्ष पश्चात ही मोहभंग की स्थिति आयी। रामराज्य की कल्पना, कल्पना ही रह गई। मनुष्य, मनुष्य में ही भेद कर रहा है। उसमें पशुता नज़र आने लगी। ऐसी स्थिति में साहित्यकारों की भूमिका

भारतीय साहित्य और अनुवाद / 39

और अधिक बढ़ गई है। उन्हें पुनः भारतीयता के बीज बोना होगा, मानव को मानव बनाना होगा।

संकेताक्षर– भारतीयता, जीवन–मूल्य, सामाजिक चेतना, एकता, जनजागरण।

वर्तमान में जहाँ देश में आतंक का साया मॅडराता हुआ नज़र आता है, जहाँ एक दूसरे के प्रति आदर के स्थान पर द्वेष, प्रेम के स्थान पर घृणा नज़र आती है। जहाँ अहिंसा के स्थान पर हिंसा, मानवता के स्थान पर पशुत्व नज़र आता है। ऐसे समय भारतीय साहित्यकारों की भूमिका अधिक बढ़ जाती है उन्हें पुनः वही आदर्श, वही भारतीयता स्थापित करना होगी जिन्हें स्वार्थवश कहीं भूला दिया गया है। महात्मा बुद्ध के देश ने संपूर्ण विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाकर प्राणीमात्र पर करुणा बरसाई हो। जिसने पर्यावरण में ही ईश्वर देखा हो। जिस वेस ने महात्मा गांधी, डॉ. बाबासाहेब आंबेंडकर जैसे महापुरुषों के सपनों को साकार करने का सपना देखा हो। आज उसी भारत को पुनः भारतीय जीवन मूल्यों को अपने भीतर आत्मसात करना होगा। स्वतंत्रता पूर्व हम देखते है कि सभी भारतवासियों ने अपने जाति—धर्म से परे होकर इस देश की आज़ादी हेतु मिल-जुलकर स्वतंत्रता की ज्योति जलाकर भारत देश को बेड़ियों से मुक्त किया था। उस समय सबके मन में किसी अन्य भाव के स्थान पर केवल एक ही भाव था, वह था भारतीय होने का। वह न हिंदू था, ना मुस्लिम और ना किसी अन्य धर्म, पंथ, जाति के बंधन में जकड़ा था। वह विशुद्ध रूप से भारतीय था। भारतीयता को परिभाषित करते हुए डॉ. आंबेडकर ने कहा— "मैं प्रथम भारतीय हूँ, मध्य में भी भारतीय हूँ और जीवन के अंत तक मैं भारतीय ही रहूँगा।" भारतीय अर्थात् भारत से संबंधित। जिसने भारतीयता को अपने भीतर आत्मसात किया हो वही भारतीय। भारतीय शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाकर भारतीयता शब्द का निर्माण हुआ है। भारतीयता से तात्पर्य उस विचार या भाव से है जिसमें भारत से जुड़ने का बोध होता है जो भारतीय संस्कृति से संबंधित हो। भारतीयता का प्रयोग राष्ट्रीयता को व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है। यह देश बहुभाषी देश है। विविध जाति, धर्म, पंथ के लोग यहाँ बसते हैं। उनकी अपनी भाषा, संस्कृति, रीति–रिवाज तथा परंपराएँ हैं। इन विविधताओं के बावजूद वे सभी एकमाला में पिरोए हुए हैं, जिसे हम भारतीयता कहते हैं। जिसने संयम, अनाक्रमण, सहिष्णुता, त्याग, परोपकार, औदार्य, रचनात्मकता, सह-अस्तित्व, बंधुत्व आदि जीवन मूल्यों अपने भीतर आत्मसात किए हुए हैं। इन जीवन-मूल्यों को निष्ठापूर्वक जीना तथा उनकी सतत् रक्षा करना ही सच्ची भारतीयता है। वसुधैव कुटुम्बकम्, मानवता, त्याग की भावना, परोपकार,

40 / भारतीय साहित्य और अनुवाद

सहिष्णुता, अहिंसा, अध्यात्मिकता, सर्वधर्म समभाव, एकता और राष्ट्रीयता आदि अवधारणाओं को ही भारतीय साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त

कर मानव कल्याण को नई दिशा देकर भारतीयता को साकार किया है। प्राचीन काल से ही देखे तो हमें यह ज्ञात होता है कि यह जीवन मूल्य हमारे संस्कृति का परिचायक है। इस देश में पंचमहाभूतों की पूजा की जाती है। पत्थर को भी ईश्वर मानने वाला मनुष्य किसी और का अहित नहीं कर सकता। महात्मा बुद्ध ने मानवता का महत्व बताकर, अष्टांग मार्ग के माध्यम से दुःख के निराकरण का मार्ग बताया है। येद, भगवतगीता, कुरान, बाईबल, त्रिपिटक आदि धार्मिक ग्रंथ जीवन जीने की शैली सिखाते हैं। जातक कथाएँ, पंचतंत्र की कहानियाँ नैतिकता की सीख देती है। प्रत्येक काल के साहित्यकाराँ ने अपनी कृतियों में इन जीवन-मूल्यों को प्रेषित कर मानवता, समानता, प्रेम, करुणा, बंधुत्व आदि भावों का पोषण किया। भारत देश इन संतों की भूमि रही है। संतों ने अपनी वाणी से इस देश को भारतीयता के मूल्यों से सींचकर अध्यात्म और दर्शन द्वारा मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। आदिकाल में साहित्यकारों ने चरितकाव्यों के माध्यम से राष्ट्रीयता के बीज बोए परंतु यह राष्ट्रीयता का संकुचित रूप था, केवल उनकी रियासत तक सीमित था। भक्तिकालीन साहित्य में भक्ति की धारा बही और अध्यात्म के मार्ग से भारतीय जीवन-मूल्यों का संरक्षण किया गया। इस काल में साहित्य के माध्यम से दो विभिन्न संस्कृतियों का मेल किया गया। अपने साहित्य के माध्यम से तुलसीदासजी ने कहा था ''कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहॅ हित होई" कीर्ति, कविता और सम्पत्ति वही उत्तम है जो लोकहित में हो। जिस तरह गंगा नदी जहाँ–जहाँ से बहती है, वहाँ–वहाँ सबका कल्याण करती जाती है। अतः साहित्य ऐसा होना चाहिए जो मनुष्य में जीवन-मूल्यों को पिरोकर राष्ट्र को मज़बूत करने की दिशा में काम करता हो। इस काल में नैतिक शिक्षा का विशेष महत्त्व था। संत रामदास ने कर्म का महत्व बताते हए कहा कि, "आधी ते करावे कर्म / कर्म मार्गे उपासना / उपासका सापड़े ज्ञान / ज्ञाने मोक्ष चि पावणे।।" अर्थात मनुष्य ने सदैव कर्म करते जाना चाहिए क्योंकि कर्म ही उपासना का मार्ग है। जिससे उपासक को ज्ञान की प्राप्ति होती है और ज्ञान से ही मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है। संत तुकाराम समानता के संदर्भ कहते है कि ''मुंगी आणि राव। आम्हां सारखाची जीव। 12. 11/ गेला मोह आणि आशा। कलिकाळाचा हा फास।।1।।/सोनें आणि माती। आम्हां समान हे चित्तीं। 1211/तुका म्हणे आलें। घरा वैकुंठ सगळे''। 1311³ अर्थात जिस तरह चीटी से राजा तक सभी जीव समान है, उसी तरह सोना और मोती का मूल्य भी हमारे लिए समान है। जिस घर में संपूर्ण स्वर्ग अवतरित हुआ हो

भारतीय साहित्य और अनुवाद / 41

उसके लिए संपूर्ण विश्व ही एक समान होगा। इस काल में नीतिगत शिक्षा के माध्यम से जीवन मूल्यों को सामान्य जन में प्रसारित करने का कार्य किया गया।

विभिन्न काल में हमारे संतो और साहित्यकारों ने भारतीयता के जीवन-मूल्यों को अपने साहित्य में पिरोकर नैतिकता का संदेश दिया है। जब-जब देश की जनता अंधविश्वास, कुरीति, बुराई की ओर अग्रसर हुई तब–तब साहित्यकारौं ने मानव-कल्याण को महत्व देकर समता, बंधुता के मार्ग का अनुसरण कर सबको नई दिशा दी। प्रारंभिक काल से लेकर रीतिकाल तक साहित्यकारों ने इन जीवन-मूल्यों को अपनाया। इसके बावजूद देश में भारतीयता के जीवन-मूल्य तो थे लेकिन भारतीयता नहीं थी क्योंकि देश कई रियासतों में बॅटा था। रियासतों में बॅटे देश की प्रजा के लिए उनकी रियासत ही उनका देश था। उनकी देशभक्ति उनके रियासत तक ही सीमित थी। प्रजा वर्णव्यवस्था के जाल में ऐसी उलझी कि कभी एक नहीं हो पायी। इस अनेकता के कारण ही इस देश पर कई विदेशी ताकतों की सत्ता रही परंतु इस भूमि की एक विशेषता यह भी रही कि जो भी यहाँ आया इस मिट्टी को उसने अपनाया और यही का हो गया। इसी कारण इस देश में विविध जाति, धर्म, पंथ, वर्ण के लोग बसते हैं। रीतिकाल में अंग्रेजों, फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों ने इस देश पर अपनी सत्ता स्थापित की। वे आए तो इस देश में व्यापार करने परंतु यहाँ के सत्ताधीश बन गए, जिसका मूल कारण था हमारे देश के लोग जाति, धर्म, वर्ग, पंथ में बॅटे हुए थे। उनकी इसी अनेकता का लाभ उठाकर, 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनाकर इन विदेशी शासकों ने इस देश को गुलाम बनाया। इन गुलाम लोगों को भारतीय होने का अहसास दिलाया। उनके स्वाभिमान, आत्मसम्मान को झकझोरा। रियासतों में बॅटे इस देश को भारत के रूप में पुनः एक सूत्र में बाँधकर हम सब को भारतीय होने का गौरव प्रदान किया। जब हमें यह एहसास हुआ कि हम सभी भारतीय हैं तब 1857 ई. में अंग्रेजों के खिलाफ आज़ादी की पहली लड़ाई बहादुरशाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहेब पेशवा, अंग्रेजों के अधीन भारतीय सिपाहियों की विद्रोही सेना के द्वारा संयुक्त रूप से लड़ी गई। इस लड़ाई में भले ही भारतीयों की हार हुई, परंतु इस लड़ाई ने हिन्दू हो या मुस्लिम या किसी अन्य वर्ग, पंथ सभी को भारतीय होने का एहसास दिलाया। उन्हें यह महसूस कराया कि हम अलग-अलग रियासतों के नहीं इस भारत भूमि के नागरिक हैं।

अंग्रेजों के सत्ताधीश होने पर उन्हें यह देश चलाने के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता होने लगी, फलस्वरूप उन्होंने शिक्षा का मार्ग सभी के लिए खोल दिया। जो शिक्षा भारत में कभी केवल एक वर्ग तक सीमित थी, वह सभी

42 / भारतीय साहित्य और अनुवाद

जाति, धर्म, पंथ के लिए खोल दिए गए। जब यह लोग उच्च शिक्षा हेतु विदेश गए तब उन्हें यह एहसास हुआ कि वे कितने पिछड़े हुए हैं। जब वे भारत लौटे तो उन्होंने कई सुधारवादी आंदोलन चलाए। कई बुराइयॉ, कुरीतियॉ का विरोध किया। इन सुधारवादी आंदोलन में राजाराम मोहन रॉय, न्यायमूर्ति रानडे, महात्मा ज्योतिबा फुले, डॉ. आंबेडकर आदि प्रमुख थे। इस सुघारवादी परिवर्तन की धारा पर भारतीय साहित्यकारों ने अपनी कलम चलाई। सियारामशरण गुप्त अपनी कविता 'एक फूल की चाह' में 'छुआछूत' की समस्या का प्रखरता से विरोध करते हुए कहते है कि 'पापी ने मंदिर में घुसकर / किया अनर्थ बड़ा भारी/कलुषित कर दी है मंदिर की/चिरकालिक शुचिता सारी।/ऐ, क्या मेरा कलुष बडा है/देवी की गरिमा से भी,/किसी बात में हूँ मैं आगे/माता के महिमा के भी/मों के भक्त हुए तुम कैसे/करके यह विचार खोटा?/मों के सम्मुख ही माँ का तुम/गौरव करते हो छोटा'' जनता में राष्ट्रीयता के बीज बोने में पत्रकारिता का विशेष महत्त्व रहा है। बंगाल में प्रकाशित 'बंगाल गजट' अर्थात 'हिक्की गज़ट' अखबार के संपादक जेम्स ऑगस्ट हिक्की जो स्वयं ब्रिटिश नागरिक थे। पत्रकारिता को ही अपना धर्म एवं कर्म समझकर उन्होंने अंग्रेजों की नीतियों के ख़िलाफ अपने अखबार के माध्यम से आवाज़ बुलंद की। भले ही उन पर कई प्रतिबंध लगाए गए परंतु उन्होंने अपनी आवाज़ को मुखर ही रखा। उनकी इसी निर्भयता ने भारतीय पत्रकारों को नई दिशा दी। जो आवाज़ 1857 ई. की लड़ाई में कहीं दब गई थी, स्वाधीनता का स्वर सुप्त रूप में रहने वाले भारतीयों के मन में था। उस स्वर को इस अखबार ने हवा दी। भारतीय पत्रकारों और साहित्यकारों के डर को समाप्त किया। उनके स्वाभिमान, आत्मसम्मान को जगाकर उन्हें भारतीय होने का अहसास दिलाया। जहाँ उन्होंने अपने लेख, कहानी, निबंध, काव्य, प्रहसनों के माध्यम से भारतीयता के स्वर को बुलंद किया। बालमुकुंद गुप्त ने 'शिवशंभु के चिट्ठे' प्रसिद्ध व्यंग्य लेख के माध्यम से ब्रिटिश शासकों पर तीखा प्रहार किया। लोगों के भीतर आज़ादी के बीज बोने हेतु हमारे स्वतंत्रता सेनानी प्रयास कर रहे थे तो दूसरी ओर अधिकतर भारतीय साहित्यकार अपनी लेखनी से जनता में जनजागरण कर रहे थे। अधिकांश साहित्यकारों की रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना तथा समाज सुधार पर आधारित थी। जैसे जयशंकर प्रसाद रचित नाटक 'चंद्रगुप्त', मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती', सियाराम गुप्त की 'एक फूल की चाह' भारतेंदु हरिश्चंद्र की 'भारत दुर्दशा', सुभद्राकुमारी चौहान की 'झॉसी की रानी', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का 'पराजय गीत', रामनरेश त्रिपाठी का 'मानसी' काव्य संग्रह, रामधारीसिंह दिनकर की अधिकांश रचनाएँ जैसे 'कुरुक्षेत्र', 'हुँकार' आदि राष्ट्रप्रेम तथा जनजागरण

भारतीय साहित्य और अनुवाद / 43

से भरी हैं। बंगाली साहित्यकारों में रवींद्रनाथ ठाकुर, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, डी. एल. रॉय आदि साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं से देश को नई दिशा दी। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की रचना 'वंदेमातरम' राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति का अप्रतिम उदाहरण है। मराठी साहित्यकारों में केशवसूत, वीर सावरकर, कुसुमाग्रज की अधिकतर रचनाएँ भारतीयता के मूल्यों को ही आत्मसात करती हैं। कांतीचा जयजयकार' इस कविता के माध्यम से एक राजबंदी के मन में व्यक्त विचारों को अभिव्यक्त किया है-"कशास आई, भिजविसि डोळे, उजळ तुझे भाल/रात्रीच्या अर्थात उद्याचा असे उष:काल/ सरणावरती आज आमुची पेटतात प्रेते/ उठतिल त्या ज्वालांतुन भावी क्रांतीचे नेते/ लोहदण्ड तय पायांमधले खळाखळा तुटणार/ आई. खळाखळा तुटणार/ गर्जा जयजयकार क्रांतिचा गर्जा जयजयकार *

अर्थात वह राजबंदी अपनी माँ से कहता है कि हे माँ! अपनी आँखों में ऑसू क्यों लाती हो? आप गर्व करो। अंधकार के गर्भ से कल की सुबह आएगी। जब हमारी आहुति दी जाएगी तब उसकी ज्वाला से क्रांति के नए नेताओं का जन्म होगा। गुलामी की बेड़ियों, जो हमारे पैरों में हैं वह टूटेंगी। क्रांति का जयघोष होगा। हम यह बात जानते हैं जब हमारे प्रेरक क्रांतिकारी भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु को जब फॉसी दी गई, तब उनके इस बलिदान से देश के नवयुवकों में क्रांति की ऐसी चिंगारी जली कि जिसकी अग्नि में ब्रिटिश साम्राज्य भरम हो गया।

मंचिलीशरण ने 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से मानवता को अभिव्यक्त करते हुए कहा है- मनुष्य मात्र बंधु है' यही बड़ा विवेक है./ पुराणपुरूष स्वयंगु पिता प्रसिद्ध एक है।/ फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद है/ परंतु अंतरैक्य में प्रमाणमूत वेद है।/ अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे./ वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।'* स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में किस तरह विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग, पंध के लोगों ने अपने आप को भूलकर केवल यह याद रखा कि मैं भारतीय हूँ। उस दृष्टि से प्रयास कर मिलजुलकर, एकदत्तरे का राज पकड़कर, कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। असंभव सी प्रतीत होने वाली अपनी आज़ादी को प्राप्त कर इस देश में लोकतंत्र स्थापित किया।

आजादी के संघर्ष के दौरान हम भारतवासियों ने बड़े ही सुंदर सुनहरे सपने देखे। जब देश आज़ाद होगा, तब इस देश में रामराज्य स्थापित होगा। चारों तरफ खुशहाली होगी। इस देश में अमन-चैन स्थापित होगा। अनिव्यक्ति की आजादी होगी। तब हम बड़े गर्द से, अपने अधिकार से, स्वामिमान के साथ, आत्मविश्वास के साथ एक स्वर में कह सकेंगे कि हम आज़ाद हैं। यह हमारी

44 / भारतीय साहित्य और अनुवाद

भारत भूमि है, जिस पर हमें गर्व है। परंतु रामराज्य की कल्पना, कल्पना ही रह गई और मोहमंग की स्थिति का निर्माण हुआ। देश भ्रष्टाचार में लिप्त हो गया। जो नेता कमी हमारे आवर्श थे, वे ही कमजोर और भ्रष्ट हो गए। जैसे ही यह देश आज़ाद हुआ, यह मुल्क दो हिस्सों में बॅट गया। एक भारत बना तो दूसरा पाकिस्तान। यह विभाजन अपने साथ भीषण हिंसा और रक्तपात लाया। कत्लेआम में हजारों लोग मारे गए, लाखों लोगों को अपना घर–बार, कारोबार छोड़कर अनजान स्थानों पर जाना पड़ा। विभाजन की इस त्रासदी को यशपाल ने अपने उपन्यास 'झूठा सच' और भीष्म साहनी ने 'तमस' में दर्शाया है। जो लोग एक–दूसरे से कंधे से कंधा मिलाकर आज़ादी की लड़ाई लड़े थे, वे एक–दूसरे के खून के प्यासे हो गए, एक–दूसरे को शक की निगाहों से देखने लगे, आज भी मक की यह स्थिति हमें दिखाई देती है।

1962 में चीन ने 'हिन्दी—चीनी भाई—भाई' का नारा लगाकर हमारी पीठ पर खंजर घोंपा। हम पर आक्रमण किया। इस दौर में हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से पुनः देशभक्ति का बीज बोया। हमारे राष्ट्रसंतों ने अपने भजनों द्वारा भारतीयता की लौ जगाई। राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज ने सरहद पर भारतीय सिपाहियों के समक्ष भजन गाते हुए कहा—"आओ चीनियों, मैदान में, देखो हिंद का हाथ।/ अब हिंद जाग गया तुम्हारे साथ।।/ भारत से लड़नेवाले हो? ईश्वर से जरा तो डरो।/ अरे सुन लो।/ क्यों संसार दुखाते हो? शांति भंग करवाते।/ सब देश को क्रोघ चढ़ाकर, अपना नाश कराते हो।"" हमारे देश में कई विदेशी शासक आए। आर्य हो या यूनानी, चाहे मुगल हो या ब्रिटिश, चाहे फांसीसी हो या पुर्तगाली जो भी यहाँ आया यहीं का हो गया। जो यहाँ आकर यही बस गया, वो ही भारतीय कहलाया। परंतु आज मनुष्य, मनुष्य में ही मेद किया जा रहा। उन्हें विभिन्न आधारों पर चाहे जातिगत हो या धर्मगत, चाहे मौगोलिक हो या भाषागत बॉटा जा रहा। मनुष्यता का भाव कहीं खो गया ऐसा महसूस होने लगा। अहिंसा के स्थान पर हिंसा बढ़ने लगी। मनुष्य से अधिक पशु को महत्त्व दिया जाने लगा। देशभक्त और देशद्रोही के संबंध में सकारात्मक कम और नकारात्मक चर्चा और अधिक छिड़ने लगी। ऐसा लगने लगा कि देश दिशाहीन होने लगा है। इस स्थिति को व्यक्त करते हए कृष्णा सोबती ते 20 जून 2017 के 'शब्दांकन' वेब पत्रिका 'हशमत' में हशमतीय रौली में कहा-" वैदिक है क्रांति - क्रांति / भारत में क्रांति / नहीं है यह कोई भ्रांति/यह महान धारणा है/ वैदिक क्रांति/गायों को बचाओं/ और नागरिकों को मारो/हिंदुत्व की क्रांति-और न कचहरी/न पुलिस/इत्ते अच्छे दिन/इस देश पर/फिर कब आवेंगे।" हम यह जानते हैं जब भी समय आया साहित्यकारों

भारतीय साहित्य और अनुवाद / 45

ने अपनी भूमिका को बखूबी निभाया है। निर्भयता से बेखौफ होकर उन्होंने सरकार के खिलाफ़ अपनी आवाज़ बुलंद की। चाहे आज़ादी का दौर हो, चाहे युद्ध का वातावरण, साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से इस देश को नई दिशा दी। वर्तमान में साहित्यकारों को पुनः उस दिशा में बढ़ना होगा, पुनः भारतीयता के बीज बोने होंगे। पुनः अतियथार्थवाद, मनोवैज्ञानिकतावाद, अश्लीलता से बाहर निकलकर आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद को अपनाना होगा। अपने साहित्य के द्वारा दिशाहीन नवयुवकों को सही दिशा देकर, उन्हें जागरूक कर इस देश के विकास में सहयोग करना होगा। जाति, धर्म, वर्ग, पंथ से उठकर उन्हें मानव होने का एहसास दिलाना होगा। मनुष्य को मनुष्य बनाना होगा तभी यह देश महान बन सकता है। देश की महानता देश की जनता पर निर्भर है। साहित्यकार जनता को जागरूक बनाता है, मनुष्य बनाता है, और इस देश को भारतीयता की माला में पिरोकर महान बनाने में योगदान दे सकता है।

संदर्भ

- हनुमानप्रसाद पोद्दार, श्रीरामचरितमानस बालकाण्ड, गोरखपुर, गीताप्रेस, उनतीसवॉ पुनर्मुद्रण, सं. 2068, पृ.क्रं. 17
- संपादन डॉ. शरयू तायवाड़े,डॉ. राजेंद्र वाटाणे, डॉ. कोमल ठाकरे, युगप्रवर्तक संत तुकाराम रामदास, रामदासाची व्यावहारिक शिकवण (डॉ.कृष्णराव साकुळकर), नागपुर, विजय प्रकाशन, प्रथमावृत्तिः 12 दिसंबर 2010, पृ. क्रं. 185
- लेखक डॉ. किशोर सानपे, प्रा. मनोज तायड़े, तुकाराम व्यक्तित्व आणि कवित्व, मुंबई, लोकवाड्ःमय गृह, चौथी आवृत्ति, ऑगस्ट 2001, पृ. क्रं. 99–100
- स्पर्श भाग 1, सियारामशरण गुप्त, एक फूल की चाह, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंघान और प्रशिक्षण परिषद 2006, नई दिल्ली, संस्करण दिसंबर 2015, पृष्ठ क्रं. 106–107
- संपादक बा. भ. बोरकर, शंकर वि. वैद्य, रसयात्रा (कुसुमाग्रज), पुणे, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, प्रथम आवृत्ति, 1969, पृ. क्रं. 69
- स्पर्श भाग-2, मैथिलीशरण गुप्त, मनुष्यता, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद 2007, नई दिल्ली, संस्करण दिसंबर 2015, पृष्ठ क्रं. 21
- संपादन प्रो. डॉ. माया सिंह, काव्य कुसुम काव्य संग्रह, पुष्प की अभिलाषा (माखनलाल चत्र्वेदी), इलाहाबाद, जयभारती प्रकाशन, संस्करण: 2006, पृ. क्रं. 11,

डी.एम.डब्ल्यू.पी.डब्ल्यू.एस.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, कामठी मार्ग, टेका नाका, नागपुर—26 मो.नं. 9921286071 ईमेल : sumedh2911@gmail.com AMAJ

1-22

Akshara Multidisciplinary Research Journal Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

Akshara Multidisciplinary Research Journal Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

September 2021

Special Issue 02 Vol. VI

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका

अतिथि संपादक डॉ. राजेंद्र उमेकर प्राचार्य बी.एम पारील कोलेज, परतवाडा

कार्यकारी संपादक

बी.गजानन चरहाण प्रधान सचिव महाराष्ट्र हिंही परिषद ग्रो. श्रो.जिजावराव पाटील अध्यक्ष महाराष्ट्र हिंदी परिषद प्री. डॉ. अरुण घोगरे हिंदी विभागाण्यक बी.एस.पाटील कॉलेज, परतवाडा



Akshara Publication Plot No 143 Professors colony. Plot No 143 Professors colony. Near Biyani School, Jammer Road, Bhusarwal Dist Jalgaon (Maharashtra)42520)

E-155N 2582-8429



Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Referred International Research Journal SHF Impact- 5.54

September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

Editorial Board

-: Chief & Executive Editor:-

Dr. Girish Shalik Koli Dongar Kathora Tal. Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Coda: 425301 Mobile No: 09421682612 Website:www.nimrj.com Email:aimri18@gmail.com

-: Co-Editors :-

- · Dr. Sirojiddin Nurmatov, Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Lizbekistan
- ♦ Dr.Vivek Mani Tripathi, Assistant Professor, Faculty of Afro Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- Dr.Maxim DemchenkoAssociate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow, Russia
- Dr.Chantharangsri P. Yanakorn, Assistance ProfessorSongkhla, Thailand
- Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan, Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan Yemen.
- Dr. Vijay Eknath Sonje, Assistant Professor (Hindi) D. N. College, Faizpar [M. S.]
- Mr. Nilesh SamadhanGuruchal, Assistant Professor (English)Smt. P. K. Kotecha. Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- Dr. Shaikh Aafaq Anjum, Assistant Professor (Urdu) Nutan Maratha College. Jalgaon, [M. S.] India.
- Mr. Dipak Santosh Pawar, Assistont Professor (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5 54



TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

International Society for Research Activity (ISRA)



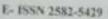
Journal-Impact-Factor (JIF)



Bigital Anilor Mentiller-Daughoir Strivin

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for any consequences arising from the exercise of Information contained in it.





Akshara Multidisciplinary Research Journal Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJI

September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

SJIF Impact- 5.54

Sr.No	Index Title of the Paper & Author's Name मीराकांत की पाली दुल्हनवाली' कहानी संग्रह में नारी चेतना की सार्चक तलाश- डॉ. राजेंद्र उमेकर 'यमदीप' उपन्यास में चित्रित किन्नर और नारी विमर्श- डॉ. अरुण प्रोग्ये	
1	मीराकांत की पाली दुल्हनवाली' कहानी संगढ़ है जह के	Pg.No
2	'यमदीप' उपन्यास में चित्रित किन्नर और नारी विमर्श- डॉ. अरुण घोगरे 'समय सरगम' उपन्यास में चित्रित किन्नर और नारी विमर्श- डॉ. अरुण घोगरे	07
3	'समय सरगम' उपन्यास में लिखित जन्म की	09
4	स्त्री अस्मिता की तलाश करती आयावत्या ()	12
5	स्त्री अस्मिता की तलाश करती आत्मकथा-'अन्या से अनन्या'- प्रो. अनिल साळुखे / अमोल मॉर 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में सामाजिकता-प्रो.डॉ. जिजाबराव पार्टील	15
6	मानवीय रिश्तों की उलझन - 'अन्या से अनन्या '- डॉ.संजय विक्रम ढोडरे	18
7	'आवा' उपन्यास में चिनित जगी जिल्ली के ठाठ	21
8	'आवा' उपन्यास में चित्रित नारी विमर्श के विविध आयाम- डॉ.महेंद्र रघुवंशी निर्मला पतल के कारता में आदित्यारी न्वी विविध आयाम- डॉ.महेंद्र रघुवंशी	2.4
9	निर्मला पुतुल के काव्य में आदिवासी सी जीवन -डॉ.गौतम कुवर हिम्मतवाली इपिल -प्रो. डॉ. जयश्री गावित	27
10	(जरान) एक आया जिल्लामा वा विजय के कि	32
22020	'जहानू' एक आत्मनिर्णयात्मक उपन्यास- डॉ. गजानन चव्हाण	-34
11	चित्रा मुद्रल की कहानियों में दाम्पत्य जीवन की समस्याएँ -डाँ. अल्पेशभाई एच. गामीत	37
12	ाकनारी के अधुत जावन का ममस्यशा चित्रण र यमदीप', डॉ. अणोक णामगत मगते	39
13	मत्रया पुष्पा के उपन्यासा में नारी चितन- डॉ. अभयकमार रमेग खेरनार	42
14	किलनिकल ट्रायल के शिकार मरीजों और उनके परिवार की मर्मातक पीड़ा का परामर्श गिनी पिमा' डॉ. विजय एकनाथ सोनजे	45
15	दलित नारी की शोषण मुक्ति की गाथा - गेशकंजे का दर्द - डॉ. सनीता एन. कावळे	48
16	मीनाक्षी स्वामी कृत "भूभल" उपन्यास में कानून व्यवस्था बनाम जन-चेतना -डॉ. मुगेन्द्र राय	51
17	21वीं सदी के हिंदी साहित्य में महिला विज्ञान लेखिका- सत्य नारायण प्रसाद	55
18	21वीं सदी में चित्रा मुद्रल की कथा-यात्रा- डॉ. दिनेश प्रसाद साह	59
19	सूर्यबाला के साहित्य में अभिव्यक्त नारी चेतना- डॉ.आभा सिंह	62
20	प्रवासी स्त्री कविता में जीवन यथार्थ का चित्रण -डॉ. प्रिया ए.	65
21	"नगाडे की तरह बजते शब्द " काव्य संग्रह में आदिवासी विमर्श- प्रो. देविदास क. बामणे	矽
22	इक्कीसवीं सदी का महिला लेखन : मैत्रेयी पुष्पा और अलका सरावगी के उपन्यासों में नारी संवेदना एव नारी मुक्ति -डॉ. मेदिनी अंजनीकर	73
23	खुरदुरी ग्रथेलियाँ : खुरदुरे यथार्थ की कविताएँ- अर्चना अच्यप्पन	76
24	अंजना संघीर के काव्य संग्रह 'अमरीका हड्डियों में जम जीती है' में चित्रित भारतीयों को वेदना- डॉ.चित्रा मिलिंद गोस्वामी	80
25	चित्रा मुद्रलः सृजन के विविध आयाम- डॉ.यशोदा मेहरा	83
26		86
_	The state of the s	90
27	21 बी सदी के उपन्यास लखन में माहलाओं के नुरुषक वालकवि लक्ष्मण सुरंजे सुशीला टाकभीर के साहित्य में नारी चेतना- प्रोफेसर डॉ.बालकवि लक्ष्मण सुरंजे	93
28	सुशीला टाकभीरे के साहित्य में नारी चतना- प्राफसर आजालवाज राज कु सुधमा मुनिंद्र जी की कहानियों में चित्रित महिला-प्रो,डॉ.संजयकुमार शर्मा / भारती राजधर निकम सुधमा मुनिंद्र जी की कहानियों में चित्रित महिला-प्रो,डॉ.संजयकुमार शर्मा / भारती राजधर निकम	96
29 30	सुषमा मुनिंद्र जी की कहानियों में चित्रित महिला-आ.डा.स मयखुमार चित्रा मुद्रल कृत पोस्ट बॉक्स न. 203 नालासोपारा : एक किन्नर की घर वापसी का आख्यान- चित्रा मुद्रल कृत पोस्ट बॉक्स न. 203 नालासोपारा : एक किन्नर की घर वापसी का आख्यान-	99
	में केला रागी	102
31 32	मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में चित्रित समस्याएं- डॉ. कंचन शर्मा शिवानी की कहानियों में नारी चितन के विविध आयाम -डॉ. अशफाक इब्राहीम सिकलपर	106



Akshara Multidisciplinary Research Journal Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal SJI E- 186N 2582-5429

September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

SJIF Impact-5.54

33	stating net raper & Author's Name	Pg.No
34	Title of the Paper & Author's Name इक्कीसवी सदी की कहानियों में भी विमर्श - प्रा. डॉ. शालिनी च. बाटाजे 21वीं सदी के हिंदी कहानी लेकर में चल के	109
35		111
36		114
37	21 वीं सदी के महिला उपन्यासकारों के साहित्य में चित्रित नारी चिट्रोह - डॉ. प्रेमा विश्वनाथ गाडवी सुशीला टाकभौर के काव्य में नारी जिला, जे	117
-	सुशीला टाकभौर के काव्य में नारी चित्रण-डॉ, बाळासाहेब पगारे	120
38	All the all all all decided approximately ap	123
39	र के स्वतं के 1841 साहत्य में महिला लेखन की भूमिका 'अन्या से अनन्या 'के विशेष संदर्भ में -	125
40	भणाल पाण्ड के संग्रहत्य में कामकाजी जायता की प्रिणनि के ि रे ह	128
41	AUGIO AIMI MI AIRANG GUARTH & Start an more of and a	131
42	पति-पत्नों के टूटते रिश्तों की कहानी - 'एक कहानी यह भी '-	135
	हीं से बंग विक्रम सोको । महीका स्वानमा नाम है।	103
43	indicited data and cleaner - designed in a fair and the server and	139
44	'फिल्मरों की जिल्दगी का दर्पण - अस्तित्व की तलाश में सिमरन'- डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल	143
45	उपा प्रियंवदा के उपन्यासों में चित्रित नई सामाजिक स्थिति एवं बदलते नैतिक मूल्य – डॉ. गीतिका एस. तथर	145
46	मुदुला गर्ग के उपन्यास 'कटगुलाब' में सी विमर्श, डॉ. अर्जिया सेघट अफमर आली	151
47	भाषा, शिल्प, सौंदर्य और आस्वाद की अभिनव कवपित्री 'अनामिका' -डॉ. सजित खांडेकर	154
48	२१ वों सदी की हिन्दी कवयित्रियों के काव्य में नारी वित्रण- डॉ. सहदेव वर्षाराणी निवृत्तीराव	157
49	डा, नीरवा माधव की कहानी 'बेठन' में शैक्षिक समस्या- डाँ, रेविता बलभीम कावळे	160
50	इक्कीसवी सदी की हिंदी कविता में थी- डॉ. मालती घोडोपन्त जिदे	163
51	तृणा मकत्री कृत 'आगात्र' काव्य संग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन - डॉ. समेध यी. नागदेवे	165
52	ममता कालिया का 'दौड़' उपन्यास: इक्कीसवीं सदी का दर्पज- डॉ. अशोक आनंदराव साळखे	168
53	राजी सेंड की कहानियों में समसामयिकता बोध- डॉ. रत्ना शर्मा	170
54	'हत्या' कहानी में किसान-जासदी- डॉ. ज्ञानेश्वर गाडे	173
55	अलका पाठक का व्यम्प शिखर वार्ता. डॉ. अंशमान च. मिश्र	176
56	मुदला गर्म के मौरा नाची' कहानी संग्रह में नारों विभर्श- डॉ. बनिता व्यंवक पवार - निकम	179
57	21 वॉ सदी का महिला कथा लेखन- प्रो. डॉ. सुरेखा प्रेमधंद मंत्री	182
58	रमणिका गुप्ता के सौता और मौसी उपन्यासों में चित्रित नारी संघर्ष की गावा-डॉ. रघुनाथ ना. वाकळे	185
59	वेश्या जीवन की व्यथा : 'सलाम आखिरी'- डॉ. कॉवळे सुरेंद्रनाथ भानुदासराव	188
60	ममता कालिया की कहानियों में नारी जीवन - डो. अजित चुनिलाल चव्हाण	190
61	२१ वों सदी के हिंदी साहिता में महिला लेखन की भूमिका- प्रा. अनिता किसन पाटोळे	193
62	२१ जो सदी के हिंदी साहित्य लेखन में उपा पादव की भूमिका- डॉ. बैछ श्रीराम हनुमंत	195
63	२१ जी सदी के हिंदी साहित्य में महिला लेखन की भूमिका और प्रतिरोध -डॉ.घनझ्याम वि. ताडेवार	198
64	प्रभा खेतान के उपन्यास में महिला लेखन की भूमिका-डॉ.गजानन गणपत वानखडे	202
65	प्रभा खतान क उपन्यास में नारी विमर्श (चाक उपन्यास के विशेष संदर्भ में ') मैंदेवी पुष्पा के उपन्यास में नारी विमर्श (चाक उपन्यास के विशेष संदर्भ में ') - डॉ.अनिता भिमराव काकडे (चाव्हाण)	204

E-155N 2582-5429



51

Akshara Multidisciplinary Research Journal Petr-Reviewed & Refereed International Research Journal SJIF Impact- 5.54

September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

तूणा मुकर्जी कृत 'आगाज़' काव्यसंग्रह का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. सुमेध पी, नागदेवे

डी. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू. एस. कला एवं वाणिक्य महाविद्यालय, टेका नाका, कामठी मार्ग, नागपुर। मोबाइल : १९२१२८६०७१, Email: sumedh2911/@gmail.com

त्रोध माराश: पुरुषप्रधान संस्कृति में वहाँ महिलाओं को किसी भी तरह का अधिकार नहीं था। न उनके पास जिसा का अधिकार वा व मंपनि रखने का अधिकार था। यह अपने आप को अभिव्यक्त भी नहीं कर पातों थी। धर्म के नाम पर उनका शोषण किया जा ता बा। समय बदला महिलाएँ शिखित होने लगी। उनके भीतर आत्मसम्मान और आत्मविश्वास जगा। वह अपने आपको को इभिव्यक्त करने लगी। अभिव्यक्ति की यह कलम उन्हें साहित्य के क्षेत्र में ले आयी और साहित्य को नई दिशा मिली। प्रत्येक खनाकार भावनाओं और अनुभूतियों के समीकरण से जो उसके बेहन में आता है वह ही अपने लेखन के माध्यम से प्रेषित करता हे रचनाकार की भावनाएँ जब शब्द रूपी सेतु बनाती है तब नवसूजन का आरम्भ होता है। तूणा मुकर्जी की अपनी संवेदना, उनकी अनुभूति इस काव्य संग्रह में शब्द बनकर सामने आयी है। इनके काव्य में अनुभूति की गहराई लय बद तरीके से अभिव्यक्त होती हुई रिखाई देती है। कविता पढ़ते समय यह महसूम होता है कि कवयित्री के जीवन में आए उतार- चढ़ाव में जो कुछ देखा, महसूस किया उसे बढ़ी इंमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है। शास्त्रीय दुष्टिकोण से यदि इस संग्रह की चर्चा को तो इसमें नई कविता की कहा दिखाई पड़ती है।

संकेताक्षर : आत्मसम्मान, नवस्जन, नई कविता की छटा, आतरिक लय, प्रगतिशील विचार, यथार्थ वर्णन

पुनो-मुनो से महिलाओं के साथ धर्म के नाम पर, परंपराओं के नाम पर, रीति रिवाजों के नाम पर उत्पोहन ही हुआ है। इस पुरुषप्रधान संस्कृति में उनका कोई स्थान नहीं था वह चार दोवारी में ही केद थी। उन्हें किसी भी तरह का कोई अधिकार नहीं बा न उनके पास शिक्षा का अधिकार था न संपत्ति रखने का अधिकार था। वह अपने आप को अभिव्यक्त भी नहीं कर पाती थी। पर्म के नाम पर उनका शोषण किया जा रहा था। समाज में सती प्रथा, बाल विवात जैसी कुप्रथाएं प्रचलित थी। वह केवल उपभोग मां के नाम पर उनका शोषण किया जा रहा था। समाज में सती प्रथा, बाल विवात जैसी कुप्रथाएं प्रचलित थी। वह केवल उपभोग मां की वस्तु बन यई थी। वर्ता तक कि वह अपने निर्णय स्वय नहीं ले सकती थी। उसके स्वाधिमान और आत्यसम्मान को बार-स्व कुचला वाता था। ऐसे समय महात्या फुले, साविधीबाई फुले का उदव हुआ। उन्होंने शिक्षा के द्वार महिलाओं के लिए खोली। उन्हें शिक्षा लेने हेतु प्रोरत किया। समय बदलता गया महिलाएँ शिक्षित होने लगी। उनके भीतर आत्यसम्मान और आत्यविधास बगा अब उसने अपनी चार दीवारी को लाया और धीरे - धीरे समाज में कई क्षेत्रों में अपनी भूमिकाए, निभाने लगी। साहित्य के हेव में भी महिला साहित्यकारों का उदय हुआ। हिंदी की महिला कहानीकार बंग महिला (राजेन्द्रवाला योष) इनकी सन १९०७ में सरवती पत्र में प्रकाशित 'दुलाई वाली' कहानी की हिंदी की प्रथम कहानी होने का श्रेय दिया जाता है। सुमित्रा कुमार सिन्हा विदी की पहलो नारीवादी साहित्यकारों के अपने लेखन के माध्यम से समाब को नई दिशा देने का कार्य किया है। अपने बाहित्य के प्राव्तो वोशी देसे कई महिला साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाब को नई दिशा देने का कार्य किया है। अपने साहित्य के माध्यम से इन महिला साहित्यकारों ने अपने लोखन के माध्यम से समाब को नई दिशा देने का कार्य किया है। अपने बाहित्य के माध्यम से इन महिला साहित्यकारों ने अपने आपको अभिव्यक्त किया है, अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त किया। इसी कडी को समुद करती हुई तुणा मुकर्जों का 'आयाव' काव्यससंग्रह जो कि २०१३ में प्रकाशित हुआ, जिसमें उनकी अपने आत्यभिव्यक्ति हो अभिव्यवित हुई है।

प्रत्येक रचनाकार अपनी रचना को जन्म देने से पूर्व यह भी नहीं जानता कि वह क्या लिखनेवाला है। भावनाओं और अनुभूतियों के समीकरण से जो उसके जेहन में आठा है वह हो अपने लेखन के माध्यम से प्रेषित करता है। रचनाकार की भावनाएँ अनुभूतियों के समीकरण से जो उसके जेहन में आठा है वह हो अपने लेखन के माध्यम से प्रेषित करता है। रचनाकार की भावनाएँ बब शब्द रूपी सेतु बनाती है तब नवसूजन का आरम्भ होता है। तूणा मुकर्जी की अपनी संयेदना, उनकी अनुभूति इस काव्य संग्रह में शब्द बनकर सामने आयों है। इनके काव्य में अनुभूति की गहराई लय बढ़ तरीके से अभिव्यक्त होती हुई दिखाई देती है। स्वयं कवर्षियी ने 'अपनी बात' कविता में अपने आपको अभिव्यक्त करते हुए कहा है कि 'अपने जज्वातों को / नज्मों, कविताओं को बालना / कोई बड़ी बात मही / बहुत कम इसान समझ पाते हैं / बयान कर पाते हैं / रख पाते है / अपने जज्वाता / यूँ सरे आम सबके लामने / बो हौसला, जिगर / सब में नहीं / यूँ अपने आप को पेश करना '' अपने जापको अभिव्यक्त फरना, अपने जज्वातों

E- ISSN 2582-5429



Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal September 2021, Special Issue 02, Vol. VI SJIF Impact- 5.54

को, नगमों को, लफ्जों में ढालना आसान नहीं होता। उन्होंने अपनी अनुभूति को शब्दों में ढालकर अपने काव्य को पुष्पित और पल्लबित किया है। लेखिका के सन्दर्भ में डॉ. रमेश अग्रवाल (संपादक, दैनिक भास्कर, अजमेर) जी ने कहा है कि *'तृणा ने अपनी* लगभग हर कविता के माध्यम से अपने भीतर बैठी अलग-अलग तृणाओं को अलग-अलग रंग में अभिव्यक्त किया है। संवेदनाओं का आवेग एवं भावनाओं का प्रवाह किसी बहते हुए संगीत का सा आभास देता है तथा किसी छंद की कमी महसूस करने नहीं हेता।^{**} 'आगाज़' काव्य संग्रह में छोटी - छोटी प्रभावशाली १२० कविताएँ संकलित है। जो विविध विषयों को अपने भीतर समाबिष्ट किए हुए है। चाहे रिश्तों की मिठास हो, या प्रकृति प्रेम, जीवन का अकेलापन हो या ख़ामोशी के लफज, एहसासों की इअन हो या आसुओं का सैलाब उनके काव्य में विविध विषयों की छटाएँ दिखाई देती है। अतुकांत अथवा गद्य कविता की सबसे उ बडी विशेषता यह है कि इसमें भावनाओं की एक आतंरिक लय मौजूद होती है जो धारा प्रवाह के साथ बहती है। कविता पढ़ते समब यह महसूस होता है कि कवयित्री के जीवन में आए उतार- चढाव में जो कुछ देखा, महसूस किया उसे बड़ी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से यदि इस संग्रह की चर्चा करे तो इसमें नई कविता की छटां दिखाई पड़ती है।

•ग्रहण' कविता में हमे प्रगतिशील विचार नज़र आते है। जीवन में लगे ग्रहण को कवयित्री इस तरह बयां करती है *'आधे-*अधूरे / अँधेरे उजाले / ग्रहण लगा रे / कहाँ-कहाँ / जहां –तहाँ / जहन में ग्रहण / नज़र में ग्रहण / सोच में / तबीयत में / खुशियों में /सुख में / इश्क में / नजदीकियों में / तेरे मेरे / साथ गुजरते / लम्हों में / हर पूरे को / छूटा सा / अपना ग्रास बनाता सा / ग्रहण का /अँधेरा आधा / उजाला आधा / ग्रहण लगा रे।'' यह कविता उनके जीवन में आए संघर्षों को दर्शाता है। किस तरह उनके जीवन में ग्रहण लगा उसी को बड़ी बेबाकी के साथ उन्होंने इस कविता में अभिव्यक्त किया।

आज हम देखते हैं कि मनुष्य ने अपने आप को मजहब के नाम पर, धर्म के नाम पर बांट दिया है। कवयित्री ने 'हिस्सा' नामक कविता में बंटवारे के दर्द को व्यंजित करते हुए कहा है 'बंटवारा होगा तो / क्या-क्या बैंटेगा / साथ के / पल- छिन / शब सहार / शामें / गोधूलि लग्न / सुबह की मीठी हवा / ख्वाबों वाली रात / सोते से लम्हे / बौराए से लम्हे / ऊँघते से बड़बड़ाते से / च्य - च्य पल / बोलते चीखते खामोश लफन / सलबटें, करवटें, आं;स्, सिसकियाँ / मुस्कान, हं;सी, ठहाके / हाथ थामती सी / हाथ छड़ाती सी जिंदगी" अर्थात बेंटवारा होगा तो न जाने क्या-क्या बेंटेगा सुबह हो या रात हो, शाम हो या गोधूलि बेला हो, सुबह की मीठी हवा हो या जीवन की मुस्कान, हाथ थाम जिंदगी हो या हाथ छुड़ाती जिंदगी न जाने कितनी चीजों का बँटवास होगा। कवयित्री ने उस बँटवारे के दर्द को अभिव्यक्त किया है।

इश्क कल क्या था, आज क्या है इसी यथार्थ को बयां करती उनकी कविता 'साझेदारी' अपने आप में एक अनुठी मिसाल प्रस्तुत करती है। चूकि आज इश्क बड़ा खुदगर्ज है इसी को व्यक्त करते हुए कवयित्री कहती है 'अपने हिस्से की ज़मीन / अपने हिस्से का आसमान /अपने हिस्से के ख़वाब / अपने हिस्से के अफ़साने / अपने हिस्से की जलन / अपने हिस्से की घुटन / ये सब क्या कम थे जो / आज तुम्हारे हिस्से की ज़मीन / तुम्हारे हिस्से का आसमान / तुम्हारे हिस्से की ह_ीसी / तुम्हारे हिस्से के ख़्वाब / तुम्हारी घुटन / तुम्हारी जलन /हर उस ख्याल /उस सोच का / हिस्सा चाहिए / क्योकि आज इश्क / बेहद खुदगर्ज है / कल की बात और थी।"े यह यथार्थ स्थिति का वर्णन करती है।आज इरक भी किस तरह अपने स्वार्थ में टिका है। वह अपने साथी के दुःख, उसकी घुटन को अपनाना नहीं चाहती। यह यथार्थ स्थिति का वर्णन करती है। एक समय प्रेम में आदर्श दिखाई देता था आज वह आदर्श स्वार्थ में बदल गया, निस्वार्थ प्रेम कही खो गया।

'अपनी हद के परे' कविता में कवयित्री जीवन के बंधन से मुक्त होकर जी भर के साँस लेना चाहती है स्वयं को पाना चाहती है। वह एक ऐसी दुनिया में जीवन जीना चाहती है जो बंधन से परे हो। कवयित्री की शब्दों में 'अपने ख्यालों से / अपने रवायतों से / अपने बानी बनायी / सजी सजाई दुनिया से / एक बार निकल / जी भर ले साँस / आँखे खोल / धूप खुद पर पड़ने दे / छाँव आने दे / बूँदे गिराने दे / देख चारों और / हम बहां; हैं / जहा तेरी हद ख़त्म होती है।" उनकी एक और कविता है 'ज्वालामुखी' जिसमे वर्तमान जीवन के भय रूपी संघर्ष को दर्शाया गया है। मनुष्य अपने अपमान को, अपनी पौड़ा को,अपने संघर्ष को, अपनी घुटन को अपने भीतर ही दबाता चला जाता है। धीरे धीरे वह घुटन ज्वालामुखी में तब्दील हो जाता है। जिसके फटने पर ही उसकी भीतर की आग, उसकी तपीश शांत हो सकती है। उसके फटने में ही उसकी सार्यकता है। कवयित्री के शब्दों में 'आँखों में / सुलगता धुआँ / अंगीठी जलती हो / अंदर जैसे चौबीसाँ घंटे / कितना जलता होगा अंदर / कितना तपता होगा / वो बाहर / एक जीता ज्वालामुखी, वो / बस फटने का इंतजार / उसे भी मुझे भी। " क्रोध के बाहर आने पर ही मस्तिष्क शांत हो सकता है। एक असीम शांति तब ही प्राप्त हो सकती है जब मन शांत हो जाता है। इनके काव्य में कुछ नए प्रयोग दिखाई देते है।

E-155N 2582-5429



Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Referred International Research Journal

SJIF Impact- 5.54

September 2021, Special Issue 02, Vol. VI

ल्ली कुछ कविताएँ तो बहुत ही छोटी है इन्हें काव्य कहे या कुछ और परन्तु उनमें भावनाओं का आवेग है, संवेदनाओं का प्रवाह 1 छोटी सी पंक्ति में ही बडी बात कहने का सामर्थ्य उनकी कविताओं में हमें दिखाई देता है।

जागात' उनका प्रथम काल्यसंग्रह है जहाँ कुछ अच्छी बाते है तो कुछ कमियां भी रह गई है। कई स्थानों पर वर्तनी सम्बन्धों दोष रह पए है। कई स्थानों पर ऐसा लगता है कि विराम चिढ़ गलत स्थान पर लग गया है। कई कविताओं में एकाकी चित्रों में बहुतता है। कई स्थानों पर कविता के शीर्षक तथा पृष्ठभूमि चित्र में तालमेल नहीं है। परन्तु इसके बावजूद कविता में इनकिंगों की अनुभूति, उनकी अभिव्यक्ति नदी की धारा के समान बहते हुए एक अलग ही संसार में ले जाती है। जहां भावनाओं बा आवेग है, मन की मिठाम है। इनके काव्य में हमें अधिकतर माधुर्य और प्रसाद गुण दिखाई देते है। शासीय दृष्टिकोण से चर्चा बे इनके रहे कविता की छटा दिखाई देती है। वो भी उनके काव्य को पढता है वह उसी में खो जाता है, भाव विभोर हो जाता है। इन बासा धाणी महिला द्वारा हिंदी में काव्य सूजन और उर्दू के अच्छे ज्ञान के साथ यह काव्य संग्रह अपने आप में सुन्दर संयोग क

गान्धे :

१. ज्ञावरी बात, काम्य संग्रह 'आगाज', व्हाइट पेज पश्चितकेशन, गुरगाँव, वर्ष २०१३, पृ. १ २ प्रेम्साहना, आगाज काम्य संग्रह,प्रताहट पेज पश्चितकेशन, गुरगाँव, वर्ष २०१३ १ प्राण, काम्य संग्रह 'आगाज', प्रताहट पेज पश्चितकेशन, गुरगाँव, वर्ष २०१३, प्. ३४

. किस्सा, काम्य संग्रह 'आग्राज', म्हाइट पेज पब्लिकेशन, गुरगाँव, वर्ष २०१३, प. ५०

् साझेटारी, काव्य संग्रह 'आगाज', व्हाइट पेंड पबिलकेजान, गुरगौंग, वर्ष २०१३, पू. ५८-५९

1. अवनी हट से परे, काच्च संग्रह 'आगाल', लगहट येज पब्लिकेजन, गुरगाँव, वर्ष २०१३, पु. १९७

October-l	November 2022
	nternational Research Fellows Association's RESEARCH JOURNEY International E-Research Journal Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
	Issue-306 Multidisciplinary Issue



Chief Editor -Dr. Dhanraj T. Dhangar, Assist. Prof. (Marathi) MGV's M.S.G. Arts, Science & Commerce College, Malegaon (Camp), Dist – Nashik [M.S.] India. Executive Editors : Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani) Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English) Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi) Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)



For Details Visit To : www.researchjourney.net



'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal Issue 306: Multidisciplinary Issue Peer Reviewed Journal Oct.-Nov.-2022

October-November 2022

E-ISSN - 2348-7143

International Research Fellows Association's

RESEARCH JOURNEY

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal

Issue-306

Multidisciplinary Issue

Chief Editor -Dr. Dhanra (T. Dhangar, Assist. Prof. (Marathi) MGV's M.S.G. Arts, Science & Commerce College, Malegaon (Camp), Dist – Nashik [M.S.] India.

Executive Editors :

Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English) Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi) Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi) Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible, answerable and accountable for their content, citation of sources and the accuracy of their references and bibliographies/references. Editor in chief or the Editorial Board cannot be held responsible for any lacks or possible violations of third parties' rights. Any legal issue related to it will be considered in Yeola, Nashik (MS) jurisdiction only.

- Chief & Executive Editor

Swatidhan JNTERNATIONAL DUBLICATIONS For Details Visit To: www.researchjourney.net

*Cover Photo : From the Paper 'Preservation of Myxomycetous Biodiversity from Navegaon Bandh, Dist. Gondia, Maharashtra (India) : II, N. V. Chimankar.

 C All rights reserved with the authors & publisher
 Price : Rs. 1000/

 1
 Website - www.researchjourney.net
 Email - researchjourney2014gmail.com

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal E-ISSN :

many Impact Factor : 6.625 (SHF)

Issue 306: Multidisciplinary Issue Peer Reviewed Journal

2348-7143 Oct.-Nov.-2022

Editorial Board

Chief Editor -Dr. Dhanraj T. Dhangar, Assist. Prof. (Marathi) MGV's Arts & Commerce College, Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors: Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English) Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi) Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi) Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

Co-Editors -

- * Prof. Mohan S. Dean faculty of Arts, Delhi University, Delhi, India
- Prof. Milena Brotaeva Head, Classical East Department, Sofia University, Sofia, Balgeria
- * Dr. R. S. Sarraju Center for Translation Studies, University of Hydeabad, Hydrabad, India
- * Mr.Tufail Ahmed Shaikh- King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- Dr. Anil Dongre Head, Deptt. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] India
- Dr. Shailendra Lende R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- Dr. Dilip Pawar BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik. [M.S.] India -
- * Dr. R. R. Kazi North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] India
- * Prof. Vinay Madgaonkar Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- * Prof. Sushant Naik Dept. of Konkani, Govt. College, Kepe, Goa, India
- * Dr. G. Haresh Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- Dr. Munaf Shaikh N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon [M.S.] India
- Dr. Sanjay Kamble -BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesari [M.S.]
- * Prof. Vijay Shirsath- Nanasaheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.] India
- Dr. P. K. Shewale BoS Member (SPPU), MGV's LVH College, Panchavati-Nashik [M.S.] India
- * Dr. Hitesh Brijwasi Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.] India
- Dr. Sandip Mali Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktainagar [M.S.] India **
- * Prof. Dipak Patil S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindhkheda [M.S.] India * Prof. K. M. Waghmare - Librarian, Anandibai Raorane College, Sawantwadi [M.S.] India Prof. Vidya Surve-Borse- MGV's LVH Arts, Sci. & Com.College, Panchavati-Nashik [M.S.] India Advisory Board -

- * Dr. Marianna Kosic Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- Dr. M.S. Pagare Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- * Dr. R. P. Singh -HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- Dr. S. M. Tadkodkar Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- * Dr. Pruthwiraj Taur Chairman, BoS, Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- * Dr. N. V. Jayaraman Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore * Dr. Bajarang Korde - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- * Dr. Leena Pandhare Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road - Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

Review Committee -

- Dr. J. S. More BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J.Somaiyya College, Kopargaon
- * Dr. S. B. Bhambar, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesari
- Dr. Uttam V. Nile BoS Member (NMU, Jalgaon) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada * Dr. K.T. Khairnar- BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- * Dr. Vandana Chaudhari KCE's College of Education, Jalgaon
- Sont Sayyed Zakir Ali, HoD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- * Dr. Sanjay Dhondare Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- * Dr. Amol Kategaonkar M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258

2

Website - www.researchjourney.net

Email - researchjourney2014gmail.com

	Impact Factor : 6.625 (SIIF) Peer new		
1			
	IN THE PARTY OF A RANGE OF THE PARTY PRINT PARTY OF THE P		
13	Values and Uses by Tribals From the Forest of Western	day A. Khairnar	16
04		INTA PLILATION & AL	24
05	Effect of Yoga on Emotional Intelligence among Senior in Nashik District Dr. Ramesh Nikam, Mr. Kis	hor Ankumekar	
06	Impact of Socio-Economic Factors on the Health of Tribe Gadehireli District (2017-2018)	Dr. Sonali Wagh	
07	Social Changes in Rehabilitated Village Tahakali, Dist-J (Case Study of Rehabilitated Village of Hatnur Irrigation		51
08	Development of Multimedia Programme in History Sub Secondary Level Prof	ect at the . Chhaya Gadwe	55
09	An Application Study of Self-Made Teaching Aids for I Constructivism of Concept Teaching Learning of Scient Subject at Secondary Level		61
10		Prashant Pagade	70
	हिंदी विभाग		
11	लोकगीतों के संकलनकर्ता के रूप में गोविन्द चातक	डॉ. शोभा रावत	73
12	मुषम बेदी द्वारा लिखित 'पानी केरा बुदबुदा' में सह-अस्तित्व वे नारी डॉ. राजेश भ	त अभाव में छटपटाती सामरे, सरला चिमणकर	77
13		ती सांगोळे, जरुण आहेर	
14		प्रा. शांताराम बळबी	
15	स्मार्ट क्लासरूम : संकल्पना एवं यथार्थ	डॉ.सुमेघ नागदेवे	64
	मराठी विभाग		
16	and the second stand and the second	प्रा. जितेंद्र पगा	ee 7
17	THE REAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PROPERTY ADDR	प्रा. कृष्णा पाढव	ft 104
_18	A REAL AND AN AND AND A REAL AND A	श्री. अनिल गो	रे 108
19	service and the service of the service of the service of the	डॉ. योगिता पाटी	ल 113
21		श्री. दिपक किन	
21	and the second state of the second states of states	तुप्ती तोडन	
2	2 दलित कादंबरी : स्वरुप व वैशिष्ट्ये	डॉ. प्रबीण ताटे देलर	
2	and the state of t	डॉ. सलतान पव	M
2	4 आशा बगे यांच्या कादंबऱ्यामधून स्त्री मनाचा वेघ घेण्याची	प्रवृत्ती डॉ. ज्ञानेश्वर सोन	127
	3 Website - www.researchjourney.net	Email - researchjo	

	'RESEARCH JOURNEY' Internal Issue 306: Impact Factor : 6.625 (SJIF)	Multidisciplinary Issue Peer Reviewed Journal	E-ISSN : 2348-7143 OctNov2022
25	'आयदान' एक स्त्रीवादी दलित आत्मकथन	डॉ. संगीता पैकेकरी	141
26	१९९० नंतरच्या कादंबरीचा स्त्रीवादी विचार	डॉ. शीतल कोरडे	148
27	नव्वदोत्तर मराठी ग्रामीण कादंबरीतील राजकीय चित्रण	ा डॉ. छाया तांबे	154
28	'वाट तुडवताना' या आत्मकथनातील वैचारिकता	डॉ. अतुल चौरे	159
29	'रान पेटलं तसं मन पेटलं' मधील कवितांचे वेगळेपण	डॉ .भाऊसाहेब गमे	166
30	'अधिवास' : सुंद्राचा संघर्षमय जीवनप्रवास प्रा.रोहिणी	ो मदने, डॉ. ज्ञानेश्वर वाल्हेकर	170
31	उषा प्रभुणे यांचे प्रवास वर्णन 'अमेरिका आणि अमेरिकन	स': काही दृष्टिक्षेप मनीषा औटी	183
32	चरित्र - आत्मचरित्र : संकल्पना व स्वरूप	गौतम बनसोडे	189
33	सत्याग्रहाचे शास्त्र	डॉ. पंडित लावंड	192
34	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे राजकीय विचार : एक चि	कित्सक अभ्यास डॉ. लता आंदे	195
35	शिक्षणशास्त्र महाविद्यालयातील शिक्षक प्रशिक्षणार्थीं मध महाविद्यालयीन सुरक्षा आपत्ती व्यवस्थापन व आराखड प्रशिक्षणाची परिणामकारकता अभ्यासणे	ये (बी.एड्) शालेय व घाबाबत घेतलेल्या डॉ.सनीश प्रातील	201
36	वर्मिन (उपद्रवी) वन्यजीव आणि वन्यजीव संरक्षण काय	The more the	206
37 38	उद्योजकता : बेरोजगारी दूर करण्यासाठी काळाची गर प्रा	ज जिंदरा देवे. वॉ. सोसनस्य का	
	महाराष्ट्रातील साखर कारखादारी समोरील समस्या एव شجاع کامل : ناندیڑ کے ادبی افق کا ایک ہے باک قلمکار	क अभ्यास पल्लवी मोरे	219

223 ڈاکٹر سید حسین زیدی Dr. Syed Husain H. Zaidi

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher. - Chief & Executive Editor

4	Website – <u>www.researchjourney.net</u>	Email - researchjourney2014gmail.com

E-ISSN: 'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal Issue 306: Multidisciplinary Issue **Peer Reviewed Journal** Impact Factor : 6.625 (SJIF)

2348-7143 Oct.-Nov.-2022

स्मार्ट क्लासरूम : संकल्पना एवं यथार्थ

डॉ. सुमेध पानाचंद नागदेवे

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू. एस. कला, वाणिज्य, विज्ञान महाविद्यालय, टेका नाका, कामठी मार्ग नागपूर मोबाईलः 9921286071 Email :- sumedh2911@gmail.com

सारांशः

वर्तमान में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है। अतः शिक्षा में तकनीकी प्रयोग से वह अधिक सोद्देश्यपूर्ण हुआ है। अतः शिक्षा क्षेत्र में तकनीक के सभी हार्डवेअर तथा सॉफ्टवेअर उपागमों को प्रयोग से शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाया जा रहा है। इसी दृष्टि से स्मार्ट क्लास रूम का महत्त्व बढ गया है। वर्तमान में कई एजुकेशनल कंपनियाँ है, जो स्मार्ट क्लासरूम की व्यवस्था कर रहे है। भारत में सर्वप्रथम दून पब्लिक स्कूल में स्मार्ट क्लास रूम आया जिसमें प्लाज़मा स्क्रीन के प्रयोग के साथ Smart Assesment System (SAS) का प्रयोग हुआ। इसके पश्चात तक्षशीला, डी.पी.एस. पीतांपुरा (दिल्ली), कॅम्ब्रीज आदि प्रख्यात शालाओं में स्मार्ट क्लास रूम को अपनाया गया। स्मार्ट क्लास रूम के माध्यम से अध्ययन, अध्यापन, अधिगम प्रक्रिया अधिक सरल, स्पष्ट तथा रोचक हो गई है। जिससे छात्रों की ज्ञानात्मक, ग्रहणात्मक शक्ति में विकास के साथ-साथ उसकी चिंतन प्रक्रिया, विचार सरणी को नयी दिशा मिली है। स्मार्ट क्लास रूम के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया सोद्देश्यपूर्ण तथा छात्रों की गुणवत्ता, चिंतन प्रक्रिया, बढाने हेतु लाभदायक हुई है। छात्रों की रूचि का परिष्कार होकर उसकी बौद्धिकता को नयी दिशा मिली। इसके माध्यम से छात्रों का स्मृति स्तर, बोध स्तर तथा चिंतन स्तर में वृद्धि होती है। छात्रों की ज्ञानात्मक शक्ति, ग्रहणात्मक शक्ति का विकास होता है।

संकेत बिंदुः आधुनिक पद्धति, एजुकेशनल कंपनिया, स्वरूप, विशेषता, प्रक्रिया, अवयव, खामियाँ तथा सुझाव

आज के इस स्पर्धात्मक युग में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रणाली की आवश्यकता है। जिस तरह विश्व तकनीक के क्षेत्र में आगे बढ़ता जा रहा है उसे देखते हुए तो यही लगता है कि तकनीक ने प्रत्येक क्षेत्र में अपना प्रभाव डाला है। शिक्षा प्रणाली भी इससे अछूती नहीं रही है। तकनीक क्षेत्र के सभी हार्डवेअर तथा सॉफ्टवेअर उपागमों का प्रयोग कर मानव शिक्षण प्रणाली को अधिक सुगम और बोधगम्य बना रहा है। इन्हीं उपागमों के प्रयोग से शिक्षण प्रक्रिया को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा रहा है। इसी दृष्टि से भारतीय शिक्षण व्यवस्था में स्मार्ट क्लासरूम का महत्त्व बढ़ रहा है। IQAC (Internal Quality Assurance Cell) ने छात्रों की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु स्मार्ट क्लास रुम पर जोर दिया। उनका मानना है कि ऐसी कक्षाएँ छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में अधिक लाभदायक सिद्ध होगी। अतः उन्होंने शैक्षणिक स्तर पर ऐसे क्लासरूम को बढावा देने की बात की है।

यह एक ऐसी आधुनिक पद्धति है जो छात्रों को योग्य शिक्षा के साथ अध्ययन, अध्यापन प्रक्रिया को प्रभावी, सुगम तथा बोधगम्य बना सकती है। इसके माध्यम से छात्रों की ज्ञानात्मक तथा ग्रहणात्मक शक्ति में विकास होता है। जिससे छात्र अपने विचार को नया रूप, नया आकार दे सकते हैं। तकनीकी माध्यम से शिक्षा देने से छात्रों की ग्रहणात्मक शक्ति में वृद्धि होती है। वर्तमान में स्मार्ट क्लासरूम के कारण हम

> Email - researchjourney2014gmail.com Website - www.researchjourney.net



'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal Issue 306: Multidisciplinary Issue E-ISSN : Impact Factor : 6.625 (SJIF) Peer Reviewed Journal

A RAY AND S LOOP THE REAL

अपनी शैक्षणिक प्रणाली में सूचनात्मक सामग्री, 3D, 2D एनिमेटेड मॉडेल, पी.पी.टी. और ऑडियो, वीडियो के प्रयोग से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दे सकते हैं। यह एक अभिनव और संप्रेषणात्मक प्रक्रिया है। इस तरह की शिक्षण प्रणाली हमारे भीतर ना केवल रूचि बढाती है वरण हमारे विचार सरणीं को नयी दिशा देती है।

शिक्षण अधिगम में तकनीकी के प्रयोग से शिक्षा को प्रभावशाली और सोदेश्य बनाया जा सकता है। "शिक्षण प्रक्रिया की स्मृति स्तर के चिंतन स्तर तक व्यवस्था की जाती है। प्रमुख तीन शिक्षण स्तरों के रूप में शिक्षण व्यवस्था की जाती है- स्मृति स्तर, बोध स्तर तथा चिंतन स्तर का शिक्षण" इन तीनों स्तरों को प्रभावशाली बनाने हेतु सभी श्रव्य-दृश्य माध्यमों का प्रयोग बढऩे लगा। कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया में और अधिक गति आयी। ''परंपरागत विचारधारा के अनुसार दृश्य-श्रव्य सहायक सामग्री के उपयोग पाठ को रोचक बनाने के लिए किया जाता है। क्योंकि इनके द्वारा सीखने में एक से अधिक ज्ञान-इन्द्रिया कार्य करती है। दृश्य-श्रव्य सामग्री के प्रयोग से छात्र पाठ में अधिक रूचि लेते हैं और सीखने के लिए तत्पर रहते हैं।" जैसे-जैसे तकनीक क्षेत्र में विकास हुआ वैसे-वैसे शिक्षण प्रक्रिया में भी इन विकास को अपनाया गया इसी दृष्टि से एक नए उन्नत क्लासरूम पर विचार किया जाने लगा। फलस्वरूप परंपरागत कक्षा से अलग एक नए उन्नत स्मार्ट क्लास रूम का जन्म हुआ। भारत में सन 2004 में Educom द्वारा स्मार्ट क्लास रूम का पदार्पण हुआ। Educom K-12 एजुकेशन कंपनी है। संपूर्ण विश्व में सन 1994 से अब तक 32000 हजार से भी अधिक शाला में लगभग 20-9 मिलियन छात्र स्मार्ट क्लास रूम के माध्यम से अध्ययन कर रहे हैं। अन्य एजुकेशनल कंपनी जो स्मार्ट क्लासरूम की व्यवस्था कर रहे हैं, उनमें Pearson Education Services Ltd., Educom Technologics, Tata Interactive, Next Education, Elearn India, HCL आदि प्रमुख है। भारत में सर्वप्रथम दून पब्लिक स्कूल में स्मार्ट क्लास रूम आया जिसमें प्लाज़मा स्क्रीन के प्रयोग के साथ Smart Assessment System (SAS) का प्रयोग हुआ। इसके पश्चात तक्षशीला, डी.पी.एस. पीतांपुरा (दिल्ली), कॅम्ब्रीज आदि प्रख्यात शालाओं में स्मार्ट क्लास रूम को अपनाया गया। वर्तमान में भारत के 560 जिलों की लगभग 12000 शालाओं में 'स्मार्ट क्लास रूम' को अपनाया गया है। स्मार्ट क्लास रूम एक ऐसी उन्नत अत्याधूनिक तकनीक की सहायता से बनी कक्षा है जिसके माध्यम से अध्ययन-अध्यापन को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। जिसमें नवीनतम मीडिया प्रस्तुतिकरण पर बल दिया जाता है। अर्थात स्मार्ट क्लासरूम से तात्पर्य शिक्षा में प्रयोग किए जानेवाले सभी हार्डवेअर तथा सॉफ्टवेअर उपागमों के साथ ही उन्नत Touch Screen स्मार्ट बोर्ड तथा स्टायलेस पेन से हैं। इन अत्याधुनिक तकनीक के प्रयोग से ही स्मार्ट क्लास रूम का परिचालन होता है।

वर्तमान में स्मार्ट क्लास रूम ज्ञान का केंद्र बन गया है। वह ग्रंथालय से भी जुडा होता है। इंटरनेट के माध्यम से किसी भी विषय को स्क्रीन पर कुछ समय में ही ला सकता है। शिक्षक किसी भी विषय के वास्तविक स्त्रोत सामग्री को मल्टीमिडिया, श्रव्य-दृश्य माध्यमों द्वारा तुरंत प्रस्तुत कर अपने विषय को रोचक और प्रभावी बना सकता है। स्मार्ट क्लासरूम के माध्यम से किसी भी विषय को जैसे-गणित, विज्ञान, भाषा, पर्यावरण शास्त्र, सामाजिक शास्त्र, भूगोल, इतिहास, बिज़िनेस स्टडीज़ आदि में प्रभावी रूप से अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया जा सकता है।

"आज हमारे देश में सुव्यवस्थित प्रकाशन उद्योग है जिसमें डेस्कटॉप प्रकाशन, किट्स और शिक्षण सामग्री के उत्पादन की योग्यताएँ और ज्ञान भी शामिल है। यहीं नहीं ऑडियो तथा वीडियो प्रस्तुतिकरण,

95 Website – <u>www.researchjourney.net</u> Email - <u>researchjourney2014gmail.com</u>

Issue Impact Factor : 6.625 (SJIF)	ternational E- Research Journal 306: Multidisciplinary Issue Peer Reviewed Journal	E-ISSN : 2348-7143 OctNov2022
. शिक्षण-प्रणाली में पारदर्शिता आती है।		
, विषय में रोचकता आती है।		
, अध्ययन अध्यापन में Multi Media Material		
. 3D और 2D Multimedia मॉडेल का प्रयोग क		
. शिक्षण पद्धति अधिक संप्रेषणात्मक तथा रोचक बनती		
 संपूर्ण शिक्षा एवं शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावपूर्ण 	एवं ग्राह्य बनाता है।	
9. शिक्षण तकनीक के विभिन्न प्रकारों का चयन तथा प्र		
भर. शिक्षक, छात्र एवं अधिगम के बीच समायोजन स्थापि किराण अधिक सरज सामन के बीच समायोजन स्थापि		
भाषा अधिक सरल, स्पष्ट, रोचक एवं प्रभावशाली		and the state of
१४ण Smart Touch Screen White Board क स्पष्ट कर सकते हैं।	ज प्रयाग हाथ स तथा पाइटर स कर	मुख्य ।बदुआ का
१५. स्टाइलस पेन का प्रयोग किया जाता हैं।		
१६. इंटरनेट का प्रयोग कर किसी भी विषय को गहन	नता के साथ पढ़ा सकते हैं।	
9७. वीडियों कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से देश विदेश में		शिक्षण लिया जा
सकता हैं।		
१८. एक स्थान से हम इंटरनेट के माध्यम से अन्य	स्मार्ट क्लासरूम से सीधे जुड़ सकते है	ŧ 1
१६. अपने नोट्स सुरक्षित रख सकते हैं।		
२०. इनके द्वारा सीखने में एक से अधिक ज्ञानेद्रियाँ	कार्य करती हैं।	
स्मार्ट क्लास रूम की विशेषताओं को देखते हुए	, यह प्रतीत होता है कि IQAC के	अनुसार छात्रों की

गुणवत्ता बढ़ाने हेतु यह लाभदायक है परंतु इसकी कुछ खामियों को भी हम नजरअंदाज नहीं कर सकते। जैसे-

9. स्मार्ट क्लास रूम हेतू बिजली आवश्यक है। वर्तमान भारत में कुछ शहरों को छोड़ शेष भारत में चाहे गाँव हो या शहर लोडशेडिंग के कारण कहीं न कहीं इस प्रणाली में बाधा निर्माण हो सकती है। २. गाँवों में साक्षरता की कमी के कारण इस तकनीक को समझने में कठिनाई होगी। ३. भाषा जैसे कुछ विषयों को परिपूर्ण रूप से समझाने में स्मार्ट क्लास रूम सक्षम नहीं है। ४. जो नए शिक्षक है उन्हें तकनीकी ज्ञान होने के कारण इसके संचालन में मुश्किल नहीं आएगी परंतू जिन्हें सेवा करते हुए १५ से २० वर्ष हो चुके हैं, तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण इसके संचालन में कठिनाई आएगी।

५. अध्ययन करते समय किसी विषय के स्पष्टीकरण देते समय यदि स्क्रीन पर अचानक कुछ आ जाए या कुछ तकनीकी कठिनाई आ जाए तो अध्ययन अध्यापन में बाधा निर्माण हो सकती है। ६. यदि शिक्षक PPT से स्पष्टीकरण या अध्यापन करा रहा हो और अचानक कम्प्यूटर बंद हो जाए, बिजली चली जाए, तकनीकी बाधा आ जाए तो अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया में बाधा आ जाएगी।

इन खामियों के बावजूद स्मार्ट क्लासरूम अपने उज्ज्वल पक्ष के साथ ज्ञानवर्धन हेतु एक कारगर साधन है जिसके माध्यम से शिक्षण प्रणाली को और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है। सरकार भी आधुनिक तकनीक को अपनाते हुए इस दिशा में प्रयासरत है। ''छात्रों को ज्ञान के स्त्रोतों तक स्वयं पहुँच पाने की, उसकी व्याख्या करने की दिशा तथा ज्ञान की सृष्टि करने की क्षमता बढाई जाए, न कि उसे मात्र

> Website - www.researchjourney.net Email - researchjourney2014gmail.com

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal E-ISSN: Issue 306: Multidisciplinary Issue 2348-7143 Impact Factor : 6.625 (SJIF) Peer Reviewed Journal Oct.-Nov.-2022 एक शिक्षित उपभोक्ता बने रहने दिया जाए।" स्मार्ट क्लासरूम इस दिशा में कार्य करने हेतु समर्थ है वह विद्यार्थी को केवल शिक्षित उपभोक्ता बनाने हेतु नहीं वरण उसके सर्वांगिण बौद्धिक ज्ञान बढ़ाने में सक्षम है। स्मार्ट क्लासरूम की जो खामियों है उन्हें इन सुझावों के द्वारा दूर किया जा सकता है। 9. भारत सरकार ने बिजली की समस्या को दूर करना चाहिए। २. ज्ञान के स्त्रोतों को ढूंढने और ज्ञान का सृजन करने की दिशा में प्रशिक्षण दिया जाए। ३. सभी शिक्षकों को स्मार्ट क्लास रूम संचालन हेतु प्रशिक्षण दिया जाए। ४. गॉव में तकनीकी ज्ञान देने हेतु समिती का गठन किया जाए। ५. शालेय स्तर पर ही तकनीकी जानकारी दी जाए। ६. पंचायत स्तर पर प्रशिक्षण दिया जाए। ७. प्रत्येक शिक्षक को यह प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया जाए। द. शिक्षक को PPT की सामग्री को अन्य स्थान पर भी सुरक्षित रखना चाहिए ताकि शिक्षण प्रक्रिया में बाधा निर्माण ना हो। प्रत्येक शाला तथा महाविद्यालय में स्मार्ट क्लास रूम का प्रशिक्षण दिया जाए। वर्तमान में क्वालिटी एजुकेशन हेतु स्मार्ट क्लास रूम का विशेष महत्त्व है। अतः शिक्षकों को ''मीडिया और तकनीक के माध्यमों से होने वाली अध्ययन पद्धतियों से परिचित करवाना ताकि शिक्षक के शिक्षण-अधिगम के कार्यक्रमों का यह एक अभिन्न अंग बन सके।"*

यथार्थ में देखा जाए तो स्मार्ट क्लास रूम अध्ययन अध्यापन का आवश्यक अंग बन गया है।

जिसके माध्यम से ज्ञानार्जन सुलभ हो पाया है। यह छात्रों की गुणवत्ता बढाने की दिशा में तेजी से काम करता है। इसके उपयोग से शिक्षण प्रणाली को अधिक प्रभावशाली और सोदेश्य बनाया जा सकता है। इसके माध्यम से छात्रों का स्मृति स्तर, बोध स्तर तथा चिंतन स्तर में वृद्धि होती है। छात्रों की ज्ञानात्मक शक्ति, ग्रहणात्मक शक्ति का विकास होकर, उनके विचार को, उनके चिंतन को नई दिशा तथा आयाम देती है।

संदर्भ :-

- श्रीमती आरती दीक्षित, एस. एस. तिवारी, शैक्षिक तकनीकी की आवश्यकताएँ एवं प्रबंध, शिवा प्रकाशन मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, 2003&04, पृ. 09
- डॉ. शिखा चतुर्वेदी, हिन्दी शिक्षण, भाषा एवं साहित्य शिक्षण, विनय रखेजा, C/o. आर. लाल बुक डेपो, मेरठ, प्रथम संस्करण, वर्ष, 2010
- 3. राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, शैक्षिक तकनीकी, सार संक्षेप, NCERT 2009, पृ.11
- 4. राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, शैक्षिक तकनीकी, NCERT, 2009, पृ.17
- 5. राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, शैक्षिक तकनीकी, NCERT, 2009, पृ.17

ISSN 2278-3199

Volume - 11, Issue - 01, January - June, 2022.

Indexing Journal with <u>www.sjifactor.com</u> Impact Factor 7.264 (2021)

If Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed National Research Journal of Social Sciences & Humanities

al Journal on.....

CIAL ISSUES AND PROBLEMS

Chief Editor Dr. C. B. Masram Principal S. N. Mor Arts, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College, Tumsar Dist. Bhandara.

Editor

Dr. Rahul Bhagat

Professor & Head, Department of Sociology, S. N. Mor Arts, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College, Tumsar Dist. Bhandara – 441912



Published By

DEPARTMENT OF SOCIOLOGY

MOR ART, COMMERCE & SMT. G. D. SARAF SCIENCE COLLEGE, TUMSAR, DIST. BHANDARA - 441912.

Email-principalsnmorcollege@rediffmail.com / rjbhagat1968@yahoo.co.in Website - www.snmorcollege.org.in

Phone No. - 07183-233300 / 07183-233301 Mobile - 09422113067 / 09420359657

Peer Reviewed, National Journal on 'Social Issues & Problems', Indexing with www.sjifactor.com / Page I

Volume - 11, Isane - 01, January June, 2022 Parts 2228 Marpaci Factor - 7,264

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed National Research Journal of Social Sciences & Humanities.... 'Social Issues and Problems' 155N 227B 3199 Import Fortur 7.264

EDITORIAL BOARD

Chief Editor: Dr. C. B. Masram.

Principal, S. N. Mor Art, Commerce & Suit G. D. Suraf Science College, Tumur, Dus Rhandwar

Editor: Dr. Rahul Bhagat,

Professor, S. N. Mor Art, Commerce & Smt. G. D. Saraf Science College, Tunnar, Dist Bhumhara-

Editorial Advisory Board -

Dr. Pradeep Aglave, Ex. Head, P. G. Dept. Dr. Ambedkar Thought, R. T. M. N. U. Nogpur Dr. Suresh Waghmare, Ex. Head Dept. of Soci., Rajshree Shahu Maharaj College, Latur (MS) Dr. Jagan Karade, Head Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur (MS) Dr. Sanjay Salunkhe, Department of Sociology, D. B. A. M. University, Aurangabad (MS) Dr. N. T. Kamble, Professor, Department of Sociology, Swami Vevekanand College, Shirur Tajband (M.S.) Dr. Sujata Gokhale, Head Dept. of Sociology, S. N. D. T. University, Mumbai (MS) Dr. Shivcharan Meshram, Principal, Kamla Nehru Govt. Girls College, Balaghat (MP) Dr. B. K. Swain, Ex. Head Department of Sociology, R. T. M. Nagpur University, Nagpur. Dr. Smita Awchar, Ex. Professor, D. B. A. Marathwada University, Aurangabad (MS) Dr. Prakash Bobde, Ex. Professor and Head, Dept. of Sociology, R. T. M. N. U., Nagpur. Dr. Ramesh Makwana, Department of Sociology, Surdar Patel University, Gujrat. Dr. S. P. Gaikwad, Principal, Dayanand College of Arts, Latur. Dr. Archana Jagatkar, Professor & Head, Department of Sociology, New College, Kolhapur. (MS) Dr. Kalyan Sakharkar, Ex. Head Dept. of Sociology, P. N. College, Pusad Dist. Yeotmal (MS) Dr. Arun Chavhan, Head Dept. of Sociology, Vidliyabharti Mahavidhyalaya, Amrawati (MS Dr. Mahendrakumar Jadhao, Head Dept. of Sociology, Night College of Arts & Commerce, Kolhapur.

Editorial Board Member -Dr. R. K. Dipte, Dept. of English, S. N. Mor College, Tumsar. Prof. R. K. Ubale, Dept. of Marathi, S. N. Mor College, Tumvar. Prof. R. O. Belokar, Head Dept. of Pol. Science, S. N. Mor College, Tumsar.

Dr. Saroj Aglave, Ex. Head, Dept. of Sociology, Mahila Mahavidhyalya, Nandanvan, Nagpur. Dr. Dipak Pawar, Head, Dept. of Sociology, Women's College, Nandanvan, Nagpur. Dr. M. V. Kolhe, Principal, Br. Sheshrao. Wankhede College, Mohapa, Disi. Nagpur. Dr. Nalini I. Borkar, Dept. of Sociology, Arts & Commerce Degree College, Petrolpump, (Bhandara) Dr. P. H. Gajbhiye, Head, Dept. of Sociology, N.P. Shivaji College, Mowad Dist.Nagpur Prof. Priyadarshan Bhaware, Head, Dept. of Sociology., Badrinarayan Barwale College, Jalna Dr. Rajkumar Bhagat, Head, Dept. of Sociology., Rajiv Gandhi College, Sadak-Arjuni Dist. Gondia. Prof. Jayendra Pendse, Head, Dept. of Sociology, Sevadal Mahila College, Nagpur. Dr. Ajay Choudhary, Assistant Professor, Deptt. of Sociology, Hislop College, Nagpur.

Peer Reviewed, National Journal on 'Social Issues & Problems', Indexing with www.sjifactor.com / Page II

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed National Research Journal of Social Sciences & Humanities.... 'Social Issues and Problems' ISSN 2278-3199 Impact Factor – 7.264

FER REVIEW COMMITTEE

, Sai Chandrmouli T. (English), Railway Degree College, Secundrabad (AP) Balvindarsing Ghotra (English), Govt. P. G. College, Jind (Haryana) of. Amol M. Khandve, (English) S. N. Mor College, Tumsar Dist. Bhandara. . Bhushan Ramteke (Marathi), Suwalal Patni Mahavidhyalaya, Pulgaon, Dist. Wardha. . Shailendra Lendhe (Marathi), R. T. M. Nagpur University. Nagpur. r. Guruprasad Pakhmode, (Marathi) Ex. Principal, Pragati Mahila College, Bhandara. . Hariprasad Chourasiya (Hindi) Ex. Principal, M. B. Patel College, Salekasa. of. Gajanan Polenwar, (Hindi) Arts, Commerce College, Koradi. of. Mastan Shaha, (Hindi), Department of Hindi, N. M. D. college, Gondia. r. R. R. Sinha (Sociology) Ex. Head Dept. of Sociology, Hislop College, Nagpur. r. Pradeep K. Meshram (Sociology), J. M. Patel College, Bhandara. r. Ashok T. Borkar (Sociology), R. T. M. Nagpur University, Nagpur. r. S. S. Bahekar (Geography), Principal, S. S. Girls College, Gondia. r. Deva Bisen (Geography), M. B. Patel College, Deori Dist. Gondia r. Tarachand Gedam (History) Ex. Professor, Sant Gadge Maharaj College, Hingna. r. Mubarak Qureshi (History), G. B. Mahila College, Tumsar Dist. Bhandara. r. D. D. Kapse (History), Samarth College, Lakhani Dist. Bhandara. ". Madhuri Nasre (Home Economics), S. S. Girls College, Gondia. . Vidhya Thawakar (Home Economics), Ashok Moharkar College, Adyal. of. Bharti D. Katekhaye, (Home Economics), S. N. Mor College, Tumsar Dist. Bhandara of. Vikas Jambhulkar (Political Science), R. T. M. Nagpur University, Nagpur. of. Atul Kadu (Political Science), Bhiwapur Mahavidhyalaya, Bhiwapur. : Sharda Mahajan (Political Science), N. M. D. College, Gondia. : S. S. Meshram (Economics), J. M. Patel College, Bhandara. : Manoj Sonkusre (Economics), M. B. Patel College, Sakoli. : Anuradha Patil (Social Work), Manavlok Social Work College, Ambejogai. . B. R. Deshmukh (Social Work), G. N. Aazad Social Work College, Pusad. : Sanjay Aagashe (Physical Education) S. N. Mor College, Tumsar.

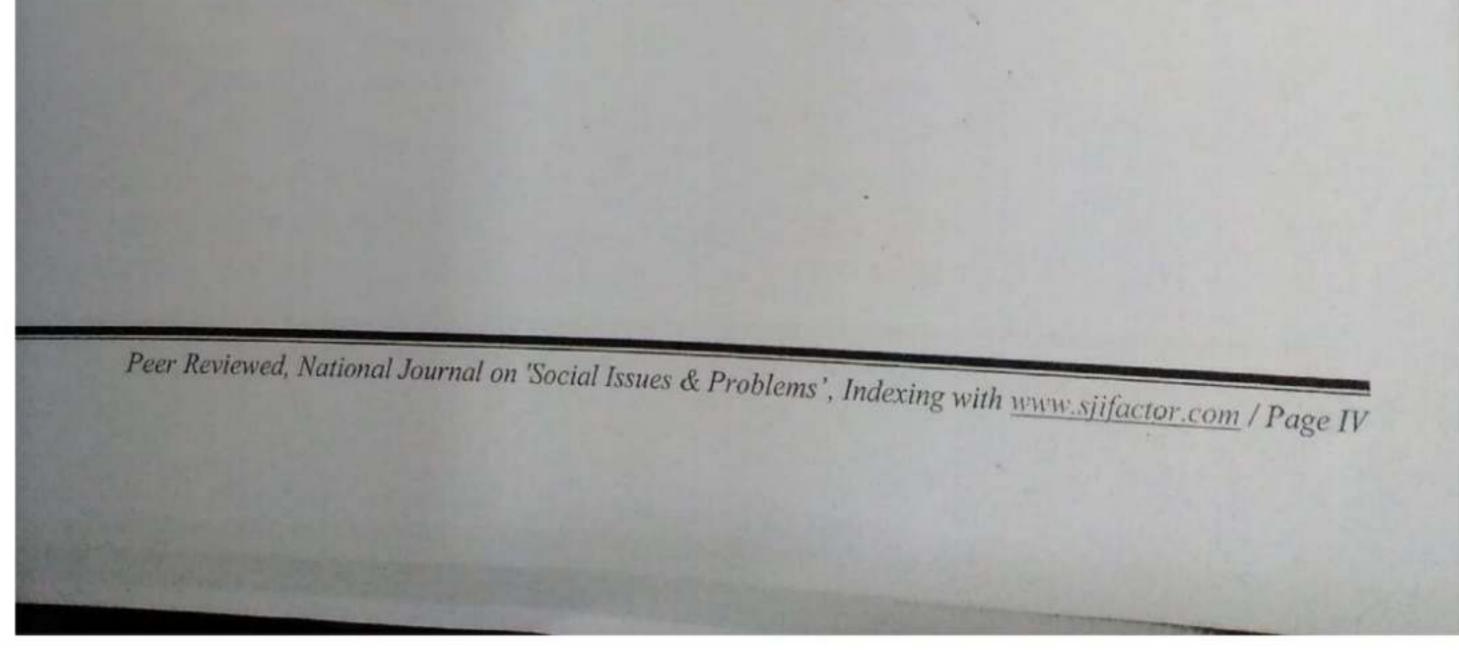
The Editors or Publisher do not assume responsibility for the opinions expressed by the authors of the papers.

Peer Reviewed, National Journal on 'Social Issues & Problems', Indexing with www.sjifactor.com / Page III

A Half Yearly Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed National Research Journal of Social Sciences & Humanities.... 'Social Issues and Problems' ISSN 2278-3199 Impact Factor – 7.264

लेखकांना सूचना

- सष्ट्रीय शोध पत्रीका 'सोशल इश्यूस अँन्ड प्रॉब्लेम्स' चा अंक वर्षातून दोन वेळा जून च हीमेंबर महिन्यात प्रकाशित होईल. या अंकासाठी प्राध्यापकांनी आपले लेख/संशोधन निबंध पाठवितांना जून च्या अंकामाठी ३० में पर्यंत व डीसेंबर च्या अंकासाठी ३० नोव्हेंबर पर्यंत किंवा त्याआधी पाठवावेत.
- या शोधपत्रीकेसाठी समाजविज्ञान व कला शाखेतील सर्व विषयाशी संबधीत संशोधन निवन/लेख मराठी/हिंदी/इंग्रजी यापैकी कोणत्याही भाषेत लिहलेला असावा. या शोधपत्रीकेसाठी पाठविलेला लेख इतरत्र कोठेही प्रसिघ्द झालेला किंवा प्रसिध्दीसाठी पाठविलेला नसावा.
- प्रसिध्दीसाठी पाठवावयाचे लेख/संशोधन निबंध संगणकीय अक्षरजुळणी करून ई—मेल व्याग पाठवावे. यासाठी मराठी व हिंदी फॉन्ट कृती देव—५० व इंग्रजीसाठी टाईम्स न्यू रोमण हे फॉन्ट वापरावे.
- प्रकाशनासाठी पाठविलेले संशोधनात्मक लेख विशेष करून संकल्पनात्मक व विश्लेषणात्मक असावेत. आढाव्यात्मक नसावे व लेखाची कमाल शब्दमर्यादा ३००० शब्दापर्यंत असावी. लेखाचा थोडक्यात सारांश लेखाच्या सुरूवातीलाच असावा. लेखामध्ये तक्ते व आकृत्या मर्यादित असाव्यात.
- लेखातील टीपा लेखाच्या अखेरीस द्याव्यात. संदर्भ ग्रंथाची यादी, लेखकाचे आडनांव, ग्रंथाचे शिर्षक, प्रकाशकाचे नांव, प्रकाशन वर्ष, व संदर्भाचा पृष्ठ कमांक देण्यात यावा. एखाद्या लेखाचा संदर्भ द्यावयाचा असल्यास लेखकाचे आडनाव, प्रकाशनाचे वर्ष, लेखाचे शिर्षक अवतरण चिन्हात, संपादकाचे नांव, प्रकाशकाचे नाव तसेच नियतकालिकामध्ये प्रकाशित झाला असल्यास लेखाच्या शिर्षकानंतर नियतकालिकाचे नांव, प्रकाशनाचा सप्ताह, महिना, वर्ष, संदर्भ पृष्ठ कमांक या पध्दतीने असावेत.
- या शोधपत्रिकेसाठी पाठविण्यात येणारे सर्व लेख त्या-त्या विषयाच्या तज्ञ व्यक्तीकडे परिक्षणासाठी पाठविण्यात येतील. परिक्षकांनी मान्य केलेल्या शोध निबंधानांच प्रकाशित केले जाईल. परिक्षकांनी अमान्य केलेले लेख/शोधनिबंध प्रकाशित केले जाणार नाही. परिक्षकांनी एखाद्या लेखाच्या संदर्भात दुरूस्ती संबधीच्या काही सूचना केल्यास त्या सूचनेनूसार लेखामध्ये दुरूस्ती करण्याचे अधिकार संपादकांना यहतील.
- राष्ट्रीय शोधपत्रिका 'सोशल इश्यूस ॲन्ड प्रॉब्लेम्स' या प्रत्रिकेतील लेखाच्या / शोधनिबंधाच्या प्रकाशनाबाबत संपादक मंडळाचा निर्णय अंतीम राहील.
- राष्ट्रीय शोधपत्रिका 'सोशल इश्यूस ॲन्ड प्रॉब्लेम्स' या पत्रिकेसाठी लेख/शोधनिबंध फक्त ईमेलवरच पाठवावे. Email:rjbhagat1968@yahoo.co.in



		CONTRACT DISAMONATION	
F LIDERTER, F F L F			

	- <u>CONTRACT</u>	
Title		
Discrimination against Elected		
Religion and Violence in India		
Noise Pollution and Judicial A		
Wamen's: A Constitutional Ins		
Illiteracy: A Social Problems		
Problems of Geriatric People		
Role of Radio in Social Enligh		
Library and Information Tech		
Problem of Handloom Small S	Scale Industries	
L Myth and Animism: A Reading		
. बहुजन सामाजिक आंदोलन में मान. व		
 साम्हीय सिंगधा नोति — २०२० 		

कामों की सामाजिक परिपत्नवता सूच उनकी परोपकारी मृत्यी		
तुष्ण मुकली का 'आयाज' काव्यसंग्रह अनुभूतियों का सहज उदेक		
योवाड्याने केलेले सामाजिक उत्थान		
प्रात्वीय प्राण्यांचे मानवीकरण : सामाजिक चैल्		
स्वी अल्याचार : वतरणे, परिणाम व ऊषाय		
महिला उद्धारक : हॉ. बावासाहेब आवेडकर		
कर्तनगढ महाविद्यालयीन विद्याच्यीची सामाजिक परिपक्तता आणि		
कामाच्या डिकाणी होणारा पहिलांचा लेगिक छल अधिनियम		
भारताचे नवीन शौधनिक धोरण २०२०		
१८५७ ज्या विद्योहाची कारणे व महिलाचे योगतन		
नागझिस बन्धजीव अभयारण्यः विदर्भनि हिरवे पुचपुन		
अनुसूचित जाती—जमाती आत्याचार प्रतियोगक कायदा		
आदिवासी महिलाये कौटुयिक आणि सामाजिक प्रातजीवरील स्थाव		
भारतीय दिवया आणि संयुक्त राष्ट्रसंघाचा मानवी हक्क कायरा		
स्वातान्योत्वर महाराष्ट्रातील विवयांच्या सामार्थजक घळनजी		
बेरोजगारी : यतमानकात्वातील एक भिषण समस्या		
समाजीकरणात माहिती तंत्रणनांची उपयोगिता	प्रकास सुर्वधान सोनक	
सामाजिक समतेचे प्रणते सत गाडनेवाचा		
. सत्यशोधको आणि आवेडलरी जलरो		142
भारतीय महिल्लाचा राजकारणातील सहभाग	एस. एम. देवकर	
	नवगणकर राजाभाउ	147
Peer Reviewed, National Journal on 'Social Issues & Pr		151

ang with www.sjifactor.com / Page V

संपादकीय....

सेठ नरसिंगदास मोर कला, वाणिज्य व श्रीमती गोदावरी देवी सराफ विज्ञान महाविद्यालय, तुमसर जि. भंडारा येथील समाजशास्त प्रिय प्राध्यापक व विद्यार्थी मित्रांनो, विभागावर्फे प्रकाशित होत असलेल्या 'नॅशनल जर्नल ऑन सोशल इश्युज ॲन्ड प्रॉब्लेम्स' या जर्नल ला ११ वर्ष पूर्ण होत आहेत. अकराव्या वर्षातील जर्नल चा हा पहिला नियमित अंक. या अंकासाठी देशभरातून अनेक संशोधकांनी आपले संशोधन निबंध पाठवृन आम्हाला सहकार्य केले त्याबदद्ल त्या सर्व लेखक आणि संशोधकांचे आभार. मित्रांनो, आपले 'सोशल इश्युज ॲन्ड प्रॉब्लेम्स' हे जर्नल पिअर रिव्हयूड आहे. विद्यापीठ अनुदान आयोगाच्या जुलै २०१८ च्या नव्या रेग्युलेशननुसार आता जर्नल यु. जी. सी. लीस्टेड नसले तरी ते जर पिअर रिव्हयूड असेल तरी प्राघ्यापकांना ओ. पी. आय. मध्ये १० मार्क मिळणार आहेत. यु. जी. सी. चे हे नोटीफीकेशन यु. जी. सी. च्या वेबसाईटवर आपल्याला पाहायला मिळेल. आता आपले शोधनिबंध प्रकाशित करण्यासाठी यु. जी. सी. लिस्टेड जर्नलची आवश्यकता नाही. आपण या जर्नलसाठी आपले शोधनिबंध पाठवू शकता. आपण आत्तापर्यंत आम्हाला भरपूर सहकार्य केले आहे आणि आपल्या सहकार्यामूळेच आमच्या या प्रयत्नाला भरपूर यश प्राप्त झालेले आहे. आपल्या सर्वांसाठी अजुन एक महत्वाची व आनंदाची बातमी म्हणजे आपले 'सोशल इश्युज ॲन्ड प्रॉब्लेम्स' जर्नल आता आपला लोभ असाच अस् द्यावा. www.sjifactor.com या जर्नलचे मुल्याकंन करणाऱ्या आंतरराष्ट्रीय संस्थेशी जुळले असून आपल्या जर्नल ला आता इंम्प्याक्ट फॅक्टर सुध्दा प्राप्त झालेला आहे. <u>www.sjifactor.com</u> च्या मुल्याकंनानुसार आपल्या जर्नल ला २०१७ मध्ये ५.६४६, २०१८ मध्ये ५.९८२, २०१९ मध्ये ६.७६७, २०२० मध्ये ७.११५ व २०२१ या वर्षासाठी ७.२६४ Impact Factor प्राप्त झालेला आहे. या संदर्भातील प्रमाणपत्रे आपण <u>www.sjifactor.com</u> किंवा आमच्या <u>www.journalsnmcsip.org.in</u> या वेबसाईटवर बघू शकता. 'National Journal on Social Issues and Problems' चे आत्तापर्यंतचे सर्व अंक आमच्या महाविद्यालयाचे संकेतंस्थळ www.snmorcollege.org.in व जर्नलची स्वतंत्र वेबसाईट www.journalsnmesip.org.in या वेबसाईटवर ऑनलाईन उपलब्ध आहेत. वाचक व सदस्यांना ते डाउनलोड करूम घेता येईल. यानंतरचा अंक डिसेंबर, २०२२ मध्ये प्रकाशित होत आहे. तेंव्हा या अंकासाठी

सुघ्दा आपण असेच सहकार्य कराल ही अपेक्षा. अंकाविषयीच्या सर्व प्रतिक्रियांचे स्वागत आहे. धन्यवाद ! संपादक

डॉ. राहुल भगत

मुख्य संपादक डॉ. चेतन मसराम

> प्रतिकिया पाठविण्यासाठी पत्ता डॉ. राहुल भगत समाजशास्त्र विभाग प्रमुख, सेठ नरसिंगदास मोर कला, वाणिज्य व श्रीमती गोदावरी देवी सराफ विज्ञान महाविद्यालय, तुमसर जि. भंडारा - ४४१९१२ Email - rjbhagat 1968@yahoo.co.in Mobile - 09420359657, 09834988337

Peer Reviewed, National Journal on 'Social Issues & Problems', Indexing with www.sjifactor.com / Page VI

तृणा मुकर्जी का 'आगाज' काव्यसंग्रह : अनुभूतियों का सहज उद्रेक डॉ. सुमेध पी. नागदेवे, डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डबल्यू. एस. महाविद्यालय, टेका नाका, कामठी मार्ग, नागपुर.

शोध सारांश: एक समय था जब महिलाओं को किसी भी तरह कोई अधिकार नहीं था। न उनके पास शिखा का अधिकार था न संपत्ति रखने का अधिकार। वह अपने आप को अभिव्यक्त भी नहीं कर पाती थी केवल सिसकती रहती थी। धर्म के नाम पर उनका शोषण किया जा रहा था। समय बदला महिलाएँ शिक्षित होने लगी। उनके भीतर आत्मसम्मान और आत्मविश्वास जगा। वह अपने आपको को अभिव्यक्त करने लगी। अभिव्यक्ति की यह कलम उन्हें साहित्य के क्षेत्र में ले आयी और साहित्य को नई दिशा मिली। प्रत्येक रबनाकार भावनाओं और अनुभूतियों के समीकरण से जो उसके जेहन में आता है वह ही अपने लेखन के माध्यम से थ्रेपित करता है और नवसृजन का आरम्भ होता है। तृणा मुकर्जी की अपनी संवेदना, उनकी अपनी अनुभूति इस काव्य संग्रह में अभिव्यक्ति का आगाज बनकर आयी है। इनके काव्य में अनुभूति की गहराई लय बद्ध तरीके से अभिव्यक्त होती हुई दिखाई देती है। ऐसा महसूस होता है कि कवयित्री ने अपने जीवन में जो कुछ भोगा है जो उतार—बढ़ाव इनके जीवन आए है उसे बड़ी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से यदि इस संग्रह की चर्चा करे तो इसमें नई कविता की छटा दिखाई देती है, जिसमे अनुभूतियों का सहज उद्देक का दर्शन होता है।

संकेताक्षरः महिला साहित्यकारों का नवसूजन, नई कविता की छटा, आतंरिक लय, प्रगतिशील विचार, यथार्थ वर्णन, संवेदना।

प्रस्तावनाः प्राचीन समय से ही महिलाओं के साथ धर्म के नाम पर, परंपराओं के नाम पर, रीति रिवाजों के नाम पर उत्पीड़न ही हुआ है। उन्हें उपभोग की वस्तु ही माना गया है। समग्र जीवन में उन्हें किसी भी तरह का कोई अधिकार नहीं था। न शिक्षा का अधिकार था न संपत्ति रखने का अधिकार था। वह स्वयं को अभिव्यक्त भी नहीं कर पाती थी। कही पुरुषप्रधान संस्कृति के नाम पर तो कही धर्म के नाम पर उनका शोषण किया जा रहा था। समाज में सती प्रथा, बाल विवाह जैसी कुप्रथाएं प्रचलित थी। वह केवल उपभोग मात्र की वस्तु बन गई थी। यहाँ तक कि उसे स्वयं निर्णय लेने का अधिकार भी नहीं था। अप्रत्यक्ष रूप से वह चार दीवारी में कैद थी जहाँ उसके स्वाभिमान और आत्मसम्मान को बार-बार कुचला जाता था। ऐसे समय समाज को नई दिशा देने वाले महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले जैसे कर्मठ, स्त्री उद्धारक महापुरुषों का उदय हुआ। उन्होंने शिक्षा के द्वार महिलाओं के लिए खोले। उन्हें शिक्षा लेने हेतु प्रेरित किया। समय बदलता गया महिलाएँ शिक्षित होने लगी। उनके भीतर आत्मसम्मान और आत्मविश्वास जगा। अब उसने अपनी चार दीवारी को लांघा और धीरे - धीरे समाज में कई क्षेत्रों में अपनी भूमिकाएं निभाने लगी। साहित्य के क्षेत्र में भी महिला साहित्यकारों का उदय हुआ। हिंदी की महिला कहानीकार बंग महिला (राजेन्द्रबाला घोष) इनकी सन १९०७ में सरस्वती पत्र में प्रकाशित 'दुलाई वाली' कहानी को हिंदी की प्रथम कहानी होने का श्रेय दिया जाता है। सुमित्रा कुमार सिन्हा हिंदी की पहली नारीवादी साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध है। आधुनिक काल में सुभद्राकुमारी चौहान, कृष्णा सोबती, महादेवी वर्मा, मालती जोशी जैसे कई महिला साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से समाज को नई दिशा देने का कार्य किया है। अपने साहित्य के माध्यम से इन महिला साहित्यकारों ने अपने आपको अभिव्यक्त किया है, अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त किया। इसी कड़ी को समृद्ध करती हुई तृणा मुकर्जी का 'आगाज' काव्यसंग्रह जो कि २०१३ में प्रकाशित हुआ, देखा जाए तो यह इनका पहला ही काव्यसंग्रह है लेकिन प्रभावी रूप से इसमें इनकी आत्मभिव्यक्ति ही अभिव्यंजित होती हुई परिलक्षित होती है।

काव्य को कई विद्वानों ने परिभाषित किया है जिसमें पाश्चात्य प्रसिद्ध विचारक, कवि विलियम वर्डसवर्ष कहते है ''कविता प्रबल अनुभूतियों का सहज उद्रेक है, जिसका स्रोत शांति के समय में स्मृत मनोवेगों से फूटता है'' यह परिभाषा भावानुभूति की अभिव्यक्ति को स्पष्ट करता है। जो मनुष्य के भीतर सहज रूप से विद्यमान होती है। प्रत्येक रचनाकार अपनी रचना को जन्म देने से पूर्व यह भी नहीं जानता कि वह क्या लिखनेवाला है। भावनाओं और अनुभूतियों के समीकरण से जो उसके जेहन में आता है वह ही अपने लेखन के माध्यम से प्रस्तुत करता है। रचनाकार की भावनाएँ जब शब्द रूपी सेतु बनाती है तब नवसृजन का आरम्भ होता है। तृणा मुकर्जी की अपनी संवेदना, उनकी अनुभूति इस काव्य संग्रह में शब्द बनकर सामने आयी है। इनके काव्य में अनुभूति की गहराई लय बद्ध तरीके से अभिव्यक्त होती हुई दिखाई देती है। स्वयं कवयित्री ने 'अपनी बात' कविता में अपने आपको अभिव्यक्त करते हुए कहा है कि 'अपने जज्बातों को, नज्मों, कविताओं को ढालना, कोई बड़ी बात नहीं, बहुत कम इंसान समझ पाते है, बयान कर पाते हैं, रख पाते है, अपने जज्बात, यूँ सरे आम, सबके सामने, वो हौसला, जिगर, सब में नहीं, यूँ अपने आप को पेश करना'? अपने आपको अभिव्यक्त करना, अपने जज्बातों को, नगमों को, लफ्जों में ढालना आसान नहीं होता। यह अपने आप में एक हिम्मत का काम है। उन्होंने अपनी अनुभूति को शब्दों में ढालकर अपने काव्य को पृष्पित और पल्लवित किया है। लेखिका के सन्दर्भ में डॉ. रमेश अग्रवाल (संपादक, दैनिक भास्कर, अजमेर) जी ने कहा है कि 'तृणा ने अपनी लगभग हर कविता के माध्यम से अपने- भीतर बैठी अलग-अलग तृणाओं को अलग-अलग रंग में अभिव्यक्त किया है। संवेदनाओं का आवेग एवं भावनाओं का प्रवाह किसी बहते हुए संगीत का सा आभास देता है तथा किसी छंद की कमी महसूस करने नहीं देता।'३

'आगाज' काव्य संग्रह में छोटी – छोटी प्रभावशाली १२० कविताएँ संकलित है। जो विविध विषयों को अपने भीतर समाविष्ट किए हुए है। चाहे रिश्तों की मिठास हो, या प्रकृति प्रेम, जीवन का अकेलापन हो या खामोशी के लफ्ज, एहसासों की छुअन हो

Peer Reviewed, National Journal on 'Social Issues & Problems', Indexing with www.sjifactor.com / Page 88

या आंसुओं का सैलाब उनके काव्य में विविध विषयों की छटाएँ दिखाई देती है। भावनाओं, अनुभूतियों का सहज उद्रेक ही दिखाई हेता है। उनकी अतुकांत अथवा गद्य कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें भावनाओं की एक आतरिक लय मौजुद होती है जो धारा प्रवाह के साथ बहती है। कविता पढ़ते समय यह महसूस होता है कि कवयित्री के जीवन में आए उतार-चढाव में जो कुछ देखा, महसूस किया उसे बड़ी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से यदि इस संग्रह की चर्चा करे तो इसमें नई कविता की छटां दिखाई पड़ती है।

'ग्रहण' कविता में हमे प्रगतिशील विचार नजर आते है। जीवन में लगे ग्रहण को कवयित्री इस तरह बयां करती है 'आधे-अध्ररेध अँधेरे उजालेध ग्रहण लगा रे, कहाँ-कहाँ, जहां -तहाँ, जहन में ग्रहण, नजर में ग्रहण, सोच में, तबीयत में, खशियों में, सुख में, इश्क में, नजदीकियों में, तेरे मेरे, साथ गजरते, लम्हों में, हर पूरे को, छूटा सा, अपना ग्रास बनाता सा, ग्रहण का, अँधेरा आधा, उजाला आधा, ग्रहण लगा रे। यह कविता उनके जीवन में आए संघर्षों को दर्शाता है। किस तरह उनके जीवन में ग्रहण लगा उसी को बड़ी बेबाकी के साथ उन्होंने इस कविता में अभिव्यक्त किया।

आज हम देखते हैं कि मनुष्य ने अपने आप को मजहब के नाम पर, धर्म के नाम पर बांट दिया है। कवयित्री ने 'हिस्सा' नामक कविता में बंटवारे के दर्द को व्यंजित करते हुए कहा है 'बंटवारा होगा तोध क्या-क्या बँटेगाध साथ केध पल-छिन, शब सहार, शामें, गोधूलि लग्न, सुबह की मीठी हवा, ख्वाबों वाली रात, सोते से लम्हे, बौराए से लम्हे, ऊँघते से बड़बड़ाते से, चुप-चुप पल, बोलते चीखते खामोश लफ्ज, सलवटें, करवटें, ऑस्, सिसकियाँ, मुस्कान, हँसी, ठहाके, हाथ थामती सी, हाथ छुड़ाती सी जिंदगी" अर्थात बँटवारा होगा तो न जाने क्या-क्या बॅटेगा सुबह हो या रात हो, शाम हो या गोधूलि बेला हो, सुबह की मीठी हवा हो या जीवन की मुस्कान, हाथ थाम जिंदगी हो या हाथ छुड़ाती जिंदगी न जाने कितनी चीजों का बँटवारा होगा। कवयित्री ने बँटवारे के दर्द को अभिव्यक्त करते हुए उत्कृष्ट शब्दों के माध्यम से अनुभूतियों की मार्मिकता के दर्शन हमें कराया है। इश्क के यथार्थ को बयां करती उनकी कविता 'साझेदारी' अपने आप में एक अनूठी मिसाल प्रस्तुत करती है। चूकि आज इश्क बड़ा खुदगर्ज है इसी को व्यक्त करते हुए कवयित्री कहती है 'अपने हिस्से की जमीन, अपने हिस्से का आसमानध्अपने हिस्से के ख्वाब, अपने हिस्से के अफसाने, अपने हिस्से की जलन, अपने हिस्से की घुटन, ये सब क्या कम थे जो, आज तुम्हारे हिस्से की जमीन, तुम्हारे हिस्से का आसमान, तुम्हारे हिस्से की हँसी, तुम्हारे हिस्से के ख्वाब, तुम्हारी घुटन, तुम्हारी जलन, हर उस ख्याल, उस सोच का, हिस्सा चाहिए, क्योकि आज इश्क, बेहद खुदगर्ज है, कल की बात और थी। वर्तमान में इश्क भी किस तरह अपने स्वार्थ पर टिका है। वह अपने साथी के दुःख, उसकी घुटन को अपनाना नहीं चाहता। वह यथार्थ स्थिति का वर्णन करती हुई कहती है कि एक समय प्रेम में आदर्श दिखाई

देता था आज वह आदर्श स्वार्थ में बदल गया, निस्तार्थ प्रेम कही खा गया।

'अपनी हट के पर' कविता में कवयित्री जीवन के बंधन से मुक्त होकर जी भर के साँस लेना चाहती है स्वयं को पाना चाहती है। वह एक ऐसी दुनिया में जीवन जीना चाहती है जो बंधन से परे हो। कवयित्री की शब्दी में 'अपने ख्याली से, अपने स्वायतों से, अपने बानी बनायी, सजी सजाई दुनिया से, एक बार निकल, जी भर छे साँस, आँखे खोछ, घूप खुद पर पड़ने दे, छाँव आने दे, युंदे गिराने दे, देख चारां आर, इम वहाँ है, जहां तेरी हट खत्म होती है।" उनकी एक और कविता है 'ज्वालामुखी' जिसमे वर्तमान जीवन के भय रूपी संघर्ष को दर्शाया गया है। मनुष्य अपने अपमान को, अपनी पीड़ा को, अपने संघर्ष को, अपनी घुटन को अपने भीतर ही दबाता चला जाता है। थीरे घीरे वह घुटन ज्वालामुखी में तब्दील हो जाता है। जिसके फटने पर ही उसकी भीतर की आग, उसकी तपीश शांत हो सकती है। उसके फटने में ही उसकी सार्थकता है। कवयित्री के शब्दों में 'आँखों में, सुलगता घुआँ, अंगीठी जलती हो, अंदर जैसे चौबीसों घटे, कितना जलता होगा अंदर, कितना तपता होगा, वो बाहर, एक जीता ज्वालामुखी, वो, बस फटने का इंतजार, उसे भी मुझे भी ह क्रोध के बाहर आने पर ही मस्तिष्क शांत हो सकता है। एक असीम शांति तब ही प्राप्त हो सकती है जब मन शांत हो जाता है। इनके काव्य में कुछ नए प्रयोग दिखाई देते है। इनकी कुछ कविताएँ तो बहुत ही छोटी है इन्हें काव्य कहे या कुछ और परन्तु उनमें भावनाओं का आवेग है, संवेदनाओं का प्रवाह है। छोटी सी पंक्ति में ही बड़ी बात कहने का सामर्थ्य उनकी कविताओं में हमें दिखाई देता।

'आगाज' उनका प्रथम काव्यसंग्रह है जहाँ कुछ खुबियाँ है तो कुछ कमियां भी रह गई है। कई स्थानों पर वर्तनी सम्बन्धी दोष रह गए है। कई स्थानों पर ऐसा लगता है कि विराम चिड गलत स्थान पर लग गया है। कई कविताओं में एकाकी चित्रों को बहुलता है। कई स्थानों पर कविता के शीर्षक तथा पृष्ठभूमि चित्र में तालमेल नहीं है। परन्तु इसके बावजूद कविता में कवयित्री की अनुभूति, उनकी अभिव्यक्ति नदी की धारा के समान बहते हुए एक अलग ही संसार में ले जाती है। जहां भावनाओं का आवेग है, मन की मिठास है। इनके काव्य में हमें अधिकतर माध्य और प्रसाद गुण दिखाई देते है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से चर्चा करे इनमें नई कविता की छटाँ दिखाई देती है।

सन्दर्भः

- १. भारत पियूप निवंध, डॉ. दीपिका, भारत पुस्तक भंडार, सोनिया विक्रार, दिल्ली, वर्ष २०११, प. १९)
- २. अपनी बात, काव्य संग्रह 'आगाज', व्याहट गेज पबिलकेशन, गुरगाँव, वर्ष 7083, 9.8
- ३. प्रोत्साहना, आगाज काव्य संग्रह,व्हाइट पेज प., गुरगीय, वर्ष २०१३.
- ग्रहण, काव्य संग्रह 'आगाज', व्हाइट पेज प., गुरगांव, २०१३, पृ. ३४.
- हिस्सा, काव्य संग्रह 'आगाज', व्हाइट पेज प., गुस्मीव, २०१३, यू. ५०.
- तत्रैव, २०१३, पृ. ५८-५९.
- अपनी हद से परे, आगाज', क्लाइट पेज प., गुरगाँव, २०१३, पृ. ११७.
- जवालामुखी, काव्य संग्रह 'आगाज', व्याइट पेज प., गुरगाव, २०१३, पृ. १०३.

Peer Reviewed, National Journal on 'Social Issues & Problems', Indexing with www.sjifactor.com / Page 89



Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

SJIF Impact- 5.67

Akshara Multidisciplinary Research Journal Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023

Special Issue 07 Volume III (B)

आज़ादी के 75 वर्ष का हिंदी साहित्य

अतिथि संपादक प्रोफेसर रजनी शिखरे प्राचार्य

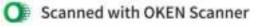
र. भ. अट्टल कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय गेवराई जि. बीड महाराष्ट्र

डॉ. गजानन चव्हाण प्रधान सचिव महाराष्ट्र हिंदी परिषद कार्यकारी संपादक प्रो.डॉ.जिजाबराव पाटील अध्यक्ष महाराष्ट्र हिंदी परिषद

प्रा.संतोष नागरे हिंदी विभागाध्यक्ष र. भ. अट्टल महाविद्यालय गेवराई



Plot No 143 Professors colony, Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201





Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

SJIF Impact- 5.67

Editorial Board -: Chief & Executive Editor:-Dr. Girish Shalik Koli Dongar Kathora Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301 Mobile No: 09421682612

Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com

-: Co-Editors :-

- Dr. Sirojiddin Nurmatov, Associate Professor, Tashkent Institute Of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- Dr.Vivek Mani Tripathi, Assistant Professor, Faculty of Afro Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- Dr.Maxim Demchenko Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute Of International Relationships, Moscow, Russia
- Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan, Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan, Yemen.
- * Dr. Vijay Eknath Sonje, Assistant Professor (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- Mr. Nilesh SamadhanGuruchal, Assistant Professor (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- Dr. Shaikh Aafaq Anjum, Assistant Professor (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- Mr. Dipak Santosh Pawar, Assistant Professor (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila

Mahavidyalya, Jalgaon [M. S.] India.

PEER REVIEW POLICY

AMRJ will send a copy of research work to the editorial board. The board will verify the same according to the rules of research methodology. Then plagiarism in the work will be checked. In case if the research methodology is not followed properly by the researcher, message will be given to the researcher and he/she will be asked to revise the work in a stipulated period.

After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee.

SINGLE BLIND PEER REVIEW BY EXPERT PEER REVIEWERS

AMRJ adopts the Single Blind Peer Review Method. After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee for review through email. AMRJ do not disclose the details of researcher to Peer Review Committee. The Peer Review Table will be displayed online according to the criteria decided by the Editorial Board. After the approval by Peer Review Committee, the research work will be published in the Issue. In case if any instructions received from Peer Review Committee, the same will be forwarded to the researcher and he/she will be asked to clear the matter. Editorial Board of AMRJ will be the final authority to decide whether a research work is to be published or not.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for anyconsequences arising from the exercise of Information contained in it.

Akshara Multidisciplinary Research Journal Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

SJIF Impact- 5.67

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
Sr.No	िनेन के बच्चों पर दधाभाव	डॉ.रजनी शिखरे	05
1	विवाह विच्छेद के बच्चों पर दुष्प्रभाव (विशेष संदर्भ: आपका बंटी)	प्रा.हिरा पोटकुले	
	(विशेष संदर्भः जा पिनः ग्रे इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में चित्रित वृद्ध विमर्श	प्रो.डॉ.जिजाबराव व्ही. पार्टील	08
2	(समय सरगम और गिलिगडू : विशेष संदर्भ)	प्रा.दिलीप पंडीत पाटील	1
3	(समय सर्पत का चिंतन की यथार्थता का चिंतन	डॉ. आर. के. जाधव	10
3	('दहेज' प्रथा और 'बलात्कार' की समस्या के विशेष संदर्भ में)		
4	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में स्त्री विमर्श	प्रो. रजनी शिखरे / संतोष नागरे	13
5	आजादी के 75 वर्ष के बाद भी हिंदी लोकगीतों का महत्त्व	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	16
6	आज़ादी का अमृत महोत्सव और बदलता महानगरीय परिवेश	डॉ. सुनील बापू बनसोडे	18
Ū	(क्सुम अंसल की कहानी के संदर्भ में)		
7	स्वातंत्रोत्तर हिंदी कविता में कृषक और उसकी संघर्ष चेतना	डॉ.सपना तिवारी	21
8	'रागदरबारी' उपन्यास की प्रासंगिकता'	डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	25
9	हिंदी उपन्यास और आदिवासी समुदाय का यथार्थ चित्रण	प्रा.डॉ शंकर गंगाधर शिवशेट्टे	29
10	लीलाघर जगूड़ी का काव्य: आज़ादी का मोहभंग के परिपेक्ष्य में	डॉ. शरद शेषराव कदम	32
11	गिलिगडू उपन्यास में महानगरीय बोध	प्रा. शुभदा शिवाजी आरडे	35
12	हिन्दी साहित्य में सामाजिक तथा राष्ट्रीय चिंतन	डॉ. सुमेध पी. नागदेवे	37
13	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी कविता का योगदान	श्रीमती सुपर्णा गंगाधर संसुद्धी	41
4	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी काव्य	समृद्धि संजय सुर्वे डॉ .अनिल विश्वनाथ काळे	43
15	स्वाधीनता के बाद हिंदी कहानी का विकास	डॉ. शिवाजी गंगाधर सुरवसे	45
16	स्वातंत्र्योत्तर भारत की विसंगतियों का महत्वपूर्ण दस्तावेज :	संतोष नागरे	47
	'पूरब खिले पलाश'		
17	मोहनदास नैमिशराय के आत्मकथा में चित्रित दलित समस्याएँ	प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे	51
	(अपने – अपने पिंजरे के विशेष संदर्भ में)		1
8	नारी की चिरन्तन पीड़ा और अन्याय की अभिव्यक्ति : अहल्या	डॉ. मारोती यमुलवाड	54
9	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में आदिवासी विमर्श	प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर	57
0	परिवार विघटन की त्रासदी और उदय प्रकाश की कहानियाँ	डॉ.युवराज राजाराम मुळये डॉ.काकासाहेब भागुराम गंगणे	59
21	आजादी के 75 वर्ष का कथा साहित्य	डॉ. पिरू आर. गवळी	62
2	'कुमारजीव'में चित्रित विविध आयाम	सुश्री प्रतिक्षा शिवाजी तनपुरे	65
23	इक्कीसवी शती की महिला कहानीकारों के कथा साहित्य में	प्रा. सपना पाटील	68
	अभिव्यक्त नारी विमर्श		
4	स्वातंत्र्योत्तर कालीन हिंदी बाल कहानी-साहित्य में बाल-मनोविज्ञान	इगडे शितल कचरु	70
5	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी आत्मकथा साहित्य	डॉ. संजीवकुमार नरवाडे	74
and the second	"रागदरबारी" उपन्यास में चित्रित व्यंग्यात्मक यथार्थ	कु. माधुरी सुरेश ठाकरे	78
26		डॉ. मिलिंद साळवे	80



Akshara Multidisciplinary Research Journal Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

SJIF Impact- 5.67

Sr.No	and the balance of a balance of the	Author's Name	Pg.No
28	आजादी के 75 वर्ष के अमृत महोत्सव में राष्ट्रीय कवियों का योगदान		83
29	'सनातन' में चित्रित सामाजिक तनाव और उससे उभरते प्रश्नों की मीमांसा	डॉ.विजय एकनाथ सोनजे	86
30	आधुनिक हिंदी उपन्यासों मे चित्रित नारी–विमर्श	डॉ. भास्कर उमराव भवर	- 89
31	यशपाल के उपन्यासों में मार्क्सवादी चिंतन	प्रो. डॉ.जालिंदर इंगले	92
32	धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में सामाजिक चिंतन	डॉ. अभयकुमार र. खैरनार	96
33	मेहरुन्निसा परवेज कृत 'कोरजा' उपन्यास में मुस्लिम स्त्री जीवन का संघर्ष		99
34	बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक की प्रतिनिधिक कहानियों में नारी के विविध रूप	प्रा.डॉ. विष्णु गोविंदराव राठोड	102
35	प्रभा खेतान के काव्य में आम आदमी की वेदना	प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा	105
36	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य में नारी	डॉ. कृष्णा प्रल्हाद पाटील	108
37	आजादी के 75 वर्ष का डिंदी कथा – साहित्य	जानकी नामदेव देसाई	110
38	प्रगतिवादी साहित्य में सृजन के विविध आयाम	गुलशन मुसा पठाण	113
39	समकालीन हिन्दी कविता में पर्यावरण विमर्श	प्रा.मुजावर एस.टी.	116
40	आजादी के 75 वर्ष के बाद का तारानन्दन 'तरुण' के कथासाहित्य में संवेदनाएं	V	120
41	रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य में साम्यवादी तथा समाजवादी मुल्यों की प्रतिष्ठा	डॉ. वरुणराज तौर प्रो.डॉ.ललिता जी. राठोड	123
42	आजादी का अमृत महोत्सव और समकालीन हिंदी ग़ज़ल की जनधर्मिता (तक :सुखन अज जनान से सर्वे भवन्तु सुखिन)	भागीनाथ यादवराव वाकले	126
43	ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित विमर्श	प्रा.डॉ.हनुमंत दत्तु शेवाळे	131
44	आज़ादी के अमृत महोत्सव के परिप्रेक्ष्य में 'ग्लोबल गाँव के देवता'	सुर्याबा जगन्नाथ शेजाळ प्रो. डॉ. बालकवि लक्ष्मण सुरंजे	136
45	सुषमा मुनीन्द्रजी की कहानियों पर एक दृष्टिक्षेप	प्रो.डॉ.संजयकुमार नं. शर्मा भारती राजधर निकम	139
46	आजादी के 75 वर्ष का हिंदी काव्य	डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	142
47	'हलफनामें' उपन्यास में चित्रित किसान आत्महत्या	डॉ. रामेश्वर वरशिळ	146
47	हिंदी साहित्य में सिंधी साहित्य का अनुवाद	डॉ. मोटवानी संतोष	148
49	आजादी के 75 वर्ष के उपन्यास साहित्य की यात्रा	प्रा.डॉ. ललिता राठोड़ अरुणा परशुराम राठोड़	150
50	'धूमिल की कविता में आजादी का मोहभंग'	डॉ.दीपक विनायकराव प्रवार	152
50	धूमिल को कापता न जाजादा का गाठनन गिलिगडू उपन्यास में महानगरीय बोध	प्रा. शुभदा शिवाजी आरडे	154
51 52	कथाकार अखिलेश के "शापग्रस्त" कहानी संग्रह में सामाजिक	शर्मा संतोष कुमार कमला प्रसाद प्रो. डॉ. बालकवि लक्ष्मण सुरंजे	156

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

12

SJIF Impact- 5.67

हिन्दी साहित्य में सामाजिक तथा राष्ट्रीय चिंतन

डॉ. सुमेच पी. नागदेवे डी.एम.डब्ल्यू, पी.डब्ल्यू,एस. कला वाणिज्य, विज्ञान महाविद्यालय, कामठी मार्ग, टेका नाका, नामपुर

शोध सारांशः भारतभूमि यह संतो की भूमि कहलाती है। संतों ने अपने साहित्य के माध्यम से विष्टव को नैतिकता का संदेश दिया है। मनुष्य को एकता के सूत्रों में बांधा है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक संतों ने, साहित्यकारों ने भारतीय जनमानस में नैतिकता के साथ राष्ट्रीयता की भावना भरी है। जले ही मध्यकाल तक राष्ट्रीयता की भावना संकुचित थी, परंतु इस दौरान संत साहित्य ने भारतीय जनमानस को नैतिकता की शिक्षा अवश्य दी। परिस्थितियों के आधार पर साहित्य का स्वरूप बदलते गया। आधनिक काल में हिन्दी साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय जनमानस में मानवता तथा राष्ट्रीयता का स्वर मजबूत कियां। जनता में राष्ट्रीयता के बीज बोने में पत्रकारिता का भी विशेष महत्त्व रहा है। यह सभी पत्रकार साहित्यकार भी थे। जिन्होंने भारतीयों में भारतीयता की भावना भरी। अपने साहित्य के माध्यम सें लोकहीत की भावना जगाई। यही लोकहीत की भावना मनुष्य को मनुष्य बनाती है। उसके भीतर सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को जन्म देती है। उसे संघर्ष के लिए प्रेरित करती है। भारतीय साहित्यकानों के कलम ने आम जन में राष्ट्रीयता की भावना भरी। जिसके फलस्वरूप आम जन अपना जाति धर्म, वर्ग, पंथ, संप्रदाय भूलकर, मिलजुलकर, एकदूसरे का हाथ पकड़कर, कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्रीय आंदोलन में सकिय रूप से भाग लिया। असंभव सी प्रतीत होने वाली अपनी आज़ादी को प्राप्त किया। आज़ादी के पश्चात विभाजन की त्रासदी तथा मोहभंग की स्थिति को भारतीय जनमानस ने झेला। पुनः साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से देशभक्ति का बीज बोया। हमारे राष्ट्रसंतों ने अपने भजनों द्वारा भारतीयता की लौ जगाई। देश को नई दिशा दी।

संकेत बिंदुः संत साहित्य, नैतिक शिक्षा, मनुष्यता, पत्रकारिता, राष्ट्रीय तथा सामाजिक चेतना

भारतभूमि यह संतो की भूमि कहलाती है। यहाँ कई संतो ने, महात्माओं ने जन्म लिया है तथा अपने विचारों से विश्व को मार्ग दिखाया है। संतों ने अपने काव्य के माध्यम से विश्व को नैतिकता का संदेश दिया है। उनके दिए गए विचार आज भी प्रासंगिक है। आदिकाल से आरंभ होती हुई यह धारा आधुनिक काल तक निरंतर चलती रही। सिद्ध तथा नाथ संप्रदायों ने भी अपने विचारों से सामाजिकता को नई दिशा दी। इन्होंने उस समय प्रचलित कुरीतियों, कर्मकाण्डों, बाह्यआडंबरों का प्रखरता से विरोध किया। इनकी यही प्रखरता, अक्खड़ता, निश्छलता मध्यकाल के निर्गुणवादी संतो ने ग्रहण की। भक्तिकाल में कबीर, सूरदास तुलसीदास, जायसी, रैदास, धन्ना, पीपा, गुरूनानक, मीराबाई जैसे कई संतों ने अपने काव्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। समग्र भक्ति साहित्य इनके ही विचारों से पल्लवित हुआ है। उस समय समाज में ऊँच-नीच का भेद, जातिभेद, धर्मभेद, वर्गभेद चरम पर था। ऐसे समय इन संतों की लेखनी ने मनुष्य में मानवीयता का भाव भरने का प्रयास किया।

आदिकाल में अधिकांश काव्य वीर रस से रचित है। श्रृंगार रस की भी प्रधानता हमें दिखाई देती है। इस दौर के अधिकांश कवियों ने जनता की अभिव्यक्ति को अपने काव्य में स्थान नहीं दिया। अपने आश्रयदाता राजा पर चरितकाव्य अधिक से अधिक लिखा है। सिद्धों तथा नाथों ने अवश्य कर्मकाण्डों, बाह्यआडंबरों पर अपने अभिव्यक्ति के माध्यम से, अपने काव्य के माध्यम से प्रहार किया है। आदिकालीन कवियों ने अपने काव्य में चरितकाव्य को ही प्रधानता दी। परंतु दलपति नाल्ह के बीसलदेव रासों में हमें राजमती के माध्यम से स्त्री विमर्श के दर्शन होते हुए दिखाई देते है। राजमती जो कि जबान से तेज है परंतु आखिर है तो एक स्त्री ही। वह महेश को उलाहना देते हुए कहती – "अस्त्रीय जनम काई दीघउ महेस/अवर जनम धारइ घणा रे नरेश,/रानि न सिदजीय रोझड़ी,/घणह न सिरजीय धजलीय गाइ।/वनशंड काली कोइली,/ हऊं वइसती अंबा नई चम्पा की डाल/ भशती वाश विरजोड़ी।" प्रस्तुत पंक्तियों राजमती कहती है कि आपने मुझे स्त्री जन्म क्यों दिया है? देने के लिए तो आपके पास और अनेक जन्म थे। आपने मुझे जंगल का जंतु बनाते, वन खंड की काली कोयल ही बनाते तो मैं आम और चम्पा की डाल पर बैठती, अंगूर और बीजौरी के फल खाती। उनका यह स्वर वासनाभिभूत मध्ययुगीन पुरूष के स्वार्थ और उसकी अति कामुकतामयी रसिकता की शिकार बनी हुई, मध्ययुगीन नारी की आत्मा

37



Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

SJIF Impact- 5.67

का कन्दन एवं चित्कार है। 'ढोला मारू दा दूहा' में भी मारवणी का ढाढी को दिया गया संदेश में भी नारी हृदय के दर्शन होते हैं।

हिन्दी साहित्यकारों ने भी इन्हीं विचारों को अपने साहित्य के माघ्यम से आगे बढ़ानें का प्रयास किया। सहितस्य भावः साहित्यम्' अर्थात जिसमें मनुष्य का हित छिपा हो या जिसमें मिलन का भाव हो, उसे साहित्य कहते हैं। अपने साहित्य के माघ्यम से स्वयं तुलसीदासजी ने कहा था '' कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहें हित होई^{'2} कीर्ति, कविता और सम्पत्ति वही उत्तम है जो लोकहित में हो। जिस तरह गंगा नदी जहॉ–जहॉ से बहती है, वहॉ–वहॉ सबका कल्याण करती जाती है। अतः साहित्य ऐसा होना चाहिए जो मनुष्य में जीवन–मूल्यों को पिरोकर राष्ट्र को मज़बूत करने की दिशा में काम करता हो। इस काल में नैतिक शिक्षा का विशेष महत्त्व था।

हिन्दी साहित्य ने भारतीयता को ही अपने साहित्य में तरजीह दी है। भारतीय अर्थात भारत से संबंधित। जिसने भारतीयता को अपने भीतर आत्मसात किया हो, वही भारतीय। भारतीयता से तात्पर्य उस विचार या भाव से है जिसमें भारत से जुड़ने का बोध होता है जो भारतीय संस्कृति से संबंधित हो। भारतीयता का प्रयोग राष्ट्रीयता को व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है। राष्ट्रीयता की संकुचित भावना जब तक रही तब तक यह देश हजारों वर्षों तक विदेशी शासकों का गुलाम रहा। वर्णाश्रम व्यवस्था से तो देश ऐसी विषम, असमानतावादी सोच में बॅट गया। जहाँ मनुष्य, मनुष्य में ही भेद होने लगा हम विभिन्न आधारों में बॅटे रहे, जिसका लाभ विदेशी ताकतों ने. उठाया। कभी यूनानियों ने तो कभी तुर्को ने. तो कभी मुगलों ने, तो कभी अंग्रेजों, पुर्तगालियों तथा फ्रांस ने हमें गुलाम ही बनाया। आदिकाल से लेकर भक्तिकाल तक, भक्तिकाल से रीतिकाल तक हमें देश में राष्ट्रीयता का अभाव दिखाई पड़ता है। राष्ट्रीयता की भावना संकुचित थी अर्थात संपूर्ण भारत ना होकर केवल रियासत तक ही सीमित थी। 1857 ई. में अंग्रेजों के ख़िलाफ आज़ादी की पहली लड़ाई लड़ी गई, परंतु यह लड़ाई उनकी अपनी रियासते पुनः पाने हेतू ही थी। इस लड़ाई ने भारतीयों के मन में भारतीय होने का अहसास दिलाया और इसी अहसास के कारण भारतीयों ने आज़ादी की लड़ाई में बड़चढकर हिस्सा लिया। अंग्रेजों को कामकाज कराने हेतु शिक्षित भारतीयों की आवश्यकता थी। अतः उन्होंने शिक्षा के द्वार सभी के लिए खोल दिए। शिक्षा के माध्यम से ही भारतीयों के मन में पुनः खोया हुआ आत्मसम्मान, आत्मगौरव का भाव आया। निम्न वर्ग भी अपनी सामाजिक पिछड़ेंपन के प्रति जागरूक होने लगा। वह भी अपनी सामाजिक, धार्मिक गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का प्रयास करने लगा। उच्च शिक्षित वर्ग भी कुछ संख्या में सामने आए उन्होंने भी सामाजिक सुधार को महत्त्व दिया। 1900 के बाद आज़ादी के आंदोलनों में तेजी आयी। हिन्दी साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम जन जागरण का कार्य बखूबी निभाया। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक सुधार के साथ राष्ट्रीयता का भाव भरने का कार्य किया। भारतेंदु, प्रेमचंद, यशपाल, मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, रविंद्रनाथ ठाकुर; निराला, दिनकर आदि साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से नए भारत की बुनियाद को मजबूत किया। उनके सार्थक लेखन ने मनुष्य में मनुष्यत्व का भाव भरा। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अपनी कविता 'मनुष्यता' में मनुष्यत्व को अभिव्यक्त करते हुए कहा है- "मनुष्य मात्र बंधु है" यही बड़ा विवेक है, / पुराणपुरूष स्वयंभू पिता प्रसिद्ध एक है।/ फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद है / परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद है। / अनर्थ है कि बंधु ही न बंधु की व्यथा हरे. / वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।' मैथिलीशरण जी अपने इस काव्य के माध्यम से मनुष्य में एकता का भाव पिरोया। वे कहते हैं हम सभी के पिता तो स्वयं स्वयंभू है। यही भाव हममें एकता का भाव भरता है। भले ही हममें कर्म के आधार पर भेद है परंतु भीतर से हम सभी एक ही है। उन्होंने कहा कि जो मनुष्य अन्य मनुष्यों की व्यथा को हरता है, जो मनुष्य दूसरों के हित के लिए अपने आप को समर्पित करता है। वहीं मनुष्य है। यही भाव हममें एकता का भाव भरता है। तुलसीदास हो या मैथिलीशरण गुप्त आदि सभी ने अपने काव्य में लोकहीत की ही बात की है। यही लोकहीत की भावना मनुष्य को मनुष्य बनाती है। उसके भीतर सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को जन्म देती है। उसे संघर्ष के लिए प्रेरित करती है। अंग्रेजों के सत्ताधीश होने पर उन्हें यह देश चलाने के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता थी फलस्वरूप उन्होंने शिक्षा का मार्ग सभी वर्गों के लिए खोल दिए। जो शिक्षा भारत में कभी केवल एक वर्ग तक सीमित थी, वह सभी जाति, धर्म, वर्ग, पंथ के लिए खोल दिए गए। जब वे लोग उच्च शिक्षा हेतु विदेश गए तब उन्हें यह एहसास हुआ कि वे वैचारिक दृष्टि से कितने पिछड़े हुए हैं। भारत लौटने पर



Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

SJIF Impact- 5.67

उन्होंने कई सुधारवादी आंदोलन चलाए। समाज में व्याप्त कई बुराइयों, कुरीतियों का खुलकर विरोध किया। इन सुधारवादी आंदोलन को आगे बढाने में राजाराम मोहन रॉय, न्यायमूर्ति रानडे, डॉ. आंबेड़कर आदि नेता प्रमुख थे। इस सुधारवादी आंदोलन तथा परिवर्तन की धारा पर भारतीय साहित्यकारों ने अपनी कलम चलाई। सियारामशरण गुप्त ने अपनी कविता 'एक फूल की चाह' में 'छुआछूत' की समस्या का प्रखरता से विरोध करते हुए कहते है कि ''यापी ने मंदिर में घुसकर/किया अनर्थ बड़ा भारी/कलुशित कर दी है मंदिर की/चिरकालिक शुचिता सारी।/ऐ. क्या मेरा कलुश बडा है/देवी की गरिमा से भी,/किसी बात में हूँ मैं आगे/माता के महिमा के भी/मॉ के भक्त हुए तुम कैसे/करके यह विचार खोटा?/मॉ के सम्मुख ही मॉ का तुम/गौरव करते हो छोटा'⁴ सियारामशरण गुप्त ने अपनी इस कविता के माध्यम से समाज में व्याप्त छूआछूत की इस भावना का विरोध करते हुए कहा कि क्या में देवी मां से भी बड़ा हूँ। तुम अपनी ही मॉ की महिमा को कम, उनके गौरव को छोटा कर रहे हो। तुम्हारे विचारों में ही खोट है। मेरे स्पर्श मात्र से ही मंदिर कैसे कलुशित हो सकता है। मंदिर की चिरकालिका शुचिता कैसे अशुद्ध हो सकती है। अपनी इन पंक्तियों के माध्यम से सियारामशरण गुप्त जी ने समाज के उस वर्ग पर कड़ा प्रहार किया है जो समाज की इन पिछड़ी सोच में कैद है। वे आज भी मनुष्य को मनुष्य से अलग समझते है। जो वर्णाश्रम व्यवस्था के जंजीरों में जकड़े हैं। ऐस ही वर्ग के भौडापन को सियारामशरण ने अपने इस काव्य के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया है।

आधुनिक काल में मुद्रण के अविष्कार ने समग्र विश्व में कांति आयी। मुद्रण के अविश्कार के कारण ही पत्रकारिता का भी जन्म हुआ। जनता में राष्ट्रीयता के बीज बोने में पत्रकारिता का विशेष महत्त्व रहा है। बंगाल में प्रकाशित 'बंगाल गजट' अर्थात 'हिक्की गज़ट' अखबार के संपादक जेम्स ऑगस्ट हिक्की जो स्वयं ब्रिटिश नागरिक थे। पत्रकारिता को ही अपना धर्म एवं कर्म समझकर, उन्होंने अंग्रेजों की नीतियों के ख़िलाफ अपने अखबार के माध्यम से आवाज़ बुलंद की। भले ही उन पर कई प्रतिबंध लगाए गए परंतु उन्होंने अपनी आवाज़ को मुखर ही रखा। उनकी इसी निर्भयता ने भारतीय पत्रकारों को नई दिशा दी। जो आवाज़ 1857 ई. की लड़ाई में कहीं दब गई थी, स्वाधीनता का स्वर सुप्त रूप से भारतीयों के मन में कही मौजूद था। उस स्वर को इन पत्र-पत्रिकाओं ने हवा दी। भारतीय पत्रकारों और साहित्यकारों ने जनता के डर को समाप्त कर उन्हे निर्भीक बनाया। उनके स्वाभिमान, आत्मसम्मान को जगाकर उन्हें भारतीय होने का अहसास दिलाया। इन पत्रकारों ने साहित्यकारों ने अपने लेख, कहानी, निबंध, काव्य, प्रहसनों के माध्यम से भारतीयता के स्वर को बुलंद किया। बालमुकुंद गुप्त ने 'शिवशंभु के चिट्ठे' इस प्रसिद्ध व्यंग्य लेख के माध्यम से ब्रिटिश शासकों पर तीखा प्रहार किया। लोगों के भीतर आज़ादी के बीज बोने हेतु हमारे स्वतंत्रता सेनानी प्रयास कर रहे थे तो दूसरी ओर अधिकतर भारतीय साहित्यकार अपनी लेखनी से जनता को जागरूक कर रहे थे। अधिकांश साहित्यकारों की रचनाएँ राष्ट्रीय चेतना तथा समाज सुधार पर आधारित थी। जैसे जयशंकर प्रसाद रचित नाटक 'चंद्रगुप्त', मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती', सियाराम गुप्त की 'एक फूल की चाह' भारतेंदू हरिश्चंद्र की 'भारत दुर्दशा', सुभद्राकुमारी चौहान की 'झॉसी की रानी', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का 'पराजय गीत, रामनरेश त्रिपाठी का 'मानसी' काव्य संग्रह, रामधारीसिंह दिनकर की अधिकांश रचनाएँ जैसे 'कुरुक्षेत्र', 'हुँकार' आदि अनगिनत रचनाएँ राष्ट्रप्रेम तथा जनजागरण से भरी हुई हैं। माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' कविता में प्रतीक के माध्यम से राष्ट्रप्रेम को अभिव्यक्त करते हुए कहा है- "चाह नहीं में सुरबाला के/ गहनों में गूँथा जाऊँ/ चाह नहीं प्रेमी-माला में/ बिंध प्यारी को ललचाऊँ/- चाह नहीं सम्राहों के शव / पर, हे हरि, डाला जाऊँ / चाह नहीं, देवों के सिर पर / चढूँ भाग्य पर इठलाऊँ / मुझे तोड़ लेना वनमाली / उस पथ पर देना तुम फेंक / मातृभूमि पर शीश चढ़ाने / जिस पथ जावें वीर अनेक" इन पंक्तियों के माध्यम से माखनलाल जी ने पुष्प के माध्यम से राष्ट्रीयता को अभिव्यक्त कर मानव को नव संदेश दिया। वह अपनी आत्मभिव्यक्ति को स्पष्ट करते हुए माली से कहता है कि उसे उस पथ पर फेंक देना. जिस पथ पर से हमारे वीर गुजरेंगे। स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में हमने देखा है कि किस तरह विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग, पंथ के लोगों ने अपने आप को भूलकर, केवल यह याद रखा कि मैं भारतीय हूँ। जयशंकर प्रसाद जी चंद्रगुप्त नाटक में अलका तक्षशीला के नागरिकों को संबोधित करते हए कहते है कि " हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती/स्वयंप्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती-/ अमर्त्त्य वीरपुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो, प्रशस्त पुण्य-पंथ है -बढ़े चलो-बढ़े चलो!" ग्रीकों की विजय लालसा से पुनः आर्यावर्त पद दलित होने जा रहा है। ऐसे कठिन परिस्थिति में तक्षशीला के वीर सपूतों यह

39

E-155N 2582-5429



Akshara Multidisciplinary Research Journal Single Blind Peer Reviewed & Referred International Research Journal

January 2023 Special Issue 07 Volume III (B)

SJIF Impact. 5.67

मालभूमि आपको स्वतंत्रता. हेतु. पुण्य पंच पर चालने हेतु. आपको नितंतर आमें बढने हेनू पुकार यही है। निर्मय होकर आग बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह पंक्तियां राष्ट्रप्रेम और स्वतंत्रता संघर्ष के लिए कात्तान करती 81

भारतीय साहित्यकारों के कलम ने आम जन में राष्ट्रीयता की भावना भरी। जिसके फलकरकल लगी अपना जाति धर्म, यम, पंथ, संप्रयाय भूलकर, मिलजुलकर, एकयूसरे का हाथ पकड़कर, क्षेंय से काल जिल्लाकर सन्दीय आंदोलन में संकिय रूप से भाग लिया। असंभव सी प्रतीत होने वाली अपनी जानवदी को प्राप्त किया। 15 अगरत 1947 ई. में यह देश आजाद हुआ और राजतंत्र से हटकर इस देश में लोकतंत्र स्थापित हुआ। फिर वह स्वर्णिम दिवस भी आया जिस दिन संसद के पटल पर डॉ. बाबासाहब आवेडकर की आव्यकणा में मालीज सविधान को प्रस्तुत किया गया और तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उसे मंजूर किया। राष्ट्रीयला को परिभाषित करते हुए डॉ. आंबेडकर ने कहा - "मैं प्रथम भारतीय हूँ, मध्य में भी भारतीय हूँ और जीवन के अंत तक में भारतीय ही रहेंगा।'

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हम भारतवासियों ने बड़े ही सुंदर सुनहरे सपने देखें। देश में रामराज्य स्थापित होगा। चारों तरफ खुशहाली होगी। इस देश में अमन-चैन स्थापित होगा। अभिव्यक्ति की जाजादी होगी। तब हम बड़े गर्व से, अपने अधिकार से, स्वाभिमान के साथ, आत्मविश्वास के साथ एक स्वर में कई सकेंगे कि हम आज़ाद है। यह हमारी भारत भूमि है, जिस पर हमें गर्व है। परंतु यह कल्पना, कल्पना ही रह गई और मोहमंग की स्थिति का निर्माण हुआ। देश भ्रष्टाचार में लिप्त हो गया। जो नेता कभी हमारे आदर्श थे वे ही कमजोर और भ्रष्ट हो गए। यह मुल्क दो हिस्सों में बेंट गयां। एक भारत बना तो दूसरा पाकिस्तान। वह विभाजन अपने साथ भीषण हिंसा और रक्तपात लाया। कत्लेआम में हजारों लोग मारे गए लाखाँ लोग जन्म घर-बार, कारोबार छोड़कर अनजान स्थानों पर जाने हेतु मजबूर हुए। विभाजन की इस त्रासदी को वज्ञपाल ने अपने उपन्यास 'झूठा सच' और भीष्म साहनी ने 'तमस' में दर्शाया है। जो लोग एक-दूसरे से क्यों से कांग मिलाकर आज़ादी की लड़ाई लड़े थे, वे एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए, एक-दूसरे को शक की नजर से देखने लगे, आज भी यही स्थिति हमें दिखाई देती है।

1962 में चीन ने हम पर आकमण किया, 'हिन्दी–चीनी भाई–भाई' का नारा लगाकर हमारी ही बैंट पर खंजर घोंपा। इस दौर में हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से पुनः देशभक्ति का बीज बोबा। हमारे राष्ट्रसंतों ने अपने भजनों द्वारा भारतीयता की लौ जगाई। राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज ने सरहद पर भारतीय सिपाहियों के समक्ष भजन गाते हुए कहा—"आओ चीनियों, मैदान में, देखो हिंद का हाथ।/ अब हिंद जाग गया तुम्हारे साथ।।/ भारत से लड़नेवाले हो? ईश्वर से जरा तो डरो।/ अरे सुन लो।/ क्यों सलार दुखाते हो? शांति भंग करवाते।/ सब देश को कोध चढ़ाकर, अपना नाश कराते हो।" हमारे देश में कई विदेशी शासक आए। आर्य हो या यूनानी, चाहे मुगल हो या ब्रिटिश, चाहे फांसीसी हो या पुर्तगाली जो भी यहाँ आया यहीं का हो गया। जो यहाँ आकर यही बस गया, वो ही भारतीय कहलाया। परंतु आज मनुष्य, मनुष्य में ही भेद किया जा रहा। उन्हें विभिन्न आधारों पर चाहे जातिगत हो या धर्मगत, चाहे भौगोलिक हो या भाषागत बॉटा जा रहा। मनुष्यता का भाव कहीं खो गया। अहिंसा के स्थान पर हिसा बढ़ने लगी। मनुष्य से अधिक पशु को महत्त्व दिया जाने लगा। देशभक्त और देशदोही के संबंध में सकारात्मक कम और नकारात्मक चर्चा और अधिक छिड़ने लगी। ऐसा लगने लगा कि देश दिशाहीन होने लगा है। ऐसी स्थिति में पुनः साहित्यकारों को अपनी कलम उठानी होगी, देश को पुनः एकता के बंधन में बांधना होगा। इस देश के स्वर्णीम इतिहास को दोहराना होगा। भारतीयों में भारतीयता की भावना भरनी होगी. मानव में मानवता जगानी होगी। तभी यह देश महान बन सकेगा, विश्वगुरू बन पाएगा। संदर्भ सूची:-

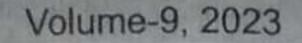
1.हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियॉ, शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, अठारहवीं संस्करण, 2006, पृ. क. –72 2.श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड, हनुमानप्रसाद पोद्दार, गोरखपुर, गीताप्रेस, उनतीसवॉ पुनर्मुदण, स. 2068. पू.क. 17 3.स्पर्श भाग-2, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद 2007, मनुष्यता, मैथिलीशरण गुप्त, नई दिल्ली, संस्करण दिसंबर

4.स्पर्श भाग 1, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंघान और प्रशिक्षण परिषद 2006, एक फूल की चाह, सियारामशरण गुप्त, नई दिल्ली,

5.काव्य कुसुम काव्य संग्रह, संपादन प्रो. डॉ. माया सिंह, पुष्म की अभिलाषा, माखनलाल चतुर्वेदी, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

संस्करणः 2006, पृ. क. 11

6.चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण नवंबर 1984, पृ. क. 153 7.ज्ञानेश्वर दुर्गादास रक्षक, जनकांतीच्या पाऊलवाटा, नागपूर, आकांक्षा प्रकाशन, पहिली आवृत्तिः 30 एप्रिल, 2010, पृ. कं. 26,

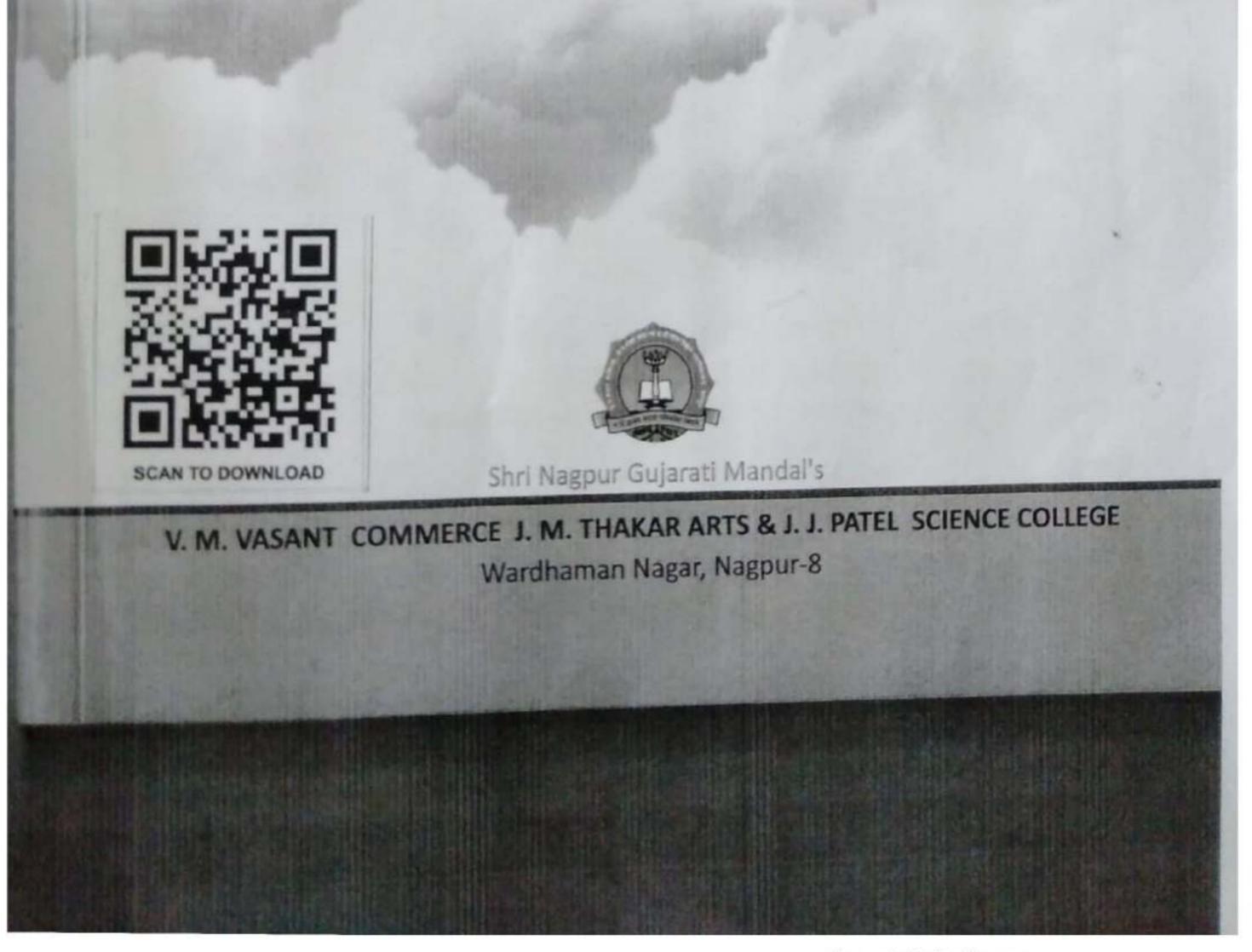


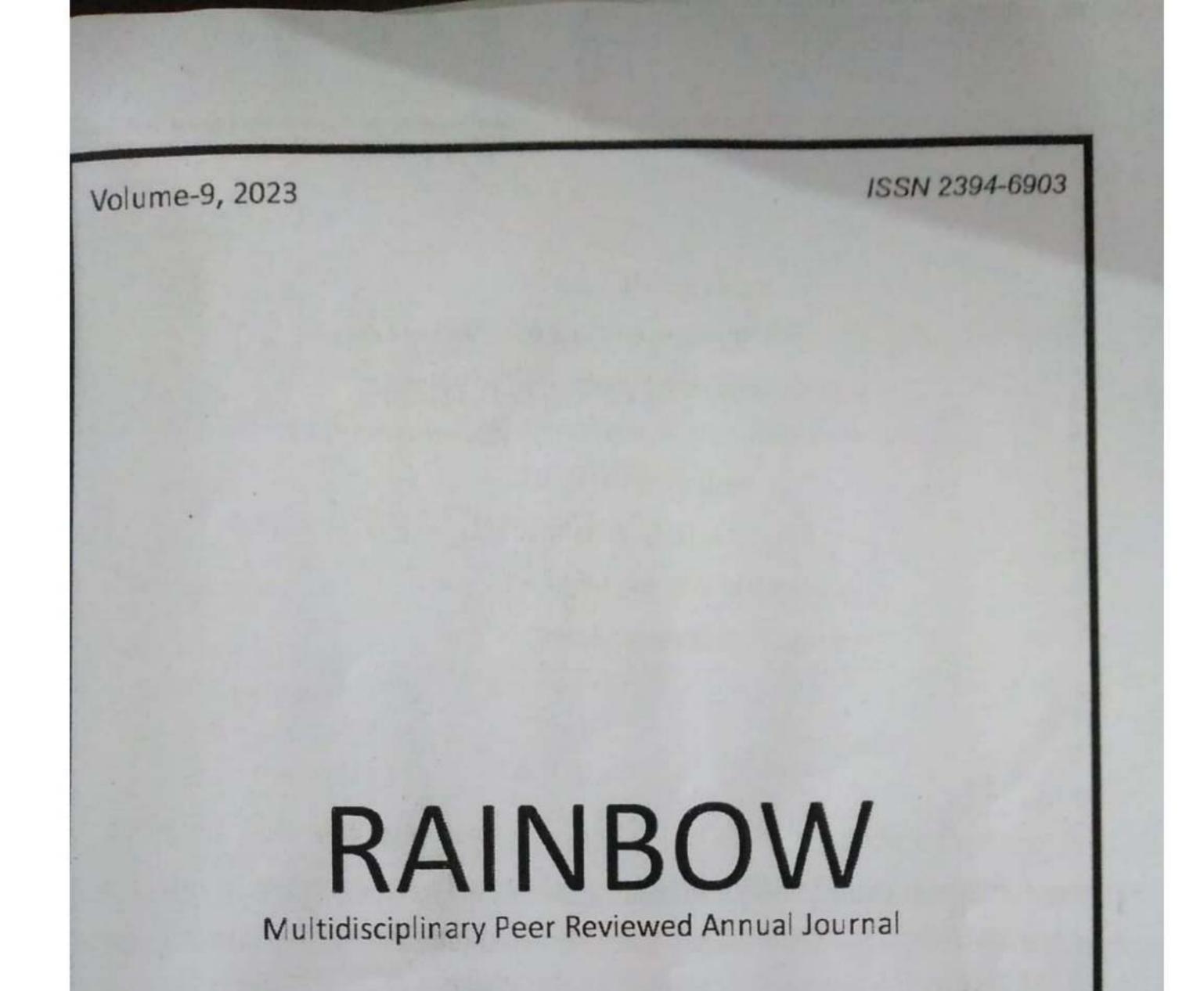
ISSN 2394-6903

22-23

RAINBOW

Multidisciplinary Peer Reviewed Annual Journal







Shri Nagpur Gujarati Mandal's VMV Commerce, JMT Arts and JJP Science College WARDHAMAN NAGAR, NAGPUR-440008.

Ph.: 2764391, 2733941, 6508158 E-mail: vmvnagpur@gmail.com, rainbowvmv@gmail.com Website : www.vmvnagpur.org

Publisher

VMV Commerce, JMT Arts & JJP Science College

Wardhaman Nagar, Nagpur

Printer

R. R. Offset Works

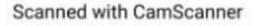
H.B.Town, Old Pardi Naka,

Bhandara Road, Nagpur.

Rainbow Vol.-9, March 2023. All rights reserved. No part of this publication may be reproduced in any form or by any means or used by any information storage and retrieval system without written permission from

the copyright owner.

Opinions expressed in the articles, research papers are those of contributors and do not necessarily reflect the views of the publisher. The publisher is not responsible (as a matter of product liability, negligence or otherwise) for any consequences resulting from any information contained therein.



ADVISORY BOARD

Dr. Ashish Kumar Kandhway

President,

1.

Viishwa Hindi Sahitya Parishad, New Delhi E-mail: ashishkandhway@gmail.com

Dr. Anjaneyulu Kola 2.

Associate Professor of Commerce Vivekananda Govt Degree College, Vidyanagar, Hydrabad

Dr. H. R. Kulkarni 3.

Principal (Ex-Chairman Physics Board, Savatribai Phule Pune University) JSPM's Jayawantrao Sawant College of Commerce & Science, Hadapsar, Pune E-mail : hrkulkarni@rediffmail.com

Dr. Dhanyakumar P. Jain,

Director,

AJMVPS, HKCCSM Institute of Management Research and Rural Development, Lal Taki Road, Ahmednagar E-mail : dp_jain@yahoo.com

: Principal Dr. M. G. Chandekar **Chief Editor** : Dr. M. J. Kolhatkar Editor

Editorial Board

: Dr. S. R. Mishra : Dr. Savita Devgirkar : Dr. A. K. Bondre : Dr. S. R. Choubey

RAINBOW- Multidisciplinary P	eer Reviewed Annual Journal VolIX	

INDEX

Commerce		
1 Digital Banking in India: A Bird's Eye V	View Dr. K.Anjaneyulu	01
2. Trends And Progress Of Digital Curren	cy S. Nagamani	12
In Select Developing Countries		
3. Retail Lending In Digital Banking	M. Sangeetha	29
Certain Emerging Issues		
4. Impact Of Gst On Hotel Industry	Dr. D. N. Padole	46
5. Retention Strategies In The It Industry	Dr. Shrikant Pajankar	50
6. Dynamics of Management of Advances	s Dr. Manish B Vyas	55
Public Sector Commercial Banks		
7. Challenges and Prospects of Sustainabl	le and Mrs.Meenal Rajdev	64
Affordable Housing in India	Dr. P.M Chauhan	
8. A Study of Use And Development of	Rahul Tiwari	69
UPI System In India	Dr. Vishal N. Thangan	
9. A Study of Health Insurance	Mrs. Shilpa Pravin Yadao	77
Awareness In India	Dr. R. H. Nagarkar	
10. जागतिकीकरणाचे समाजावर होणारे परिणाम	प्रा.राजेष स. बहूरुपी	84
Arts & Social Science		
11. Role of Bapurao Shedmake In The Rev	volt of Prof. Shamrao Koreti	87
1857 From Chandrapur District		
12. The Engagement of The Movie RRR	Dr. Purabi Bhattacharyya	93
with Indian History		
13. मराठे, निजाम संबंध - एक आढावा.	प्रा.शिवचरण ना. घांडे	97
14. महिला सक्षमीकरण आणि पंचायत राज व्यवस्था	अमर काशिनाथ भोगे	101
	डॉ. शिला संजय खेडीकर	
15. वर्धा जिल्ह्यातील पंचायतराज संस्था व	मनोज गं. राऊत	106
स्थानिक स्वराज्य संस्थेतील		
16. Dr. Babasaheb Ambedkar and	MR. Vilas B. Kamble	112
Economical thoughts		
Hindi		
17. समकालीन हिन्दी काव्य में पर्यावरण चेतना	प्रीति अज्ञात	117
18. हिन्दी काव्येत्र साहित्य में पर्यावरण चिंतन	डॉ. जया आनंद	125
19. साहित्य में पर्यावरण चेतना	अलका अग्रवाल सिग्तिया	131
20. आधुनिक हिंदी काव्य में पर्यावरण चेतना	डॉ. श्यामप्रकाश आ. पांडे	139

RAINBOW- Multidisciplinary Peer Reviewed Ar	nual Journal VolIX	ISSN 2394-6903
21. डॉ. मिथिलेश अवस्थी के साहित्य में पर्यावरण चिंतन	डॉ.सुमेध पी.नागदेवे	145
22. समकालीन कविताओं में प्रकृति व पर्यावरण चेतना के स्वर	डॉ. सपना तिवारी	151
23. मानवीय मूल्य और हिंदी कविता	डॉ.संजय घोटे	159
24. भवानीप्रसाद मिश्र की रचना 'सतपुडा के घने जंगल' में प्रकृति	डॉ. अर्शिया सैय्यद अफसर अली	165
25. हिंदी उपन्यासों में प्राकृतिक असंतुलन का चित्रण	डॉ. विकास विव्रलराव कामठी	171
26. 'अरण्य में सुरज' उपन्यास में आदिवासी चेतना	प्रा.कमलाकर नवघरे	177
27. हाइकु में पर्यावरण विमर्श	जागृति सिंह	184
28. समकालीन साहित्य में पर्यावरण विमर्श	रोशनी दिनेश नायक	188
29. दलित सौंदर्यशास्त्र : वाद-विवाद एवं संवाद	डॉ. सोनू जेसवानी	191
English		
30. Ret Samadhi In The Context of	Prof. Supantha Bhattacharyya	200
Partition Literature		
31. Ecofeminism : A Bond Between	Dr. Leena B Chandnani	204
Woman and Nature	Dr Suman Keswani	
32. Logicalattitude in Arun Joshi's	Dr. Sopan S. Bonde	209

Marathi		
33. आदिवासी कविता	डॉ. राखी मंगेश जाधव	214
Gujrati		
34. ફાધર વૉલેસ	હર્ષિંદાબેન બોસમીયા	220
35. "સુદામાના ચરિત્ર વિષયક તુલનાત્મક દષ્ટિ…"	પ્રા.ઈલા શુકલા	223
36. "ગુજરાતી નાટયક્ષેત્રે શ્રી ચં.ચી.નું પ્રદાન"	ડૉ. અસ્મિતા યાજ્ઞિક	225
37 ''આપુનિકતા – એક દાર્શનિક વિષય''	પ્રા. હિમાંશુ મહેશ શુકલા	228
Science		
38. Structural and Magnetic studies	S. R. Choubey, S. C. Gedam	231
of hexagonal Ferrites	B.T .Borkar, A. B. Borkar	
39. Hexgonal Ferrite with their structural Studies	S. R. Choubey, S.C. Gedam	239
	B. T. Borkar, S. C. Gedam	
40. Antifungal Activity of Spiro-	Pranali Chaudhari, Ruksar Qureshi	248
Piperdine Derivatives	Jay Tanna , Nilesh Gandhare	

डॉ. मिथिलेश अवस्थी के साहित्य में पर्यावरण चिंतन

डॉ.सुमेध पी.नागदेवे

डॉ.मधुकरराव वासनिक पी.डब्लू.एस.कला, वाणिज्य, विज्ञान, महाविद्यालय, कामठी मार्ग, नागपुर-२६

भोध सारांशः

मनुश्य और पर्यावरण का एक विशिश्ट नाता है।यदि पर्यावरण दूशित हुआ तो इसके गंभीर परिणाम समग्र सृष्टि पर होगा। प्राचीन काल में गुरूकुल प्रथा के समय समग्र वसुंघरा हरी भरी थी। गुरू अपने शिश्यों को पर्यावरण को स्वच्छ रखने हेतु मार्गदर्शन करते थे। उनकी दिनचर्या में ही स्वच्छता और वृक्षारोपन का समावेश था। वर्तमान में हमारी धरती पर्यावरण संबंधी अनेक चिंताओं का सामना कर रही है। जैसे ग्लोबल वार्मिंग, अम्लीय वर्शा, वायु प्रदूशण, जल प्रदूशण, मृदा प्रदूशण, शहरी फैलाव, अपशिश्ट निदान, ओज़ोनपरत में कमी, जलवायु परिवर्तन आदि। बढ़ते औद्योगिकरण तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण पर्यावरण प्रदूशित हो रहा है। हिन्दी साहित्यकारों ने भी पर्यावरण से जुड़ी इन समस्याओं पर अपनी कलम चलाई है। डॉ. मिथिलेश अवस्थी के साहित्य में भी यह चिंता साफ नजर आती है। उनकी लघुकथा, काव्यसंग्रह तथा हाइकु में वे जीवनमूल्यों के साथ—साथ हमें पर्यावरण

Scanned with CamScanner

सकट, वृक्ष कटाइ, पूणता मनुश्य और पर्यावरण का एक विशिश्ट नाता है। बिना पर्यावरण के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यही कारण रहा है कि मनुश्य ने प्रकृति के ही तत्त्व पंचमहाभूतों को ही ईश्वर मानकर उसकी पूजा की। आरंभ में मनुश्य पर्यावरण के प्रति जागरूक हुआ करता था क्योंकि वह प्रकृति के सानिध्य में

संकेत बिंदुः गुरूकुल प्रथा, पर्यावरण का संरक्षक, पर्यावरण प्रदूशण, जंगली जीवन, नवनिर्माण, जल संकट, वृक्ष कटाई, पूर्णता

जंगली जीवन जी रहे है जो पर्यावरण को दूशित करते हैं। वातावरण में कही भी कचरा, पन्नी फेंक कर गंदगी फैलाते हैं। उन्होंने मनुश्य को आगाह किया यदि वृक्ष नहीं बचे तो उनका अस्तित्व नश्ट हो जाएगा, उनकी आने वाली पीढ़ी बच नहीं पाएगी। लघुकथा के माध्यम से लेखक ने बढ़ते जल संकट की ओर हमारा ध्यान आकर्शित किया है। 'हाइकु के माध्यम से धरा की हताशा को दर्शाते हुए बढ़ते औद्योगिकरण, अम्लीय वर्शा, नवनिर्माण हेतु मिट्टी और रेत का दोहन, आतिशबाजी आदि पर कटाक्ष किया है और यह संदेश दिया है कि पेड़ लगाने से ही यह वसुंधरा पुनः हरी भरी हो जाएगी और हरित वसुंधरा कहलाएगी।ईश्वर के वरदान के रूप में यह प्रकृति मिली है। उसकी रक्षा करना ना केवल हमारा दायित्य बल्कि हमारा धर्म भी है।

के प्रति, पारिस्थितिकी तंत्र के असंतुलन के प्रति चिंतित नज़र आते हैं। उनके अनुसार वे मनुश्य

RAINBOW- Multidisciplinary Peer Reviewed Annual Journal Vol.-IX ISSN 2394-6903

रहकर ही अपना जीवन व्यापन करता था।प्राचीन काल में गुरुकुल प्रथा थी उस समय समग्र वस्ंघरा हरी भरी थी। उस समय भी गुरू अपने शिश्यों को पर्यावरण को स्वच्छ रखने हेतु मार्गदर्शन करते थे। उनकी दिनचर्या में ही स्वच्छता और वृक्षारोपन का समावेश था क्योंकि स्वच्छ पर्यावरण ही मनुश्य को प्रफुल्लित कर, उत्साह भर, भीतर ताजगी प्रदान कर नव ऊर्जा भर देती है। हम समी जानते है पर्यावरण अच्छा रहेगा तो मनुश्य स्वस्थ रहेगा, समस्त जीव जंतु, पशु पक्षी स्वस्थ रहेंगे और यदि पर्यावरण दूशित हुआ तो इसके गंभीर परिणाम समग्र सृष्टि पर होगा। कहते है मनुश्य जब असम्य था वास्तव में तब ही वह सभ्य था क्योंकि तब वह पर्यावरण का संरक्षक था। तबवह धरती का दोहन नहीं करता था परंतु जब मनुश्य सभ्य बना तब अपने भौतिक सुख हेतु इस हरी भरी वसुंघरा का अधिक से अधिक शोशण करने लगा, उसका दोहन करने लगा। वर्तमान में हमारी धरती पर्यावरण संबंधी अनेक चिंताओं का सामना कर रही है। जैसे ग्लोबल वार्मिंग, अम्लीय वर्शा, वायु प्रदूशण, जल प्रदूशण, मुदा प्रदूशण, शहरी फैलाव, अपशिश्ट निदान, ओज़ोनपरत में कमी, जलवायु परिवर्तन आदि । साहित्यकार स्वयं प्रकृति प्रेमी रहता है। आदिकाल से ही जब भी श्रृंगार रस से संबंधित काव्य रचता है तब वह प्रकृति का ही आधार लेता है। चाहे संयोग श्रृंगार हो या वियोग श्रृंगार प्रकृति को आधार मानकर वह अपने काव्य को गढ़ता है। कभी बारहमासा शैली का वर्णन कर नायिका के वियोग वर्णन को व्यक्त करता है तो कभी प्रकृति को माध्यम बनाकर नायिका में ही प्रकृति के विराटता के दर्शन कराता है। अतः वह प्रकृति को ही आधार बनाकर रहस्यवाद की स्थिति में पहुँचता है। एक कवि, साहित्यकार सदैव प्रकृति प्रेमी रहता है। प्रकृति का सानिध्य पाकर ही कवि उस रमनीय वातावरण में रमकर अपनी कविता गढ़ता है। आधुनिक काल में बढ़ते औद्योगिकरण तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण पर्यावरण प्रदूशित हो रहा है। नारिस्थितिक तंत्र में असंतुलन हो रहा है। इसी कारण वातावरण में बदलाव होते हुए हम देख रहे हैं।पर्यावरण के दूशित होने, उससे उभरनेवाली समस्याओं के प्रति एक साहित्यकार सदैव चिंतित हता है और यही चिंता उसके लेखन में भी उभरकर आती है। साहित्यकार मानव हित, समाज हित, नोक हित को ध्यान में रखते हुए ही अपना साहित्य रचता है। अतः वह पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं से ह कैसे अछूता रह सकता है। हिन्दी साहित्यकारों ने भी पर्यावरण से जुड़ी इन समस्याओं पर अपनी लम चलाई है।डॉ. मिथिलेश अवस्थी के साहित्य में भी यह चिंता साफ नज़र आती है। उनकी घुकथा, काव्यसंग्रह तथा हाइकु में वे जीवनमूल्यों के साथ–साथ हमें पर्यावरण के प्रति, पारिस्थितिकी त्र के असंतुलन के प्रति चिंतित नज़र आते हैं।'जंगली जीवन' नामक लघुकथा में ग्लोबल वार्मिंग की मस्या तथा मनुश्य को पर्यावरण के प्रति स्वयं के कर्त्तव्य से अवगत कराते हुए कहते है—" ईशा ने नने शिक्षक से कहा— 'सर! आपने कक्षा में पढ़ाया था— पर्यावरण का मनुश्य से गहरा संबंध है। वति का संतुलन तथा मनुश्य का अस्तित्व पर्यावरण पर निर्भर है। मनुश्य की स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण आज ग्लोबल वार्मिंग की समस्या खड़ी हो गई है। अतः प्रत्येक मनुश्य को पर्यावरण के प्रति अपनी म्मेदारी को समझना और निभाना चाहिए। सर! आपने यह भी कहा था– वास्तव में जीवन के लिए ल आवश्यक हैं, फिर ये जो नदी के किनारे से लगातार रेत की खुदाई हो रही है, जो तमाम जंगल

146

RAINBOW- Multidisciplinary Peer Reviewed Annual Journal Vol.-IX ISSN 2394-6903

काटे जा रहे हैं, और ये जो पिकनीक स्पॉट में चारों तरफ कचरा, पन्नी और गंदगी फैली है, ये क्या है?' विद्यार्थियों की संजीदगी कभी—कभी शिक्षकों को भी बहुत गहरे तक सोचने के लिए विवश कर देती है। उन्होंने जवाब दिया— 'बेटा ये जंगली जीवन है'।'''विद्यार्थी के ग्लोबल वार्मिंग के प्रश्न पर शिक्षक का वह उत्तर कि यह जंगली जीवन है। यह अपने आप में मार्मिक उत्तर है। मनुश्य अपने स्वार्थ में अंधा होकर किस तरह धरती का शोशण कर रहा है अपने भौतिक सुख सुविधाओं हेतु इस हरित वसुंधरा को दोहन कर रहा है। इतना ही नहीं वातावरण में कही भी कचरा, पन्नी फेंक कर गंदगी फैला रहा है और अपनी असभ्यता को प्रकट कर रहा है। इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने शिक्षक विद्यार्थी के संवाद द्वारा प्रकृति के दोहन का चित्र सामने रखा है।

वृक्ष और मनुश्य के बीच के अंतर को समझाते हुए 'बरगद उवाच' इस लघुकथा में वृक्षों द्वारा आयोजित सभा में बरगद ने अपनी राय व्यक्त करने के लिए अन्य वृक्षों से निवेदन किया, बबुल ने तर्क किया कि—"मनुश्य जब जीवनदायिनी वायु, फल, औशधि देने वाले पेड़—पौधों को नहीं बख़्शता तो उससे क्या अपेक्षा की जा सकती है?' नीम ने तर्क दिया- 'पुरूशों के लंबे जीवन के लिए स्त्रियॉ ऑवला, बरगद, पीपल, तुलसी, का पूजन करती है। रक्षा सूत्र बॉध कर प्रदक्षिणा करती है और उन्हीं के समाज के पुरूश हमारी हत्या किए जा रहे हैं, यह कहाँ तक ठीक है।' सबकी बात सुनने के बाद श्री बरगद ने कहा—'संपूर्ण प्राणी जगत में मनुश्य ही घोर स्वार्थी है, भौतिक लाभ के चलते वह यह नहीं समझ पा रहा है कि हमें नश्ट कर वह वास्तव में अपने बाल बच्चों तथा अगली पीढ़ी के लिए संकट पैदा कर रहा है।.. . खैर हम अपना कर्तव्य करेंगे। आखिर हममें और मनुश्य में अंतर जो है।" इस लघुकथा के माध्यम से लघुकथाकार ने मनुश्य को आगाह किया यदि वृक्ष नहीं बचे तो उनका अस्तित्व नश्ट हो जाएगा, उनकी आने वाली पीढ़ी बच नहीं पाएगी। वृक्ष के माध्यम से समस्त चर जीवों को जीवनदायिनी प्राण वायू, फल, औशघि प्राप्त होती है। इसलिए लेखक आने वाले खतरे के प्रति मनुश्य को आगाह कर रहे 言1 हमारी परंपराओं, रीतिरिवाजों में प्रकृति का विशेश महत्व है। कही वृक्षों की पूजा की जाती है तो कही प्रकृति आस्था का प्रतीक बनती है। ऐसी ही एक मान्यता के आधार पर जब कही यात्रा पर जा रहे होते हैं और बीच में कही नदी आती है तो मनुश्य उस नदी में सिक्का डालकर ईश्वर से अपनी मनोकामना पूरी करने हेतु कामना करता है। 'कहाँ है नदी माई.....' इस लघुकथा के माध्यम से ग्लोबल वार्मिंग के चलते किस तरह नदी सूख रही है, उस संकट को दर्शाते हुए लेखक ने अपनी इस लघुकथा में कहा है कि — "बप्पा यात्रा से पहले ही कह देते— 'कुछ छुट्टा जेब में रख लेना, रस्ता में जो भी नदी माई परेगी, चढ़ाना परेगा।' फिर चाहे रेल हो या बस जैसे ही कोई नदी आती बप्पा बड़ी श्रद्धा के साथ पैसे चढ़ाते और आँखे बंद कर ध्यान मग्न हो जाते... फिर आज क्या हो गया? मैंने दुबारा कहा 'बप्पा! पैसे चढ़ा दो एक लंबी सॉस खींचते हुए उन्होंने कहा-'आज कल कहॉ हैं नदी माई?... सारी ममता सुख गई। पैसे फेंको तो रेत में घॅस जाएँगे या फिर पत्थर से टकरा के छन्न कर देंगे' एक ही सॉस में बप्पा ने पूरी बात कह दी और गुमसुम खिड़की के बाहर देखने लगे।"" प्रकृति तो हमारे संस्कारों में बॅसी है और नदी जो कि हमारी माँ है, उसका इस तरह सूख जाना बेहद दुखदायी है। नदी के सूख जाने की अवस्था देश के

RAINBOW- Multidisciplinary Peer Reviewed Annual Journal Vol.-IX ISSN 2394-6903 विविध राज्यों में उभरते जल संकट को इंगित करता है। इस लघुकथा के माध्यम से लेखक ने बढ़ते जल संकट की ओर हमारा ध्यान आकर्शित किया है तथा जल संरक्षण की दिशा में कदम उठाने हेतु प्रेरित किया है।

'पेड़, तुम्हें चुनौती है' इस कविता में वृक्ष कटाई के संदर्भ में कहते है कि ''पेड़! लेकिन/हम ऐसा नहीं करेंगे/तुम्हारे मरने की राह न तकेंगे/ जीते जी तुम्हारी टहनियाँ/ डालें व तनें तोड़कर/ ज्यादा से ज्यादा /तुम्हारी/ बहुत गहरी जड़े छोड़कर/ हम/ तुम्हारे टुकड़े—टुकड़े कर देंगे/ और/ कौड़ियों के मोल बेच देंगे।'' इस कविता में कवि ने मनुश्य की स्वार्थी प्रवृत्ति की ओर ध्यानाकर्शित किया है कि कैसे वह अपनी स्वार्थ पूर्ति हेतु वृक्ष की कटाई कर कौड़ियों के मोल बेच देता है। मनुश्य यह भूल गया है कि वृक्ष कटने से एक दिन ऐसा आएगा कि मानव अपने अस्तित्व को बचाने का प्रयास करेगा परंतु तब तक सब कुछ नश्ट हो जाएगा। उसके हाथ में कुछ नहीं रहेगा ऐसी स्थिति में तब मानवता भी रोएगी और अपने किए पर पछताएगी।

'पूर्णता' इस कविता के माध्यम से कवि ने संसार के सार को, उसकी पूर्णता पर ध्यानाकर्शित करते हुए कवि कहते है कि ''कली से फूल बनना / क्या नहीं है उसकी पूर्णता / वहीं / जिसमें है निहित इस संसार का सार।/ वह कली/ फूल बने ही,/ कल से पहले/ भूल से/ न कोई उसे तोड़े, / बस वह चाहती है / थोड़ी सुरक्षा, / थोड़ी छाया / फिर वह पा लेगी / प्रस्फुटित हो / अपनी पूर्णता। इस कविता के माध्यम से कली अपनी पूर्णता की कामना हेतु इस संसार से थोड़ा स्नेह और प्रेम् की छाया की इच्छा व्यक्त कर, केवल और केवल संरक्षण की कामना करती है। ताकी वह भी पूर्णता को प्राप्त हो सके। यदि पेड़–पौधों को संरक्षण प्राप्त नहीं होगा तो इस नश्वर संसार में उनका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा जिससे मनुश्य ही क्या समस्त चर –अचर जीवों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। अतः हरित वसुंधरा हेतु इनका संरक्षण बेहद आवश्यक है तभी वह कली ही नहीं समस्त जड़-चेतन, चर-अचर जीव पूर्णता की स्थिति को प्राप्त हो पाएंगे। डॉ. मिथिलश अवस्थी ने हाइकु जैसी विशिश्ट काव्य विधा जो 5–7–5 के नियम पर आधारित होता है। जिसमें कम शब्दों में ही कवि को अपनी बात कह देनी होती है, जिसमें अर्थ की गहराई होती है, ऐसी विशिश्ट विधा में पर्यावरण के संबंध में 'पर्यावरण' नामकशीर्शक के अंतर्गत कई हाइकु लिखे है जैसे-"हवा औ' पानी / कर रहा अशुद्ध / युग प्रबुद्ध'..... 'मेघा चिंतित / जहरीले बादल / कहॉ बरसे?''मिट्टी–रेत का / निरंतर दोहन / नवनिर्माण'......'आतिशबाजी / आज खेल सायास / कल विनाश'......धरा हताश / अकिंचन बोध से / पुत्र लुटेरे।'......पेड़ उगाओ / फूल औ' फल पाओ / 'कल' बचाओ।'...... 'अगली सदी / हरियाली देखेगी / बस पन्नों में...... 'अद्भूत देन / मिली हमें प्रकृति / बचाना धर्म।" जैसे-जैसे यह युग प्रबुद्ध होता जा रहा है, वैसे वैसे हवा और पानी अशुद्ध होती जा रही है। बढ़ते औद्योगिकरण के कारण यह समस्या उत्पन्न होती जा रही है। कारखानों का अपशिष्टि पानी में बहाया जा रहा है जिससे पानी दूशित हो रहा है। कारखानों की चिमनी से निकलनेवाला धुऑ वातावरण को अशुद्ध करते जा रहा है। अपने दूसरे हाइकु के माध्यम से लेखक ने अम्लीय वर्शा की ओर हमारा ध्यान खींचा है। कारखानों से निकलनेवाला सल्फर

148

RAINBOW- Multidisciplinary Peer Reviewed Annual Journal Vol.-IX

डाइआक्साइडऔर नाइट्रोजन डाइआक्साइड बादलों के पानी के साथ किया करके नाइट्रिक अम्ल में परिवर्तित होकर तेजाब के रूप जमीन में बरसता है। इसलिए मेघा चिंतित है कि वह जहरीले बादलों के लेकर कहाँ जाए और कहाँ बरसे। अगले हाइकु में उन्होंने मनुश्यों पर कटाक्ष करते हुए कि कैसे वे नवनिर्माण हेतु मिट्टी और रेत का दोहन कर रहे है। केवल अपने भौतिक सुख सुविधा हेतु ना—ना प्रकार के निर्माण में जुटा है।

अपने आप को इस धरती कास्वयंभू मानकर इसके संसाधनों लूटता जा रहा है। अगले हाइकु में हमारे द्वारा की जानेवाली आतिशबाजी पर कटाक्ष किया है कि कैसे हम दीपावली का पर्व हो या जीवन में आनेवाली खुशियाँ जैसे शादी ब्याह हो कोई अन्य समारोह, खेल स्पर्धा का जीत हो या कोई उद्घाटन समारंभ मनुश्य आतिशबाजी का आनंद अवश्य लेता है। जिससे समग्र वातावरण दूशित हो जाता है जो हमारे कल के विनाश का कारण बन सकता है। अगले हाइकु में उन्होंने धरा की हताशा को सामने रखा है कि कैसे उसके पुत्र लुटेरे बन गए हैं, अपने भौतिक सुख हेतु अपनी माँ का ही दोहन कर रहे हैं। उन्हें इस बात का भी बोध नहीं हो रहा कि वे अपना ही विनाश कर रहे हैं। अगले हाइकु में उन्होंने अपनी धरा को कैसे बचाया जा सकता है कि इस पर ध्यानाकर्शित करते हुए कहा कि इस घरा को बचाने हेतु पेड़ लगाने की सलाह हाइकुकार दे रहे हैं। पेड़लगाने से ही यह वसुंधरा पुनः हरी मरी हो जाएगी और हरित वसुंधरा कहलाएगी।

यही वृक्ष हमें प्राणवायु के साथ अन्न प्रदान करते हैं, फल देते हैं, फूल देते हैं। पेड़ लगाने से ही हमारा भविश्य सुरक्षित रह सकता है। अगले हाइकु में मानव समाज को आगाह करते हुए कहते है यदि पेड़ नहीं लगाएंगे तो अगली पीढ़ी हरियाली नहीं देख पाएगी केवल इतिहास के पन्नों में वह इस हरियाली को देखेगी और कल्पना करेगी कि हरियाली कैसी थी? पर वह उसके सुखद अनुभव, उसकी शीतलता का अनुभव नहीं कर पाएगी। अगले हाइकु में मानव को संदेश देते हुए कहते है कि हमें ईश्वर के वरदान के रूप में यह प्रकृति मिली है। यह अद्भूत देन हमें प्राप्त हुई है। उसकी रक्षा करना ना केवल हमारा दायित्य, बल्कि हमारा धर्म भी है। डॉ. मिथिलेश अवस्थी ने अपने साहित्य में मनुश्य के स्वार्थी प्रवृत्ति को दर्शाते हुए, उसकी असभ्यता से परिचय कराया है। सभ्य संसार में असभ्यता का प्रतीक बनते मनुश्य को पुनः मार्ग दिखाने का प्रयास किया है। अपने साहित्य द्वारा साहित्यकार ने यही संदेश दिया है कि मनुश्य आज पर्यावरण का संरक्षण नहीं करेगा तो शायद भविश्य नहीं बचेगा और यदि भविश्य नहीं बचेगा तो आनेवाली पीढी हमें कभी माफ़ नहीं करेगी। इसलिए समय रहते वह जाग जाए अपना जंगली जीवन छोड़कर, सभ्य समाज में सभ्य व्यक्ति बनकर प्रकृति का संरक्षक बने। नवनिर्माण के नाम से प्रकृति का दोहन ना करे। प्रकृति को बचाने हेतु वृक्ष लगाए। वह स्वयंभू नहीं है अतः अपने आप को इस वसुंधरा का सेवक मानकर इसकी सेवा करे। उनकी लघुकथा, काव्यसंग्रह तथा हाइकु इनमें उन्होंने जीवनमूल्यों के साथ-साथ हमें पर्यावरण के प्रति, पारिस्थितिकी तंत्र के असंतुलन के प्रति कई चिंताएं साफ़ नज़र आती है। और यहीं चिंता उन्हें एक पर्यावरण प्रेमी के रूप में स्थापित करती है।

दिल्ली, - प्रथम संस्करणः 2019, पृश्ठ क.: 50-56

1.

संस्करणः 2008, पृश्ठ कः 106 मिथिलेश अवस्थी—'अवगुंजन' (हाइकु संग्रह), विश्व हिन्दी साहित्य परिशद, शालिमार बाग, 6.

संस्करणः 2008, पृश्ठ कः 23 मिथिलश अवस्थी—'इम्तहान रोज होते है' (कविता संग्रह)', आलोक प्रकाशन, नागपुर,— प्रथम 5.

अवस्थी मिथिलेश—'कहाँ है नदी माई...' (लघुकथा संग्रह), विश्व हिन्दी साहित्य परिशद, 3. शालिमार बाग, दिल्ली, - प्रथम संस्करण 2019, पृश्ठ क.: 20-21 मिथिलेश अवस्थी—'इम्तहान रोज होते है' (कविता संग्रह), आलोक प्रकाशन, नागपुर,— प्रथम 4.

शालिमार बाग, दिल्ली, - प्रथम संस्करण 2019, पृश्ठ क.: 88-89 अवस्थी मिथिलेश—'कहाँ है नदी माई...' (लघुकथा संग्रह), विश्व हिन्दी साहित्य परिशद, 2. शालिमार बाग, दिल्ली, - प्रथम संस्करण 2019, पृश्ठ क.: 43

संदर्भ सूचीः अवस्थी मिथिलेश—'कहॉ है नदी माई...' (लघुकथा संग्रह), विश्व हिन्दी साहित्य परिशद,

RAINBOW- Multidisciplinary Peer Reviewed Annual Journal Vol.-IX

